## विषय-सूची


प्रथम अध्याय

प्रारम्भिक ५-८

द्वितीय अध्याय

सन्धि प्रकरण ८-१०

अच् सन्धि ९

हल् सन्धि ११

विसर्ग सन्धि १५

णत्व, षत्व विधान १६

तृतीय अध्याय

नाम प्रकरण १७-२०

लिंग १८

वचन १९

चतुर्थ अध्याय

कारक प्रकरण २०-२३

पञ्चम अध्याय

शब्द-रूपावली २३-५२

अष्टम अध्याय

विशेषण ६७

नवम अध्याय

संख्यावाची शब्द ७५

दशम अध्याय

स्त्री-प्रत्यय ७९-८

एकादश अध्याय

अव्यय ८२-८

द्वादश अध्याय

उपसर्ग ८५-८

त्रयोदश अध्याय

समास ८६-९२

चतुर्दश अध्याय

धातु प्रकरण ९४-२१०

भ्वादिगण ९५

अदादिगण १२८

सोलहवां अध्याय
कृदन्त २१६-२२६
सतरहवां अध्याय
वाच्य २३०-२३२
सुबोध-अनुवाद पद्धति
अभ्यास २३३-२५७
पंजाब यूनिवर्सिटी की मैट्रिकुलेशन परीक्षा के प्रश्नपत्रों का अनुवाद भाग २५८-२८७
पंजाब यूनिवर्सिटी की मैट्रिकुलेशन परीक्षा के संस्कृत पेपर A २८८-३०४


---

## PUNJAB UNIVERSITY SYLLABUS
## MATRICULATION SANSKRIT PAPER A

1. Ac, hal, and Visarga-Sandhis (अच् हल् और विसर्ग सन्धि)
2. Change of 'n' into 'ṇ' and of 's' into 'ṣ' (णत्व,षत्व विधान)
3. Declension of simple bases and Sarva-nama (संज्ञाओं और सर्वनामों की रूपावली)
4. Prominent feminine affixes (स्त्री प्रत्यय)
5. Prominent uses of cases (कारकों के प्रयोग)
6. Numerals (संख्यावाची शब्द)
7. Degrees of comparison (तर, तम प्रत्यय)
8. Conjugation of the following roots in लट्, लङ्, लोट् विधिलिङ् and लृट् :—
   (a) भ्वादि भू (P.), पठ् (P.), वद् (P.), गम् (P.), वस् (P.), पच् (P.), नम् (P.), पत् (P.), रक्ष् (P.), रुद् (P.), स्था (P.), दृश् (P.), पा (P.), and जि (P.)
   सेव् (A.), लभ् (A.), वृध् (A.) वृत् (A.) मुद् (A.) ईक्ष् (A.) याच् (U.) नी (U.), and ह (U.

(b) भ्वादि—पठ् (P.), भव (P.), गम् (P.), स्था (P.), वद् (P.),
(P.), नम् (P.), पच् (P.), दृश् (P.), लिख् (P.),
(P.), and हृ (P.)
भाष् (A.), शी (A.), लभ् (A.).

(c) जुहोत्यादि—हु (P.) and भी (P.)
दा (U.), and धा (U.)

(d) दिवादि—दिव् (P.), नृत् (P.), स्वप् (P.), नश् (P.)
शम् (P.), भ्रम् (P.)
विद् (A.), युध् (A.), and जन् (A.)

(e) स्वादि—सु (U.), आप् (P.) and शक् (P.)

(f) तुदादि—तुद् (P.), इष् (P.), स्पृश् (P.), प्रच्छ् (P.),
(A.), लिप् (U.) and मुच् (U.)

(g) रुधादि—रुध् (U.), भुज् (U.) and युज् (U.)

(h) तनादि—तन् (U), कृ (U.)

(i) क्र्यादि—क्री (U.), ग्रह् (U), ज्ञा (U.) and पुष् (P.)

(j) चुरादि—चुर् (U.), चिन्त् (U.), कथ् (U.), भक्ष् (U.)

N. B.—P. stands for परस्मैपद, A. stands for आत्मनेपद, U. stands for उभयपद।

9. Prominent causal forms (णिजन्त)

10. Voices—an elementary knowledge only (वाच्य)

11. Compounds—an elementary knowledge only (समास)

12. Kṛdanta—use of only the following affixes—क्त, क्त्वा, क्तवतु, तुम्, तव्य, अनीय, यत्, शतृ, and शानच्।

# सुबोध-संस्कृत-व्याकरणम्

## प्रथम अध्याय

### प्रारम्भिक

जिस शास्त्र द्वारा शुद्ध और अशुद्ध शब्दों का विवेचन किया जा सके उसे व्याकरण कहते हैं।

शब्द वर्णों से बनते हैं और वर्ण ध्वनि के उन चिह्नों का नाम है जिनके खण्ड नहीं किये जा सकते। जैसे—अ, क्, म्।

'राम' इस शब्द में मोटे तौर से दो ध्वनियाँ कही जा सकती हैं—रा और म। परन्तु यदि इन ध्वनियों की छानबीन करें तो पता लगेगा कि 'रा' में दो ध्वनियाँ हैं—र् और आ। ऐसे ही 'म' में भी दो ध्वनियाँ हैं—म् और अ। 'र्', आ, म्, अ, के और टुकड़े नहीं हो सकते, अतः ये वर्ण हैं।

वर्ण दो प्रकार के हैं—स्वर और व्यंजन।

स्वर वर्ण वे हैं जिनके उच्चारण में किसी दूसरे वर्ण की सहायता न हो। ये तीन प्रकार के होते हैं: ह्रस्व, दीर्घ और प्लुत। [illegible] प्रत्येक [illegible] हैं। [illegible] अथवा [illegible] जाता है। [illegible] लगता है [illegible]

[illegible]

अदादि—अद् (P.), अस् (P.), स्तु (P.), ब्रू (P.), रुद् (P.), (P.), जागृ (P.), स्वप् (P.), हन् (P.), विद् (P.), (P.), and इ (P.)

आस् (A.), शी (A.), अधि+इ (A.),

(c) जुहोत्यादि—हु (P.) and भी (P.)
दा (U.), and धा (U.)

(d) दिवादि—दिव् (P.), नृत (P.), व्यध् (P.), नश् (P.), शम् (P.), भ्रम् (P.)
विद् (A.), युध् (A.), and जन् (A.)

(e) स्वादि—सु (U.), आप् (P.), and शक् (P.)

(f) तुदादि—तुद् (P.), इष् (P.), स्पृश् (P.), प्रच्छ् (P.), (A.), क्षिप् (U.) and मुच् (U.)

(g) रुधादि—रुध् (U.), भुज् (U.) and युज् (U.)

(h) तनादि—तन् (U), कृ (U.)

(i) क्र्यादि—क्री (U.), ग्रह् (U), ज्ञा (U.) and क्लिश् (P.)

(j) चुरादि—चुर् (U.), चिन्त् (U.), कथ् (U.), भक्ष् (U.)

N. B.—P. stands for परस्मैपद, A stands for आत्मनेपद, U stands for उभयपद।

9 Prominent causal form (णिजन्त)

10 Voice—an elementary knowledge only (वाच्य)

11 Compound—an elementary knowledge [illegible]

12 Krit [illegible]

[illegible]

२. दीर्घ स्वर—वे हैं जिनके उच्चारण में ह्रस्व स्वर से दुगुना समय लगे। आ, ई, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ।

३. प्लुत स्वर—वे हैं जिनके उच्चारण में ह्रस्व स्वर से तिगुना समय लगे। प्लुत स्वर लिखने के लिए स्वर के आगे प्रायः 3 का अंक लगा देते हैं। यथा—ओ३म्।

व्यंजन वर्ण वे हैं जिनके उच्चारण में स्वरों की सहायता अपेक्षित होती है।

व्यंजनों के तीन मुख्य भेद हैं—स्पर्श, अन्तस्थ तथा ऊष्म।

क् से म् तक पहले २५ वर्ण स्पर्श कहलाते हैं। य्, र्, ल्, व्, अन्तस्थ (अर्धस्वर) तथा श्, ष्, स्, ह्, ऊष्म हैं।

स्पर्श पाँच वर्गों में विभक्त हैं, प्रत्येक वर्ग का नाम पहले वर्ण के अनुसार रक्खा गया है—जैसे कवर्ग, चवर्ग, टवर्ग, तवर्ग और पवर्ग।

इस तरह कुल व्यंजन संख्या में ३३ हैं। कुल स्वर १३ हैं। क्ष, त्र, ज्ञ स्वतन्त्र वर्ण नहीं हैं, अपितु ये दो व्यंजनों के मिलाप से बने हुए संयुक्त अक्षर हैं।

किसी वर्ण के आगे 'कार' जोड़ देने से उसी वर्ण का बोध होता है, जैसे—अकार से 'अ' का, ककार से 'क्' का। परन्तु र् कहा जाता है।

## स्थान

वर्णों के उच्चारण के समय जिह्वा मुख के भीतर जिस प्रदेश को छूती है, उसे वर्ण का स्थान कहते हैं।

ये स्थान छः हैं—कण्ठ, तालु, मूर्धा, दन्त

भिन्न भिन्न वर्णों के उच्चारण स्थान निम्नलि

१ कण्ठ स्थान—अ, आ, कवर्ग, ह तथा वि

(अकुहविसर्जनीयानां कण्ठः)

२ तालु स्थान—इ, ई, चवर्ग, य् तथा श

( इचुयशानां तालु )

३ मूर्धा स्थान—ऋ, ॠ, टवर्ग, र् तथा ष का मूर्धा स्थान है।
( ऋटुरषाणां मूर्धा )

४ दन्त स्थान—लृ, तवर्ग, ल् तथा स् का दन्त स्थान है।
( लृतुलसानां दन्ताः )

५ ओष्ठ स्थान—उ, ऊ, पवर्ग तथा उपध्मानीय वर्णों का ओष्ठ स्थान है। ( उपूपध्मानीयानामोष्ठौ )

'प' 'फ' से पहले जो आधे विसर्ग होते हैं जिनका लिखने में ( ) ऐसा आकार होता है, उन्हें उपध्मानीय कहते हैं। परन्तु अब इनका प्रयोग प्रायः नहीं होता।

६ नासिका स्थान—ञ्, म्, ङ्, ण्, न् वर्णों का नासिका स्थान भी है ( ञमङणनानां नासिका च )। अतएव इन्हें अनुनासिक वर्ण भी कहा जाता है। अनुस्वार का भी नासिका ही स्थान है।

ए, ऐ का स्थान कण्ठ-तालु है। इसी प्रकार ओ, औ का स्थान कण्ठ-ओष्ठ है। व् का स्थान दन्त-ओष्ठ है।

## प्रयत्न

वर्णों के उच्चारण में जिह्वा का जो व्यापार अपेक्षित है, उसे प्रयत्न कहते हैं।

यह दो प्रकार का है—आभ्यन्तर तथा बाह्य।

आभ्यन्तर प्रयत्न—पाँच प्रकार के हैं—

१ स्पृष्ट—स्पर्श ( क् से म् तक ) वर्णों का।

२ ईषत्स्पृष्ट—अन्तःस्थ वर्णों (य्, र्, ल्, व्) का।

३ विवृत—स्वरों का।

४ ईषद्विवृत—ऊष्म ( श्, ष्, स्, ह् ) वर्णों का।

५ संवृत—ह्रस्व अकार का। परन्तु व्याकरण के प्रयोग में अन्य स्वरों के साथ अकार का भी विवृत है।

२. दीर्घ स्वर—वे हैं जिनके उच्चारण में ह्रस्व स्वर से दुगुना समय लगे। आ, ई, ऊ, ॠ, ए, ऐ, ओ, औ।

३. प्लुत स्वर—वे हैं जिनके उच्चारण में ह्रस्व स्वर से तिगुना समय लगे। प्लुत स्वर लिखने के लिए स्वर के आगे प्रायः ३ का अंक लगा देते हैं। यथा—ओ३म्।

व्यंजन वर्ण वे हैं जिनके उच्चारण में स्वरों की सहायता अपेक्षित होती है।

व्यंजनों के तीन मुख्य भेद हैं—स्पर्श, अन्तस्थ तथा ऊष्म।

क् से म् तक पहले २५ वर्ण स्पर्श कहलाते हैं। य्, र्, ल्, व्, अन्तस्थ (अर्धस्वर) तथा श्, ष्, स्, ह्, ऊष्म हैं।

स्पर्श पाँच वर्गों में विभक्त हैं, प्रत्येक वर्ग का नाम पहले वर्ण के अनुसार रक्खा गया है—जैसे कवर्ग, चवर्ग, टवर्ग, तवर्ग और पवर्ग।

इस तरह कुल व्यंजन संख्या में ३३ हैं। कुल स्वर १३ हैं। क्ष्, त्र्, ज्ञ् स्वतन्त्र वर्ण नहीं हैं, अपितु ये दो व्यंजनों के मिलाप से बने हुए संयुक्त अक्षर हैं।

किसी वर्ण के आगे 'कार' जोड़ देने से उसी वर्ण का बोध होता है, जैसे—अकार से 'अ' का, ककार से क् का। परन्तु र् को रेफ भी कहा जाता है।

## स्थान

वर्णों के उच्चारण के समय जिह्वा मुख के भीतर के कण्ठ आदि जिस प्रदेश को छूती है, उसे वर्ण का स्थान कहते हैं।

ये स्थान छः हैं—कण्ठ, तालु, मूर्धा, दन्त, ओष्ठ और नासिका।

भिन्न भिन्न वर्णों के उच्चारण-स्थान निम्नलिखित हैं—

१ कण्ठ स्थान—अ, आ, कवर्ग, ह तथा विसर्ग का कण्ठ स्थान है। (अकुहविसर्जनीयानां कण्ठः)

२ तालु स्थान—इ, ई, चवर्ग, य तथा श् का तालु स्थान है।

(इचुयशानां तालु)

३ मूर्धा स्थान—ऋ, ॠ, टवर्ग, र् तथा ष का मूर्धा स्थान है। (ऋटुरषाणां मूर्धा)

४ दन्त स्थान—लृ, तवर्ग, ल् तथा स् का दन्त स्थान है। (लृतुलसानां दन्ताः)

५ ओष्ठ स्थान—उ, ऊ, पवर्ग तथा उपध्मानीय वर्णों का ओष्ठ स्थान है। (उपूपध्मानीयानामोष्ठौ)

'प' 'फ' से पहले जो आधे विसर्ग होते हैं जिनका लिखने में (ᳵ) यह आकार होता है, उन्हें उपध्मानीय कहते हैं। परन्तु अब इनका प्रयोग प्रायः नहीं होता।

६ नासिका स्थान—ञ्, म्, ङ्, ण्, न् वर्णों का नासिका स्थान भी है (ञमङणनानां नासिका च)। अतएव इन्हें अनुनासिक वर्ण भी कहा जाता है। अनुस्वार का भी नासिका ही स्थान है।

ए, ऐ का स्थान कण्ठ-तालु है। इसी प्रकार ओ, औ का स्थान कण्ठ-ओष्ठ है। व् का स्थान दन्त-ओष्ठ है।

## प्रयत्न

वर्णों के उच्चारण में जिह्वा का जो व्यापार अपेक्षित है, उसे प्रयत्न कहते हैं।

यह दो प्रकार का है—आभ्यन्तर तथा बाह्य।

आभ्यन्तर प्रयत्न—पाँच प्रकार के हैं—

१ स्पृष्ट—स्पर्श (क् से म् तक) वर्णों का।

२ ईषत्स्पृष्ट—अन्तस्थ वर्णों (य्, र्, ल्, व्) का।

३ विवृत—स्वरों का।

४ ईषद्विवृत—ऊष्म (श्, ष्, स्, ह्) वर्णों का।

५ संवृत—ह्रस्व अकार का। परन्तु व्याकरण के प्रयोग में अन्य स्वरों के सदृश अकार का भी विवृत है।

बाह्य प्रयत्न—११ प्रकार के हैं। परन्तु मुख्य भेद दो ही हैं घोष, अघोष।

१ घोष—प्रत्येक वर्ग का तीसरा, चौथा और पाँचवाँ वर्ण, सब स्वर, य्, र्, ल्, व् और ह् घोष वर्ण हैं।

२ अघोष—वर्गों के प्रथम और द्वितीय वर्ण, श्, ष्, स् अघोष वर्ण हैं।

एक ही स्थान तथा प्रयत्न वाले वर्ण सवर्ण कहाते हैं, जैसे—अ और आ परस्पर सवर्ण हैं। इसी प्रकार इ, ई और उ, ऊ आदि को भी समझना चाहिए। परन्तु इ और उ असवर्ण हैं क्योंकि दोनों के स्थान भिन्न भिन्न हैं।

अभ्यास

१ व्याकरण का लक्षण लिखो।
२ स्वर कितने प्रकार के हैं? अनुस्वार तथा विसर्ग स्वर हैं या व्यञ्जन?
३ तालुस्थान से बोले जाने वाले कौन से वर्ण हैं?
४ आभ्यन्तर प्रयत्न कितने प्रकार के हैं? उनके नाम लिखो।

---

# द्वितीय अध्याय

## सन्धि-प्रकरण

कहीं कहीं दो वर्णों के आस-पास आने पर उनमें कुछ विकार (रूप-परिवर्तन) हो जाता है। इस विकार को सन्धि कहते हैं।

सन्धि तीन प्रकार की है—स्वर-सन्धि, व्यंजन-सन्धि और विसर्ग-सन्धि।

१ स्वर-सन्धि—स्वर के साथ स्वर के मेल को स्वर-सन्धि कहते हैं, यथा—हिम + आलय = हिमालय।

२ व्यंजन-सन्धि—व्यंजन के परे स्वर या व्यंजन के आने से व्यंजन में जो विकार होता है उसे व्यंजन-सन्धि कहते हैं; यथा—जगत्+नाथ=जगन्नाथ।

३ विसर्ग-सन्धि—विसर्ग के बाद स्वर या व्यंजन के आने पर विसर्ग में जो विकार होता है उसे विसर्ग सन्धि कहते हैं। यथा—निः+फल=निष्फल।

## स्वर ( अच् )— सन्धि

१ दीर्घ-सन्धि—यदि ह्रस्व या दीर्घ अ, इ, उ अथवा ऋ से परे इनका कोई सवर्ण स्वर हो तो दोनों के बदले सवर्ण दीर्घ स्वर हो जाता है। ( अकः सवर्णे दीर्घः ) यथा—

हिम + आलयः = हिमालयः। विद्या + अभ्यासः = विद्याभ्यासः।
रवि + इन्द्रः = रवीन्द्रः। लक्ष्मी + ईशः = लक्ष्मीशः।
गुरु + उपदेशः = गुरूपदेशः। वधू + उत्सवः = वधूत्सवः।
पितृ + ऋणम् = पितॄणम्।

२ गुणसन्धि—अ या आ के बाद इ या ई हो तो दोनों को मिलकर ए; उ या ऊ हो तो दोनों को मिलकर ओ; ऋ हो तो दोनों को मिलकर अर् हो जाता है ( आद्गुणः )। यथा—

देव + इन्द्रः = देवेन्द्रः। महा + इन्द्रः = महेन्द्रः।
हित + उपदेशः = हितोपदेशः। गंगा + उदकम् = गंगोदकम् [illegible]।
सप्त + ऋषयः = सप्तर्षयः। महा + ऋषिः = महर्षिः।

३ [illegible]

[illegible]

४ यण् सन्धि—ह्रस्व या दीर्घ इ, उ, ऋ और लृ के बाद यदि कोई असवर्ण स्वर हो तो इ, उ, ऋ और लृ के स्थान पर क्रमशः य् व् र् ल् हो जाते हैं। (इको यणचि) यथा—

यदि + अपि = यद्यपि। अपि + एवम् = अप्येवम्।
सु + आगतम् = स्वागतम्। अनु + एषणम् = अन्वेषणम्।
पितृ + आज्ञा = पित्राज्ञा। गुरु + आदेशः = गुर्वादेशः।

५ अयादिसन्धि—ए, ऐ, ओ, औ को किसी स्वर के परे होने पर क्रमशः अय्, आय्, अव्, आव् हो जाते हैं। (एचोऽयवायावः) यथा—

ने + अति = नयति। भो + अनम् = भवनम्।
नै + अकः = नायकः। पौ + अकः = पावकः।

६ पूर्वरूपसन्धि—पद के अन्त के एकार, ओकार के बाद यदि अकार आवे तो उसका लोप हो जाता है। सन्धि दिखाने के लिए लुप्त अकार के स्थान पर (ऽ) ऐसा चिह्न लगा दिया जाता है। (एङः पदान्तादति) यथा—

फले + अत्रेहि = फलेऽत्रेहि। प्रभो + अनुगृहाण = प्रभोऽनुगृहाण।

७. प्रकृतिभावसन्धि—(क) द्विवचनान्त पद के ई, ऊ, ए के बाद किसी स्वर के रहने पर परस्पर सन्धि नहीं होती। (ईदूदेद् द्विवचनं प्रगृह्यम्)

कवी + इमौ = कवी इमौ।
साधू + अत्र = साधू अत्र।
लते + इमे = लते इमे।

(ख) प्लुत स्वर की सन्धि नहीं होती। यथा—राम ३ आगच्छ
(ग) अदस् शब्द के म से परे ई, ऊ की सन्धि नहीं होती
अमी अश्वा (ये घोड़े), अमू अमकौ। (वो गायक)

८ पररूप सन्धि—कुछ शब्दों में अ के बाद ए या ओ होने पर दोनों को मिला कर क्रमशः ए, ओ हो रहता है। (एङि पररूपम्) यथा—

प्र + एजते = प्रेजते

विन्द + ओष्ठी = विम्बोष्ठी।

## हल् ( व्यञ्जन ) सन्धि

१. सकार या तवर्ग के पहले या पीछे शकार या चवर्ग हो तो स् को श् और तवर्ग को क्रमशः चवर्ग हो जाता है। ( स्तोः श्चुना श्चुः )

हरिस् + शेते = हरिश्शेते। रामस् + चिनोति = रामश्चिनोति।

सत् + चित् = सच्चित्। तद् + जयः = तज्जयः। यज् + नः = यज्ञः।

शकार से परे तवर्ग को चवर्ग नहीं होता। प्रश् + नः = प्रश्नः।

२. सकार या तवर्ग के पहले या पीछे षकार या टवर्ग हो तो सकार को षकार और तवर्ग को क्रमशः टवर्ग हो जाता है। ( ष्टुना ष्टुः )

कृष्णस् + षष्ठः = कृष्णष्षष्ठः। धनुस् + टङ्कारः = धनुष्टङ्कारः।

भवत् + टीका = भवट्टीका। इष् + तः = इष्टः।

३. तवर्ग के परे ल् हो तो तवर्ग को ल् हो जाता है। न को अनुनासिक ल् होता है। ( तोर्लि )

विद्युत् + लता = विद्युल्लता। भवान् + लिखति = भवाँल्लिखति।

४. वर्ग के पहले, दूसरे और चौथे अक्षर को पदान्त में वर्ग का तीसरा अक्षर हो जाता है। ( झलां जशोऽन्ते )

वाक् + ईशः = वागीशः। अप् + अन्तः = अजन्तः।

परिव्राट् + अयन = परिव्राडयन। जगत् + ईशः = जगदीशः।

५. वर्ग के पहले दूसरे और चौथे अक्षर को वर्ग का चौथा या तीसरा अक्षर परे होने पर वर्ग का तीसरा अक्षर हो जाता है। ( झलां जश् झशि )

क्रुध् + धः = क्रुद्धः। लभ् + धुम = लब्धुम।

६. वर्ग के चौथे तीसरे और दूसरे अक्षर को वर्ग का पहला या दूसरा अक्षर अथवा श ष स् परे होने पर वर्ग का पहला अक्षर हो जाता है। ( खरि च )

[illegible] + सु = [illegible]। अ[illegible] + ति = [illegible]। [illegible] + सु = [illegible]

७. वर्ग के प्रथम चार वर्णों के परे ह् को विकल्प से उस वर्ग का चौथा अक्षर हो जाता है।

वाक् + हरिः = वाग्घरिः (नियम ४ के अनुसार) या वाग्हरिः।

तद् + हितम् = तद्धितम् (नियम ४ के अनुसार) या तद्हितम्।

८. वर्ग के पदान्त प्रथम चार वर्णों के परे यदि श् हो और श् के बाद यदि कोई स्वर या ह, य, र, व, ल में से कोई अक्षर हो तो श् को विकल्प से छ हो जाता है। (शश्छोऽटि)

तत् + श्रुत्वा = तच्छ्रुत्वा (नियम १ से) या तच्श्रुत्वा।

९. छ् से पहले कोई ह्रस्व स्वर हो तो छ् से पहले च् लगाया जाता है, पर यदि छ् से पहले पदान्त दीर्घ स्वर हो तो छ् से पहले च् विकल्प से लगता है।

वृक्ष + छाया = वृक्षच्छाया।

लक्ष्मी + छाया = लक्ष्मीच्छाया या लक्ष्मीछाया।

१०. पदान्त वर्ग्य अक्षर (क से म तक) तथा य, व, ल, को अनुनासिक अक्षर परे होने पर विकल्प से सवर्ण अनुनासिक अक्षर होता है। (यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा)।

दिक् + नागः = दिग् नागः या दिङ् नागः।

षट् + मासाः = षड्मासाः या षण्मासाः।

जगत् + नाथ = जगद्नाथ या जगन्नाथ।

परन्तु प्रत्यय का अनुनासिक अक्षर परे होने पर [illegible] नासिक हो जाता है।

[illegible] = [illegible]

[illegible] = वाङ्मयम्।

अप् [illegible] = [illegible]

११. पदान्त [illegible]

जाता है। (मोऽनुस्वारः) [illegible]

परन्तु सम्राट् और साम्राज्य में म् को अनुस्वार नहीं होता।

१२. अपदान्त न् और म् को वर्गों के चौथे, तीसरे, दूसरे, और पहले अक्षर या श् , ष् , स् , ह परे होने पर अनुस्वार हो जाता है।

यशान् + सि = यशांसि।

आक्रम् + स्यते = आक्रंस्यते।

१३. अपदान्त अनुस्वार से परे यदि किसी वर्ग का कोई अक्षर अथवा य् , ल् , व् , में से कोई अक्षर हो तो अनुस्वार को उस अक्षर का सवर्ण अनुनासिक हो जाता है। यदि अनुस्वार पदान्त हो तो अनुनासिक विकल्प से होता है। ( अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः )

( अपदान्त ) अन् + कितः = अं + कितः = अङ्कितः।

कुन् + ठितः = कुं + ठितः = कुण्ठितः।

शाम् + तः = शां + तः = शान्तः।

(पदान्त) त्वम् + करोषि = त्वं + करोषि = त्वङ्करोषि या त्वं करोषि।

पूर्वम् + तावन् = पूर्वं + तावन् = पूर्वन्तावन् या पूर्वं तावन्।

फलम् + चिनोति = फलं + चिनोति = फलञ्चिनोति या फलं चिनोति।

१४. यदि पदान्त न से परे च् , छ् , ट् , ठ् , त और थ् में से कोई अक्षर हो और उनके बाद यदि कोई स्वर, ह् , य् , व् , र् , ल, या किसी वर्ग का पाँचवाँ अक्षर हो तो न को अनुस्वार और स् हो जाता है। (नश्छव्य प्रशान्)

कस्मिन् + चित् = कस्मिं + चित् = कस्मिंश्चित्।

अस्मिन् + तडागे = अस्मिंस्तडागे।

१५. पदान्त ङ् , ण् , न् के पहले यदि ह्रस्व स्वर हो और परे भी कोई स्वर हो तो ङ् , ण् , न् को द्वित्व हो जाता है।

प्रत्यङ् + आत्मा = प्रत्यङ्ङात्मा

सुगण् + ईशः = सुगण्णीशः

एकस्मिन् + अहनि = एकस्मिन्नहनि

१६. पदान्त स् को रु ( र् ) हो जाता है।

रात्रिस् + गमिष्यति = रात्रिर्गमिष्यति।

१७. पदान्त र् से परे यदि वर्गों के पहले, दूसरे अक्षर या श्, ष्, स् में से कोई अक्षर हो अथवा कुछ भी न हो तो र् को विसर्ग हो जाता है।

रामस् + कथयति = रामर् + कथयति = रामः कथयति।

हरिस् = हरिर् = हरिः।

१८. र् से परे यदि र् हो तो पूर्व र् का लोप हो जाता है और उससे पूर्व यदि अ, इ या उ में से कोई स्वर हो तो वह दीर्घ हो जाता है।

निर् + रसम् = नीरसम्। निर् + रोगः = नीरोगः।

१९. पदान्त रु ( र् ) से पूर्व यदि ह्रस्व अकार हो और पीछे ह्रस्व अकार, ह्, य्, र्, ल्, अथवा वर्गों के तीसरे, चौथे और पाँचवें अक्षरों में से कोई अक्षर हो तो रु ( र् ) को उ हो जाता है।

नरस् + याति = नरर् + याति = नर उ + याति = नरो याति।

मनस् + रथः = मनर् + रथः = मन उ + रथः = मनोरथः।

२०. पदान्त रु ( र् ) से पहले यदि ह्रस्व अ हो और पीछे ह्रस्व अ को छोड़ कर कोई और स्वर हो, या रु ( र् ) से पहले आ हो और पीछे कोई स्वर ह्, य्, व्, र्, ल् या वर्गों के तीसरे, चौथे और पाँचवें अक्षरों में से कोई अक्षर हो तो रु ( र् ) के स्थान पर य् होता है और इस य् का लोप हो जाता है।

दमनकस् + आह = दमनकर् + आह = दमनकय् + आह
= दमनक आह।

देवास् + इह = देवार् + इह = देवाय् + इह = देवा इह।

इस नियम से य का लोप होने के बाद फिर सन्धि नहीं होती, इसलिए 'दमनक आह' में अ और आ के पहले नियम के अनुसार दीर्घ सन्धि होकर 'दमनकाह' नहीं हुआ।

## विसर्ग-सन्धि

(१) चवर्ग, टवर्ग और तवर्ग के पहले या दूसरे अक्षर के परे होने पर विसर्ग को स् हो जाता है। ( विसर्जनीयस्य सः )

विष्णुः + त्राता = विष्णुस्त्राता।

[ पूरी प्रक्रिया इस प्रकार होगी—विष्णुस् + त्राता = विष्णुर् + त्राता ( व्यञ्जन सन्धि के नियम १६ के अनुसार ) = विष्णुः + त्राता [ व्यञ्जन सन्धि के नियम १७ के अनुसार ] = विष्णुस्त्राता।

( २ ) श्, ष्, स् परे होने पर विसर्ग को श्, ष्, स् विकल्प से होते हैं। हरिः + शेते = हरिः शेते या हरिश्शेते। मनस् + षष्ठम् = मनः षष्ठम् या मनष्षष्ठम्।

(३) प्रत्यय-सम्बन्धी विसर्ग से भिन्न विसर्ग से पूर्व यदि ह्रस्व इ या उ हो और परे यदि कवर्ग या पवर्ग हो तो विसर्ग को ष् हो जाता है।

आविः + कृतम् = आविष्कृतम्।

(४) विसर्ग से पूर्व यदि अ हो और परे अ या वर्गों के तीसरे, चौथे और पाँचवें वर्ण तथा य, व, र, ल, ह हो तो विसर्ग को उ हो जाता है। ( ससजुषो रुः—अतो रोरप्लुतादप्लुते—हशि च ) यथा—

नृपः + अवदत् = नृपोऽवदत्।

बालः + गच्छति = बालो गच्छति।

मृगः + धावति = मृगो धावति।

रामः + वदति = रामो वदति।

(५) सः और एषः के विसर्ग का लोप हो जाता है, यदि परे अ से भिन्न कोई वर्ण हो। ( एतत्तदोः सुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि ) यथा—

सः + देवः = स देवः।

एषः + छात्रः = एष छात्रः।

सः + हरिः = स हरिः।

(६) विसर्ग से पूर्व यदि अ हो और पर अ भिन्न कोई स्वर हो तो विसर्ग का लोप हो जाता है। (भो भगो अघो अपूर्वस्य योऽशि) यथा—

कः + इच्छति = क इच्छति।
नृपः + उवाच = नृप उवाच।
अतः + एव = अत एव।

(७) र् से र् परे होने पर पूर्व र् का लोप हो जाता है और लुप्त से पूर्व ह्रस्व स्वर दीर्घ हो जाता है। ( रोरि—ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः) यथा—

निर् + रोगः = नीरोगः।
पुनर् + रमते = पुना रमते

### णत्व-षत्व विधान

१. णत्वविधान—न के पहले यदि एक ही पद में ऋ, ऋ, ष हो तो न् को ण् हो जाता है। स्वर, कवर्ग, पवर्ग ह्, य्, अनुस्वार के बीच में रहते हुए भी न को ण् हो जाता है

तिसृणाम्, विस्तीर्णः, पूष्णः, रामेण।

परन्तु पदान्त न् को ण नहीं होता।

रामान्, पितॄन्।

२. षत्वविधान—स् से पूर्व यदि अ, आ कवर्ग या ह, य, व, र्, ल् में से कोई ए जाता है। अनुस्वार, विसर्ग अथवा श् ष भी स् को ष् हो जाता है।

हरिषु, भानुषु, कर्तृषु नरेषु गोषु हविःषु, हवींषि।

अभ्यास

• नीचे लिखे शब्दों ... उनके ... करें

२. यण्सन्धि तथा पूर्वरूपसंधि के लक्षण उदाहरण-सहित स्पष्ट करो।

३. इन में सन्धि करो तथा नियम भी समझाओ—

विद्या + अर्थी, नर + इन्द्रः तथा + एव, नदी + उदकम्, गौ + अपि, सर्वे + अपि, भानु + उदयतः, कपी + एतौ उत् + चारणम्, तत् + टीका उत् + लङ्घनम्, सत् + आचारः, उत् + शरणम्, वाक् + माधुर्यम् यद्दन् + गच्छ, मन् + हननम्, परयन् + आगच्छ, हृत् + शोकः, गच्छ — छत्रम् निस् + चयः, यज् + नः । एकः + चन्द्रः, बालः + अयम्, नरः + आयाति, जनाः + म्रियन्ते, निर् + रवम् । तृषा + नाम, पुष् — नाति षट्‌ + तु ।

४. सन्धिच्छेद करो—

गुरूपकारः, राजर्षिः, नवौदार्यम्, मध्वानय.गायकः, कोऽपि.सच्चिदानन्दः उष्णाद्ः, दिग्भ्रान्तिः, दिग्दर्शी, तन्मयम्, मातरं वन्दे, धावन्नौ उल्लुघातः, दुश्चरितम्, शिवो वन्द्यः, मम इदम्, नृपा ददति, शिशुर्नि निरयङ्कम्, मानू राजते, निष्कलङ्कः।

५. शुद्ध करो—गिरिशः, पश्चकाराय, अर्थेव, उपरोक्त, अप्येतौ, सन्ना सन्तुलन्, मनोकामना, लताप्रु, सन्मानम्, फ्लेश, बहिष्कृतिः निरोगः, दुन्द्व सन्मानम्, बधिरोऽभवार्थः।

---

# तृतीय अध्याय

## नाम प्रकरण

शब्दों को मुख्यतया तीन भागों में बाँटा जा सकता है—१ नाम सुबन्त २ क्रिया या तिङन्त ३ अव्यय

नाम में संज्ञा ( Noun ) सर्वनाम ( Pronoun ) और विशे ( Adjective ) सम्मिलित हैं।

प्रयुक्त हुआ है या दो के लिए अथवा दो से भी अधिक के लिए उसे वचन कहते हैं।

संस्कृत भाषा में तीन वचन हैं। अंग्रेजी या हिन्दी में द्विवचन का प्रयोग नहीं होता, परन्तु संस्कृत में होता है:—

| संस्कृत | अंग्रेजी |
| --- | --- |
| १. एकवचन | ···Singular Number |
| २. द्विवचन | ···Dual Number |
| ३. बहुवचन | ···Plural Number |

एक व्यक्ति, वस्तु, स्थान आदि के बोध के लिए एकवचन प्रयुक्त होता है। यथा नरः, लता, कलम्, पुस्तकम्, देशः इत्यादि।

दो व्यक्तियों, वस्तुओं, स्थानों आदि के बोध के लिए द्विवचन प्रयुक्त होता है। यथा—नरौ, धनुषी, ग्रामौ, पुस्तके, देशौ इत्यादि।

दो से अधिक व्यक्तियों, वस्तुओं, स्थानों आदि के बोध के लिए बहुवचन प्रयुक्त होता है। यथा—नरे, फलानि, वनम्, पुस्तकानि, देशाः इत्यादि।

संस्कृत में कई शब्द नित्य द्विवचनान्त प्रयुक्त होते हैं। उनका प्रयोग अन्य वचनों में नहीं किया जाता। ऐसे कुछ शब्द नीचे दिये जाते हैं—

दम्पति (दम्पती) = पति पत्नी।
अश्विन (अश्विनौ = ) दो अश्विनीकुमार
द्वि (द्वौ) = दो

इसी प्रकार कुछ शब्द नित्य बहुवचनान्त प्रयुक्त होते हैं। ऐसे कुछ शब्द नीचे दिये जाते हैं—

दार (दाराः) = पत्नी     अप (आपः) = जल।
प्राण (प्राणाः) = प्राण     सुमनस् (सुमनसः) = फूल
वर्षा (वर्षाः) = [illegible]     अक्षत (अक्षताः) = [illegible]।

इसी प्रकार त्रि, चतुर, पञ्चन्, षष्, इत्यादि बहुसंख्यावाची श भी बहुवचनान्त ही रहते हैं। एक शब्द 'एक' (One) के अर्थ एकवचनान्त रहता है, परन्तु 'कई' (Some) के अर्थ में बहुवचन प्रयुक्त होता है, यथा 'एके वदन्ति' इत्यादि।

---

# चतुर्थ अध्याय

## कारक-प्रकरण (CASES)

क्रिया की सिद्धि के लिए जो निमित्त बनते हैं, उन्हें कारक कहते अथवा क्रिया के उत्पन्न करने वाले को कारक कहा जाता है।

कारक छः हैं। वैयाकरण लोग सम्बन्ध को कारक नहीं मा क्योंकि सम्बन्ध का क्रिया पर कोई प्रभाव नहीं होता, परन्तु उससे केव नाम शब्दों का सम्बन्धमात्र प्रकट होता है। इन कारकों को सूचित क के लिए संस्कृत में भिन्न भिन्न विभक्तियाँ होती हैं। विभक्तियाँ स हैं। कारकों और विभक्तियों का विवरण आगे दिया जाता है—

| कारक | विभक्ति |
|---|---|
| १. कर्ता | प्रथमा (Nom nat ve) |
| २. कर्म | द्वितीया (Acc at ve) |
| ३. करण | तृतीया (In rt mental) |
| ४. सम्प्रदान | चतुर्थी (Dat ve) |
| ५. अपादान | पञ्चमी (Ablat ve) |
| ६. सम्बन्ध | षष्ठी (Gen ve) |
| ७. अधिकरण | सप्तमी (L at ve) |

१ कर्ता—क्रिया के करने वाले को कर्ता कहते … कर्ता में (…
… वाक्य में … प्रथमा … होता … यथा—

जनः गच्छति = जन जाता है।

मृगाः धावन्ति = हरिण दौड़ते हैं।

बालः रोदिति = बालक रोता है।

२. कर्म—कर्ता की चेष्टा का जो विषय होता है, वह कर्म कहलाता है; अर्थात् जो कुछ किया जाता है, देखा जाता है, लाया जाता है, कहा जाता है, दिया जाता है, उसे कर्म कहते हैं। कर्म कारक में (कर्तृवाच्य में) द्वितीया विभक्ति का प्रयोग होता है। यथा—

पुस्तकं पठति = पुस्तक (को) पढ़ता है।

पत्रं लिखति = पत्र (को) लिखता है।

चन्द्रं पश्यति = चन्द्रमा को देखता है।

३. करण—जिस साधन के द्वारा कर्ता क्रिया की सिद्धि करता है, उसे करण कहते हैं। करण में तृतीया विभक्ति का प्रयोग होता है। यथा—

चक्षुषा पश्यति = आँख से देखता है।

दण्डेन ताडयति = डंडे से मारता है।

हस्तेन गृह्णाति = हाथ से पकड़ता है।

४. सम्प्रदान—जिसे कुछ दिया जाय या जिसके लिए कुछ किया जाय उसे सम्प्रदान कहते हैं। सम्प्रदान में चतुर्थी विभक्ति का प्रयोग होता है। यथा—

गजाय फलं ददाति = गज को फल देता है।

धनं सुखाय भवति = धन सुख के लिए होता है।

[illegible]

[illegible]

वृक्षात् फलं पतति = वृक्ष से फल गिरता है।
सिंहात् बिभेति = शेर से डरता है।
पापात् जुगुप्सते = पाप से घृणा करता है।
श्वशुरात् लज्जते = श्वशुर से लज्जा करती है।
दुग्धात् घृतं भवति = दूध से घी होता है।
गुरोः विद्यां पठति = गुरु से विद्या पढ़ता है।

६. षष्ठी—दो नाम शब्दों का परस्पर सम्बन्ध प्रकट करने के लि षष्ठी विभक्ति का प्रयोग होता है। यथा—

रामस्य गृहम् = राम का घर।
मम पुस्तकम् = मेरी पुस्तक।
कूपस्य जलम् = कुएँ का पानी।

७. अधिकरण—क्रिया के आधार को अधिकरण कहते हैं। इ अर्थ में सप्तमी विभक्ति का प्रयोग होता है। यथा—

वने सिंहः गर्जति = वन में शेर गर्जता है।
वृक्षे खगाः वसन्ति = वृक्ष पर पक्षी रहते हैं।

## अभ्यास

मोटे टाइप में छपे हुए पदों के कारक समझाते हुए निम्नलिखित श्लो का सरल हिन्दी में अर्थ करो

(क) धर्मः सर्वसुखाकरो हितकरो धर्मं बुधाः चिन्वते।
धर्मेणैव समाप्यते शिवसुखं, धर्माय तस्मै नमः।
धर्मान्नास्त्यपरः सुहृद् भवभृतां धर्मो हि दृष्टं मता,
धर्मे चित्तमहं दधे प्रतिदिनं हे धर्म! मां पालय॥

(ख) सत्यं वेदेषु जागर्ति, फलं सत्ये प्रतिष्ठितम्।
सत्यात् धर्मो दमश्चैव, सर्वं सत्ये प्रतिष्ठितम्

(ग) यस्मिन् प्रयाति [illegible]

काकोऽपि किं न कुरुते, चञ्च्वा स्वोदरपूरणम् ॥

(घ) चलं वित्तं चलं चित्तं चले जीवितयौवने।
चलाचलमिदं सर्वं, कीर्तिर्यस्य स जीवति ॥

(ङ) आत्मार्थं जीवलोकेऽस्मिन् , को न जीवति मानवः
परं परोपकारार्थं यो जीवति स जीवति ॥

---

# पञ्चम अध्याय

## शब्द-रूपावली

संस्कृत में प्रयुक्त होने वाले नाम शब्द दो भागों में विभक्त किये जा सकते हैं—अजन्त ( स्वरान्त ) तथा हलन्त ( व्यञ्जनान्त )। भिन्न भिन्न विभक्तियों और वचनों में इनके रूप-परिवर्तन होते समय निम्नलिखित विभक्ति-प्रत्यय इनके साथ लगते हैं।

| | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
|---|---|---|---|
| प्रथमा और सम्बोधन | सु | औ | जस् |
| द्वितीया | अम् | औट् | शस् |
| तृतीया | टा | भ्याम् | भिस् |
| चतुर्थी | ङे | भ्याम् | भ्यस् |
| पञ्चमी | ङसि | भ्याम् | भ्यस् |
| षष्ठी | ङस् | ओस् | आम् |
| सप्तमी | ङि | ओस् | सुप् |

ये विभक्तियाँ 'सु' से शुरू होती हैं और 'प्' पर समाप्त होती हैं। इस लिए इनके आदि और अन्त के अक्षर लेकर इन्हें 'सुप्' कहते हैं। इस प्रकार क्रिया में जो प्रत्यय लगते हैं उन्हें तिङ् कहते हैं। इनका वर्णन आगे आएगा। सुप् और तिङ् प्रत्यय जिस शब्द के

नोट—भूपति (राजा), नृपति (राजा) आदि शब्दों के रूप पति शब्द की तरह नहीं होते, अपितु मुनि शब्द की तरह होते हैं।

ईकारान्त पुँल्लिङ्ग सुधी ( बुद्धिमान ) शब्द

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्रथमा | सुधीः | सुधियौ | सुधियः |
| द्वितीया | सुधियम् | सुधियौ | सुधियः |
| तृतीया | सुधिया | सुधीभ्याम् | सुधीभिः |
| चतुर्थी | सुधिये | ,, | सुधीभ्यः |
| पञ्चमी | सुधियः | ,, | सुधीभ्यः |
| षष्ठी | सुधियः | सुधियोः | सुधियाम् |
| सप्तमी | सुधियि | ,, | सुधिषु |
| सम्बोधन | हे सुधीः | हे सुधियौ | हे सुधियः |

उकारान्त पुँल्लिङ्ग साधु ( सज्जन ) शब्द

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्रथमा | साधुः | साधू | साधवः |
| द्वितीया | साधुम् | ,, | साधून् |
| तृतीया | साधुना | साधुभ्याम् | साधुभिः |
| चतुर्थी | साधवे | ,, | साधुभ्यः |
| पञ्चमी | साधोः | ,, | साधुभ्यः |
| षष्ठी | साधोः | साध्वोः | साधूनाम् |
| सप्तमी | साधौ | ,, | साधुषु |
| सम्बोधन | हे साधो | हे साधू | हे साधवः |

साधु शब्द के [illegible] की तरह निम्नलिखित उकारान्त पुँल्लिङ्ग शब्दों के [illegible]

[illegible]

वक्तृ = बोलने वाला   श्रोतृ = सुनने वाला   गन्तृ = जाने वाला
होतृ = हवन करनेवाला   सवितृ = सूर्य   जनयितृ = पैदा करने वाला

ऐकारान्त पुँल्लिङ्ग रै ( धन ) शब्द

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्रथमा | राः | रायौ | रायः |
| द्वितीया | रायम् | " | " |
| तृतीया | राया | राभ्याम् | राभिः |
| चतुर्थी | राये | " | राभ्यः |
| पंचमी | रायः | राभ्याम् | राभ्यः |
| षष्ठी | " | रायोः | रायाम् |
| सप्तमी | रायि | " | रासु |
| सम्बोधन | हे राः | हे रायौ | हे रायः |

ओकारान्त पुँल्लिङ्ग गो ( बैल ) शब्द

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्रथमा | गौः | गावौ | गावः |
| द्वितीया | गाम् | " | गाः |
| तृतीया | गवा | गोभ्याम् | गोभिः |
| चतुर्थी | गवे | " | गोभ्यः |
| पञ्चमी | गोः | " | " |
| षष्ठी | गोः | गवोः | गवाम् |
| सप्तमी | गवि | " | गोषु |
| सम्बोधन | हे गौः | हे गावौ | हे गावः |

औकारान्त पुँल्लिङ्ग ग्लौ ( चन्द्रमा ) शब्द

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्रथमा | ग्लौः | ग्लावौ | ग्लावः |
| द्वितीया | ग्लावम् | " | ग्लावः |
| तृतीया | ग्लावा | ग्लौभ्याम् | ग्लौभिः |
| चतुर्थी | ग्लावे | | ग्लौभ्यः |
| पञ्चमी | ग्लावः | | |

| | | | |
|---|---|---|---|
| षष्ठी | ग्लावः | ग्लावोः | ग्लावाम् |
| सप्तमी | ग्लावि | .. | ग्लौषु |
| सम्बोधन | हे ग्लौः | हे ग्लावौ | हे ग्लावः |

## अभ्यास

१. राज शब्द के सब विभक्तियों और वचनों में रूप लिखो।

२. ग्राम शब्द के तृतीया एकवचन और षष्ठी बहुवचन में रूप लिखो।

३. मुनि, साधु, पितृ, गो शब्दों के द्वितीया बहुवचन, तृतीया एकवचन तथा षष्ठी द्विवचन में रूप लिखो।

४ हरि, सखि, नृपति भानु, भ्रातृ और दातृ शब्दों के सब विभक्तियों और वचनों में रूप लिखो।

५. निम्नलिखित रूप किस शब्द के किस विभक्ति के किस वचन में है?

ग्रामेषु, यमम्नौ, मर्येषा हरिणा, उदधेः, कवीनाम्, पित्रे, पितो, भूपतये, पतिषु, शिशवे, पशून्, भोत्रु मतितः।

६. निम्नलिखित के शुद्ध रूप लिखो।

नदी, पितरौ, हे प्रभुः, साधुयाम्, भूपत्या, पतिना, मुष्णा।

---

## अजन्त स्त्रीलिंग

### आकारान्त स्त्रीलिङ्ग लता (बेल) शब्द

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्रथमा | लता | लते | लता |
| द्वितीया | लताम् | | |
| तृतीया | लतया | लताभ्याम् | लताभिः |
| चतुर्थी | लतायै | | लताभ्यः |
| सप्तमी | लतायाम् | | |
| षष्ठी | | लतयोः | लतानाम् |

नीचे लिखे इकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों के रूप 'मति' के होते हैं—

| | | |
|---|---|---|
| श्रुति = वेद | रीति = तरीका | स्मृति = शास्त्र |
| कीर्ति = यश | मुक्ति = मोक्ष | विभूति = ऐश्वर्य |
| स्तुति = प्रशंसा | सम्पत्ति = ऐश्वर्य | सृष्टि = संसार |
| विपत्ति = दुःख | नीति = नीति | प्रीति = प्रेम |
| भूति = ऐश्वर्य | गति = चाल | रात्रि = रात |
| प्रकृति = स्वभाव | भक्ति = भक्ति | बुद्धि = बुद्धि |
| भूमि = पृथिवी | भित्ति = दीवार | विभक्ति = विभक्ति |

ईकारान्त स्त्रीलिंग नदी ( नदी ) शब्द

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्रथमा | नदी | नद्यौ | नद्यः |
| द्वितीया | नदीम् | . | नदीः |
| तृतीया | नद्या | नदीभ्याम् | नदीभिः |
| चतुर्थी | नद्यै | | नदीभ्यः |
| पञ्चमी | नद्याः | | " |
| षष्ठी | " | नद्योः | नदीनाम् |
| सप्तमी | नद्याम् | नद्योः | नदीषु |
| सम्बोधन | हे नदि | हे नद्यौ | हे नद्यः |

प्रायः ईकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों के रूप नदी की तरह होते हैं। कुछ शब्द निम्नलिखित हैं—

| | | |
|---|---|---|
| जननी = माता | नलिनी = कमलिनी | पुरी = नगरी |
| महिषी = रानी | नारी = स्त्री | पुत्री = कन्या |
| मही = पृथिवी | राज्ञी = रानी | सखी = सहेली |
| विदुषी = विदुषी | पत्नी = स्त्री | कौमुदी = चन्द्रिका |
| दासी = दासी | पृथ्वी = जमीन | रजनी = रात |
| विभावरी = रात | कुमारी = कुमारी | [illegible] = [illegible] |

देवी = देवी  भगिनी = बहन  शोधनी = झाड़ू

लक्ष्मी, तरी ( नौका ), तन्त्री ( वीणा आदि को तार ) आदि शब्दों के प्रथमा एकवचन में लक्ष्मीः, तरीः, तन्त्रीः आदि रूप होते हैं; शेष सब रूप नदी की तरह होते हैं।

ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग धी ( बुद्धि ) शब्द

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्रथमा | धीः | धियौ | धियः |
| द्वितीया | धियम् | धियौ | धियः |
| तृतीया | धिया | धीभ्याम् | धीभिः |
| चतुर्थी | धियै, धिये | ,, | धीभ्यः |
| पञ्चमी | धियाः, धियः | ,, | ,, |
| षष्ठी | ,, ,, | धियोः | धियाम् |
| सप्तमी | धियाम्, धियि | ,, | धीषु |
| सम्बोधन | हे धीः | हे धियौ | हे धियः |

श्री ( लक्ष्मी ), भी ( डर ), ह्री ( लज्जा ) आदि शब्दों के रूप धी के समान होते हैं।

ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग स्त्री ( स्त्री ) शब्द

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्रथमा | स्त्री | स्त्रियौ | स्त्रियः |
| द्वितीया | स्त्रियम्, स्त्रीम् | ,, | स्त्रियः, स्त्रीः |
| तृतीया | स्त्रिया | स्त्रीभ्याम् | स्त्रीभिः |
| चतुर्थी | स्त्रियै | ,, | स्त्रीभ्यः |
| पञ्चमी | स्त्रियाः | ,, | ,, |
| षष्ठी | ,, | स्त्रियोः | स्त्रीणाम् |
| सप्तमी | स्त्रियाम् | ,, | स्त्रीषु |
| सम्बोधन | हे स्त्रि | हे स्त्रियौ | हे स्त्रियः |

उकारान्त स्त्रीलिंग धेनु ( गौ ) शब्द

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्रथमा | धेनुः | धेनू | धेनवः |

| | | | |
|---|---|---|---|
| द्वितीया | धेनुम् | धेनू | धेनूः |
| तृतीया | धेन्वा | धेनुभ्याम् | धेनुभिः |
| चतुर्थी | धेन्वै, धेनवे | " | धेनुभ्यः |
| पञ्चमी | धेन्वाः, धेनोः | " | " |
| षष्ठी | " " | धेन्वोः | धेनूनाम् |
| सप्तमी | धेन्वाम्, धेनौ | " | धेनुषु |
| सम्बोधन | हे धेनो | हे धेनू | हे धेनवः |

इसी प्रकार रज्जु ( रस्सी ), तनु ( शरीर ), हनु ( ठोढ़ी ) उकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों के रूप होते हैं।

ऊकारान्त स्त्रीलिंग वधू ( बहू ) शब्द

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्रथमा | वधूः | वध्वौ | वध्वः |
| द्वितीया | वधूम् | " | वधूः |
| तृतीया | वध्वा | वधूभ्याम् | वधूभिः |
| चतुर्थी | वध्वै | " | वधूभ्यः |
| पञ्चमी | वध्वाः | " | " |
| षष्ठी | वध्वाः | वध्वोः | वधूनाम् |
| सप्तमी | वध्वाम् | वध्वोः | वधूषु |
| सम्बोधन | हे वधु | हे वध्वौ | हे वध्वः |

इसी प्रकार चमू ( सेना ) आदि शब्दों के रूप होते हैं।

ऊकारान्त स्त्रीलिंग भू ( पृथिवी ) शब्द

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्रथमा | भूः | भुवौ | भुवः |
| द्वितीया | भुवम् | भुवौ | भुवः |
| तृतीया | भुवा | भूभ्याम् | भूभिः |
| चतुर्थी | भुवै भुवे | भूभ्याम् | भूभ्यः |
| पञ्चमी | भुवाः भुवः | भूभ्याम् | भूभ्यः |
| षष्ठी | भुवाः भुवः | भुवोः | भुवाम् भूनाम् |

| सप्तमी | भुवाम्, भुवि | भुवोः | भूषु |
|---|---|---|---|
| सम्बोधन | हे भूः | हे भुवौ | हे भुवः |

इसी प्रकार भ्रू (भौंह), सुभ्रू (सुन्दर भौंह वाली) आदि शब्दों के रूप भी होते हैं।

ऋकारान्त स्त्रीलिंग मातृ (माता) शब्द

| प्रथमा | माता | मातरौ | मातरः |
|---|---|---|---|
| द्वितीया | मातरम् | ,, | मातृः |

शेष पितृ शब्द के समान (देखो पृष्ठ २८)

दुहितृ (लड़की) शब्द के रूप भी मातृ के समान होते हैं।

ऋकारान्त स्त्रीलिंग स्वसृ (बहन) शब्द

| प्रथमा | स्वसा | स्वसारौ | स्वसारः |
|---|---|---|---|
| द्वितीया | स्वसारम् | ,, | स्वसृः |

शेष मातृ शब्द के समान।

ओकारान्त स्त्रीलिङ्ग द्यो (आकाश) शब्द

| प्रथमा | द्यौः | द्यावौ | द्यावः |
|---|---|---|---|

शेष गो शब्द के समान (देखो पृष्ठ २९)।

औकारान्त स्त्रीलिंग नौ (नौका) शब्द

| प्रथमा | नौः | नावौ | नावः |
|---|---|---|---|

शेष 'ग्लौ' शब्द के समान (देखो पृष्ठ २९)।

अभ्यास

१. निम्नलिखित शब्दों के सब विभक्तियों और वचनों में रूप लिखो—
रमा, मति, नारी, स्त्री, श्री, धेनु, वधू, भ्रू, दुहितृ।

२. रूप लिखो—
(क) रमा शब्द का षष्ठी बहुवचन में।
(ख) बुद्धि शब्द का सप्तमी एकवचन में

स्थान = स्थान  आभरण = ज़ेवर  बल = शक्ति

हृदय, उदक, मांस आदि शब्दों के दो-दो रूप होते हैं। एक ल की भाँति और दूसरा उससे भिन्न।

इकारान्त नपुंसकलिंग वारि ( पानी ) शब्द

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्रथमा | वारि | वारिणी | वारीणि |
| द्वितीया | ,, | ,, | ,, |
| तृतीया | वारिणा | वारिभ्याम् | वारिभिः |
| चतुर्थी | वारिणे | ,, | वारिभ्यः |
| पञ्चमी | वारिणः | ,, | ,, |
| षष्ठी | ,, | वारिणोः | वारीणाम् |
| सप्तमी | वारिणि | ,, | वारिषु |
| सम्बोधन | हे वारे, वारि | हे वारिणी | हे वारीणि |

इकारान्त नपुंसकलिंग शब्दों के रूप प्रायः इसी तरह होते हैं।

इकारान्त नपुंसकलिंग दधि ( दही ) शब्द

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्रथमा | दधि | दधिनी | दधीनि |
| द्वितीया | ,, | ,, | ,, |
| तृतीया | दध्ना | दधिभ्याम् | दधिभिः |
| चतुर्थी | दध्ने | ,, | दधिभ्यः |
| पञ्चमी | दध्नः | ,, | ,, |
| षष्ठी | दध्नः | दध्नोः | दध्नाम् |
| सप्तमी | दध्नि दधनि | ,, | दधिषु |
| सम्बोधन | हे दधे हे दधि | हे दधिनी | हे दधीनि |

अस्थि ( हड्डी ) सक्थि ( जाँघ ) और अक्षि (आँख) शब्दों के रूप इसी भाँति होते हैं।

उकारान्त नपुंसकलिंग मधु ( शहद ) शब्द

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्रथमा | मधु | मधुनी | मधूनि |

( ३ ) निम्नलिखित रूपों को शुद्ध करो।
फलान्, वारये, मधूभ्याम्, कर्तृनाम्

## हलन्त पुँल्लिंग

### जकारान्त पुँल्लिङ्ग भिषज् ( वैद्य ) शब्द

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्रथमा, सं० | भिषक्, भिषग् | भिषजौ | भिषजः |
| द्वितीया | भिषजम् | ,, | ,, |
| तृतीया | भिषजा | भिषग्भ्याम् | भिषग्भिः |
| चतुर्थी | भिषजे | भिषग्भ्याम् | भिषग्भ्यः |
| पञ्चमी | भिषजः | ,, | ,, |
| षष्ठी | ,, | भिषजोः | भिषजाम् |
| सप्तमी | भिषजि | ,, | भिषक्षु |

### चकारान्त पुँल्लिङ्ग पयोमुच् ( बादल ) शब्द

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र०, सं० | पयोमुक्-ग् | पयोमुचौ | पयोमुचः |
| द्वितीया | पयोमुचम् | पयोमुचौ | पयोमुचः |
| तृतीया | पयोमुचा | पयोमुग्भ्याम् | पयोमुग्भिः |

शेष भिषज् की तरह।

इसी प्रकार वणिज् (बनिया), ऋत्विज् (यज्ञ करने वाला), जलमुच (बादल) आदि शब्दों के रूप होते हैं।

### तकारान्त पुँल्लिङ्ग मरुत् ( वायु ) शब्द

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र०, सं० | मरुत्-द् | मरुतौ | मरुतः |
| द्वितीया | मरुतम् | ,, | ,, |
| तृतीया | मरुता | मरुद्भ्याम् | मरुद्भिः |
| चतुर्थी | मरुते | मरुद्भ्याम् | मरुद्भ्यः |
| पञ्चमी | मरुतः | ,, | ,, |

| | | | |
|---|---|---|---|
| सं० | हे महन् | हे महान्तौ | हे महान्तः |

शेष धीमत् शब्द की तरह।

दकारान्त पुँल्लिग सुहृद् ( मित्र ) शब्द

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र०, सं० | सुहृत्-द् | सुहृदौ | सुहृदः |

शेष मरुत् की तरह।

नकारान्त पुँल्लिग राजन् ( राजा ) शब्द

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० | राजा | राजानौ | राजानः |
| द्वि० | राजानम् | राजानौ | राज्ञः |
| तृ० | राज्ञा | राजभ्याम् | राजभिः |
| च० | राज्ञे | राजभ्याम् | राजभ्यः |
| पं० | राज्ञः | „ | „ |
| ष० | „ | राज्ञोः | राज्ञाम् |
| स० | राज्ञि, राजनि | राज्ञोः | राजसु |
| सं० | हे राजन् | हे राजानौ | हे राजानः |

नकारान्त पुँल्लिग आत्मन् ( आत्मा ) शब्द

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० | आत्मा | आत्मानौ | आत्मानः |
| द्वि० | आत्मानम् | आत्मानौ | आत्मनः |
| तृ० | आत्मना | आत्मभ्याम् | आत्मभिः |
| च० | आत्मने | „ | आत्मभ्यः |
| पं० | आत्मनः | „ | „ |
| ष० | „ | आत्मनोः | आत्मनाम् |
| स० | आत्मनि | „ | आत्मसु |
| सं० | हे आत्मन | हे आत्मानौ | हे आत्मानः |

यज्वन, ब्रह्मन आदि शब्दों के रूप आत्मन की तरह होते हैं।

नकारान्त पुँल्लिग श्वन ( कुत्ता ) शब्द

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्रथमा | श्वा | श्वानौ | श्वानः |

| | | | |
|---|---|---|---|
| द्वितीया | श्वानम् | श्वानौ | शुनः |
| तृतीया | शुना | श्वभ्याम् | श्वभिः |
| चतुर्थी | शुने | „ | श्वभ्यः |
| पञ्चमी | शुनः | „ | „ |
| षष्ठी | शुनः | शुनोः | शुनाम् |
| सप्तमी | शुनि | „ | श्वसु |
| सम्बोधन | हे श्वन् | हे श्वानौ | हे श्वानः |

नकारान्त पुँल्लिंग युवन् ( युवक ) शब्द

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्रथमा | युवा | युवानौ | युवानः |
| द्वितीया | युवानम् | „ | यूनः |
| तृतीया | यूना | युवभ्याम् | युवभिः |
| चतुर्थी | यूने | „ | युवभ्यः |
| पञ्चमी | यूनः | युवभ्याम् | युवभ्यः |
| षष्ठी | „ | यूनोः | यूनाम् |
| सप्तमी | यूनि | „ | युवसु |
| सं० | हे युवन् | हे युवानौ | हे युवानः |

नकारान्त पुँल्लिंग मघवन् ( इन्द्र ) शब्द

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० | मघवा | मघवानौ | मघवानः |
| द्वि० | मघवानम् | मघवानौ | मघोनः |
| तृ० | मघोना | मघवभ्याम् | मघवभिः |
| च० | मघोने | „ | मघवभ्यः |
| प० | मघोनः | „ | „ |
| ष० | „ | मघोनोः | मघोनाम् |
| स० | मघोनि | „ | मघवसु |
| सं० | हे मघवन् | हे मघवानौ | हे मघवानः |

### इन्नन्त पुँल्लिङ्ग पथिन् ( मार्ग ) शब्द

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० सं० | पन्थाः | पन्थानौ | पन्थानः |
| द्वि० | पन्थानम् | " | पथः |
| तृ० | पथा | पथिभ्याम् | पथिभिः |
| च० | पथे | " | पथिभ्यः |
| पं० | पथः | " | " |
| ष० | " | पथोः | पथाम् |
| स० | पथि | " | पथिषु |

इसी प्रकार मथिन् और ऋभुक्षिन् ( इन्द्र ) शब्दों के रूप होते हैं।

### इन्नन्त पुँल्लिङ्ग शशिन् ( चन्द्र ) शब्द

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्रथमा | शशी | शशिनौ | शशिनः |
| द्वितीया | शशिनम् | " | " |
| तृतीया | शशिना | शशिभ्याम् | शशिभिः |
| चतुर्थी | शशिने | " | शशिभ्यः |
| पञ्चमी | शशिनः | " | " |
| षष्ठी | शशिनः | शशिनोः | शशिनाम् |
| सप्तमी | शशिनि | " | शशिषु |
| सं० | हे शशिन् | हे शशिनौ | हे शशिनः |

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]

| | | | |
|---|---|---|---|
| तृ० | पुंसा | पुंभ्याम् | पुंभिः |
| च० | पुंसे | " | पुंभ्यः |
| प० | पुंसः | " | " |
| ष० | " | पुंसोः | पुंसाम् |
| स० | पुंसि | " | पुंसु |
| सं० | हे पुमन् | हे पुमांसौ | हे पुमांसः |

सकारान्त पुँलिङ्ग विद्वस् ( विद्वान् ) शब्द

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० | विद्वान् | विद्वांसौ | विद्वांसः |
| द्वि० | विद्वांसम् | " | विदुषः |
| तृ० | विदुषा | विद्वद्भ्याम् | विद्वद्भिः |
| च० | विदुषे | " | विद्वद्भ्यः |
| प० | विदुषः | " | " |
| ष० | विदुषः | विदुषोः | विदुषाम् |
| स० | विदुषि | " | विद्वत्सु |
| सं० | हे विद्वन् | विद्वांसौ | हे विद्वांसः |

सकारान्त पुँलिङ्ग चन्द्रमस ( चन्द्रमा ) शब्द

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० | चन्द्रमाः | चन्द्रमसौ | चन्द्रमसः |
| द्वि० | चन्द्रमसम् | " | " |
| तृ० | चन्द्रमसा | चन्द्रमोभ्याम् | चन्द्रमोभिः |
| च० | चन्द्रमसे | " | चन्द्रमोभ्यः |
| प० | चन्द्रमसः | " | " |
| ष० | " | चन्द्रमसोः | चन्द्रमसाम् |
| स० | चन्द्रमसि | " | चन्द्रमस्सु |
| सं० | हे चन्द्रमः | हे चन्द्रमसौ | हे चन्द्रमसः |

वेधस , दुर्मनस सुमनस आदि शब्दों के रूप भी इसी प्र होते हैं ।

| | | | |
|---|---|---|---|
| द्वितीया | दिशम् | दिशौ | दिशः |
| तृतीया | दिशा | दिग्भ्याम् | दिग्भिः |
| चतुर्थी | दिशे | ” | दिग्भ्यः |
| पञ्चमी | दिशः | ” | ” |
| षष्ठी | ” | दिशोः | दिशाम् |
| सप्तमी | दिशि | ” | दिक्षु |

पकारान्त स्त्रीलिङ्ग आप् (पानी) शब्द

आप् शब्द नित्य बहुवचन में प्रयुक्त होता है

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० | — | — | आपः |
| द्वि० | — | — | अपः |
| तृ० | — | — | अद्भिः |
| च० | — | — | अद्भ्यः |
| प० | — | — | ” |
| ष० | — | — | अपाम् |
| स० | — | — | अप्सु |

षकारान्त स्त्रीलिङ्ग आशिष् (आशीर्वाद) शब्द

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र०, सं० | आशीः | आशिषौ | आशिषः |
| द्वितीया | आशिषम् | ” | ” |
| तृतीया | आशिषा | आशीर्भ्याम् | आशीर्भिः |
| चतुर्थी | आशिषे | आशीर्भ्याम् | आशीर्भ्यः |
| पञ्चमी | आशिषः | ” | ” |
| षष्ठी | ” | आशिषोः | आशिषाम् |
| सप्तमी | आशिषि | ” | आशीःषु |

हलन्त नपुंसकलिंग शब्द

नकारान्त नपुंसकलिङ्ग जगत् (संसार) शब्द

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० स० | जगत् | जगती | जगन्ति |

| स० | हविषि | हविषोः | हवि |
|---|---|---|---|

सकारान्त नपुंसकलिङ्ग धनुस् ( धनुष ) शब्द

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र०, सं० | धनुः | धनुषी | धनूं |
| द्वि० | ,, | ,, | |
| तृ० | धनुषा | धनुर्भ्याम् | धनु |
| च० | धनुषे | ,, | ध |
| पं० | धनुषः | ,, | |
| ष० | ,, | धनुषोः | ध |
| स० | धनुषि | ,, | ध |

इसी प्रकार चक्षुस् ( आँख ) शब्द के रूप भी होते हैं

## अभ्यास

१. धनुस्, हविस्, समिध् और पयस् शब्दों के सब विभक्तियों के वचनों में रूप लिखो।

२. रूप लिखो—

(क) गिर् शब्द का प्रथमा एकवचन में।

(ख) आशिस् शब्द का सप्तमी बहुवचन में।

(ग) जगत् शब्द का प्रथमा बहुवचन में।

(घ) नामन् शब्द का सप्तमी एकवचन में।

३. निम्नलिखित रूप किस शब्द की किस विभक्ति के किस वचन में

आपदि, पयः, वार्तासु, चक्षुषा।

४. निम्नलिखित रूपों को शुद्ध करो—

गिर्भ्याम्, जगतौ, नामेन, कर्मस्य।

५. निम्नलिखित श्लोकों के अर्थ लिखो और मोटे टाइप में मुद्रित हैं कारकों को स्पष्ट करो।

(क) विद्या ददाति विनयं, विनयाद् याति पात्रताम्।
पात्रत्वाद् धनमाप्नोति धनाद् धर्मं ततः सुखम्॥

विदुषी होती थी। इस माता के आशीर्वाद से दीर्घायु प्राप्त कर सकते हैं
रक्षाबन्धन बहनों का त्योहार है।

प्रतिदिन फलों को खाओ—स्वास्थ्य लाभ होगा। स्वच्छ जल पीओ
दूध दही का सेवन करो। मधु का प्रयोग भी स्वास्थ्य के लिए हितकर है।

(ख) वैद्य (भिषक्) की चिकित्सा में विश्वास रखो: अवश्य
होगा। शुद्ध वायु (मरुत्) में प्रातः सायं भ्रमण करो। बुद्धि
(धीमान्) पुरुष स्वास्थ्यरक्षा के सब उपायों का प्रयोग करता है
मार्ग में जाता हुआ (गच्छत्) मनुष्य कभी मल त्याग न करे
राजा उनको दण्ड देता है, जो समाज के स्वास्थ्य का नाश
है। अपने (आत्मन्) स्वास्थ्य की रक्षा के साथ दूसरों की स्वा
रक्षा भी हमारा धर्म है। यह कुत्तों (श्वन्) का स्वभाव है,
जायें वहीं गन्दा कर दें। जवान (युवन्) मनुष्य तो अवश्य
खेतों में बाहर प्रातःकाल जाएँ। मार्ग में (पथिन्) मल
करना पाप समझें। चन्द्रमा (शशिन्) की चाँदनी में भ्र
करने से पुरुष (पुंस्) का स्वास्थ्य अच्छा होता है।
(हृद्) को शान्ति प्राप्त होती है। विद्वान् लोगों का कथन
शरीर सबसे प्रथम साधन है।

द्रौपदी की वाणी (वाक्) के दोष से महाभारत हुआ है।
बहुत आपत्तियों (आपद्) का स्थान होता है। राजा हरिश्चन्द्र का यश
दिशाओं (दिश्) में फैल गया। बड़ों की आशीषों से (आशिस्)
मिला, यश और बल की वृद्धि होती है। जगत् में उन्हीं का नाम रहता है,
शुभ कर्मों (कर्मन्) का आचरण करते हैं। दिन-दिन (अहन्)
अपने कर्मों का निरीक्षण करें और मन में सदाचरण का निश्चय करें।

# षष्ठ अध्याय

## उपपद विभक्तियाँ

समीपवर्ती पद के योग से जो विभक्तियाँ प्रयुक्त होती हैं, उन्हें उपपद विभक्तियाँ कहते हैं।

उपपद विभक्तियों के कुछ उदाहरण नीचे दिये जाते हैं।

द्वितीया—निम्न-लिखित शब्दों के योग में द्वितीया विभक्ति का प्रयोग होता है :—

अन्तरेण, अन्तरा, अभितः, परितः, उभयतः, सर्वतः, उपर्युपरि, अध्यधि, अधोऽधः, धिक्, विना, निकषा, प्रति, अनु, समया, ऋते। यथा—

(क) विद्यामन्तरेण जनस्य न सुखम्—विद्या के बिना मनुष्य को सुख नहीं मिलता।

(ख) ग्राममभितः नदी वर्तते—ग्राम के चारों तरफ नदी है।

(ग) निकषा ग्रामं नदी वर्तते—ग्राम के पास नदी है।

(घ) ज्ञानं विना (ऋते) न मुक्तिः—ज्ञान के बिना मुक्ति नहीं होती।

(ङ) धिक् पापिनं पुत्रम्—पापी पुत्र को धिक्कार है।

तृतीया—१. निम्न-लिखित शब्दों के योग में तृतीया विभक्ति का प्रयोग होता है :—

अलम्, कृतम्, सह, साकम्, सार्धम्, समम् आदि शब्द।

(क) अलं विवादेन = झगड़े से बस।

(ख) कृतमेभिः विवादैः = इन विवादों से बस

(ग) शशिना सह याति कौमुदी = चन्द्रमा के साथ चाँदनी चलती है

७ जिस विकृत अङ्ग से देह का विकार लक्षित होता है उस शब्दों के साथ तृतीया विभक्ति का प्रयोग होता है—

अक्ष्णा काणः पृष्ठेन कुब्जः

चतुर्थी—निम्नलिखित शब्दों के योग में चतुर्थी विभक्ति का प्र होता है:—

रुच्, क्रुध्, द्रुह्, ईर्ष्या, असूया अर्थ की धातुओं के योग में नमः, स्वस्ति, अलम् ( समर्थ ) शब्दों के योग में।

(क) मह्यं फलं रोचते = मुझे फल अच्छा लगता है।

(ख) गुरुः शिष्याय क्रुध्यति = गुरु शिष्य पर गुस्से होता है।

(ग) विश्वामित्रो वसिष्ठाय द्रुह्यति = विश्वामित्र वसिष्ठ से करता है।

(घ) नमो ब्राह्मणाय = ब्राह्मण को नमस्कार।

(ङ) भूतेभ्यःस्वस्ति अस्तु = प्राणियों का कल्याण हो।

पञ्चमी—निम्नलिखित शब्दों के योग में पञ्चमी विभक्ति प्रयोग होता है।

प्रभृति, आरभ्य, बहिः, अनन्तरम्, ऊर्ध्वम्, पृथक्, विना इत्यादि।

(क) जन्मनः प्रभृति ( आरभ्य ) मया मांसं न भुक्तम् = जन्म मैंने मांस नहीं खाया।

(ख) ग्रामाद् बहिः अस्माकं विद्यालयोऽस्ति = ग्राम से बाहर हम विद्यालय है।

(ग) अध्ययनादनन्तरं स क्रीडति = पढ़ने के बाद वह खेलता

(घ) ज्ञानात् विना ( ऋते ) न मुक्तिः = ज्ञान के बिना नहीं मिलती।

(ङ) गृहात् पृथक् मे भोजनशाला अस्ति = घर से अलग भोजनशाला है

ी—दूर, समीप, तुल्य शब्दों के योग में पञ्चमी और षष्ठी दोनों
ग होता है।

नगरस्य (नगरात्) दूरं गृहम् = शहर से घर दूर है।

ग्रामस्य (ग्रामात्) समीपमाश्रमः = गाँव के पास ही आश्रम है।

चन्द्रस्य (चन्द्रात्) तुल्यं सुन्दरम् = चन्द्र के समान सुन्दर।

मी—निर्धारण (चुनाव) अर्थ में सप्तमी या षष्ठी विभक्ति का
होता है।

नृणां (नृषु) ब्राह्मणः श्रेष्ठः = मनुष्यों में ब्राह्मण श्रेष्ठ है।

गवां (गोषु) कृष्णा बहुक्षीरा = गौओं में काली गौ बहुत दूध
।

छात्राणां (छात्रेषु) मैत्रः पटुः = विद्यार्थियों में मैत्र चतुर है।

## अभ्यास

ऋते, विना, अनन्तरम्, अन्तरेण, प्रभृति के योग में कौन-सी
याँ आती हैं ! इनका वाक्यों में प्रयोग करो।

. शुद्ध करो।

क) रामस्य सह गच्छ।

ख) पितृ बाल्यात् प्रभृत्युपोषिते।

ग) रामस्य विना न कोऽपि समर्थः समुद्रं लङ्घयितुम्।

घ) बन्धुभिः अन्धः।

. निम्नलिखित श्लोकों में निर्दिष्ट उभय विभक्तियों को स्पष्ट करो
के अर्थ भी लिखो—

शशिना सह याति कौमुदी,
सह मेघेन तडित् प्रलीयते
प्रमदाः पतिवर्त्मगा इति
प्रतिपन्नं हि विचेतनैरपि

(ख) न विना परवादेन, रमते दुर्जनो जनः ।
काकः सर्वरसान् भुङ्क्ते, विनाऽमेध्यं न तृप्यति ।

(ग) सत्सङ्गतोऽहं विदितो तव भक्तिहेतुः
साध्यस्य नास्ति तव पण्डितमानिनो मे ।
वामन्तरेण न हि सा क्व च बोधपातो
तस्मात् त्वमेव शरणं मम दीनबन्धो ॥

---

# सप्तम अध्याय

## सर्वनाम शब्द

जो पद संज्ञा के स्थान पर उसके अर्थ को प्रकट करने प्रयुक्त होते हैं, उन्हें सर्वनाम कहा जाता है, जैसे—"बालकाः तान् शिक्षकः अध्यापयति" वाक्य में 'तान्' पद 'बालकान्' पद पर आया है, अतः यह सर्वनाम है।

सर्वनामों का प्रयोग तीनों लिङ्गों में होता है। पुँल्लिङ्ग संज्ञा- के स्थान में पुँल्लिङ्ग सर्वनाम, स्त्रीलिङ्ग संज्ञा-शब्दों के स्थान में स्त्री सर्वनाम, तथा नपुंसकलिङ्ग संज्ञा-शब्दों के स्थान पर नपुंसकलिङ्ग नाम शब्दों का प्रयोग होता।

अधिकतर प्रयोग में आने वाले सर्वनाम शब्द निम्नलिखित हैं- सर्व, तद्, यद्, एतद्, किम्, युष्मद्, अस्मद्, इदम् तथा अद सर्वनाम शब्दों के कारक और वचन भी संज्ञा-शब्दों के सदृ होते हैं। इनका सम्बोधन नहीं होता।

### सर्व (सब) शब्द

पुँल्लिङ्ग

प्रथमा    एक    द्वि    बहु

| स० | पूर्वस्मिन् | पूर्वयोः | पूर्वेषु |
|---|---|---|---|

स्त्रीलिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग में पूर्व के रूप सर्व की तरह होते हैं।

तद् ( वह ) शब्द

पुँल्लिङ्ग

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० | सः | तौ | ते |
| द्वि० | तम् | " | तान् |
| तृ० | तेन | ताभ्याम् | तैः |
| च० | तस्मै | " | तेभ्यः |
| पं० | तस्मात् | " | " |
| ष० | तस्य | तयोः | तेषाम् |
| स० | तस्मिन् | " | तेषु |

स्त्रीलिंग

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० | सा | ते | ताः |
| द्वि० | ताम् | " | ताः |
| तृ० | तया | ताभ्याम् | ताभिः |
| च० | तस्यै | " | ताभ्यः |
| पं० | तस्याः | " | " |
| ष० | " | तयोः | तासाम् |
| स० | तस्याम् | " | तासु |

नपुंसकलिंग

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० | तत् | ते | तानि |
| द्वि० | " | ते | " |

शेष पुँल्लिङ्ग की तरह

एतद् ( यह ) शब्द

पुँल्लिङ्ग

| | | | |
|---|---|---|---|
| द्वि० | एतम्, एनम् | एतौ, एनौ | एतान्, एनान् |
| तृ० | एतेन, एनेन | एताभ्याम् | एतैः |
| च० | एतस्मै | " | एतेभ्यः |
| पं० | एतस्मात् | " | " |
| ष० | एतस्य | एतयोः, एनयोः | एतेषाम् |
| स० | एतस्मिन् | " " | एतेषु |

स्त्रीलिंग

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० | एषा | एते | एताः |
| द्वि० | एताम्, एनाम् | एते, एने | एताः, एनाः |
| तृ० | एतया, एनया | एताभ्याम् | एताभिः |
| च० | एतस्यै | " | एताभ्यः |
| पं० | एतस्याः | " | " |
| ष० | " | एतयोः, एनयोः | एतासाम् |
| स० | एतस्याम् | " " | एतासु |

नपुंसकलिंग

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० | एतत् | एते | एतानि |
| द्वि० | एतत्, एनत् | एते, एने | एतानि, एना |

शेष पुंल्लिंग की तरह।

## यद् ( जो ) शब्द

पुंल्लिंग

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० | यः | यौ | ये |
| द्वि० | यम् | यौ | यान् |
| तृ० | येन | याभ्याम् | यैः |
| च० | यस्मै | | येभ्यः |
| पं० | यस्मात् | | " |
| ष० | यस्य | ययोः | येषाम् |

| | | |
|---|---|---|
| कस्यै | काभ्याम् | काभ्यः |
| कस्याः | काभ्याम् | काभ्यः |
| कस्याः | कयोः | कासाम् |
| कस्याम् | " | कासु |

नपुंसकलिंग

| | | |
|---|---|---|
| किम् | के | कानि |
| " | " | " |

शेष पुँल्लिङ्ग की तरह

युष्मद् ( तू ) शब्द

तीनों लिंगों में

| | | |
|---|---|---|
| त्वम् | युवाम् | यूयम् |
| त्वाम्, त्वा | युवाम्, वाम् | युष्मान्, वः |
| त्वया | युवाभ्याम् | युष्माभिः |
| तुभ्यम्, ते | युवाभ्याम्, वाम् | युष्मभ्यम्, वः |
| त्वत् | युवाभ्याम् | युष्मत् |
| तव ते | युवयोः, वाम् | युष्माकम्, वः |
| त्वयि | युवयोः | युष्मासु |

अस्मद् ( मैं ) शब्द

तीनों लिंगों में

| | | |
|---|---|---|
| अहम् | आवाम् | वयम् |
| माम् मा | आवाम् नौ | अस्मान् नः |
| मया | आवाभ्याम् | अस्माभिः |
| मह्यम् मे | आवाभ्याम् नौ | अस्मभ्यम्, नः |
| मत् | आवाभ्याम् | अस्मत् |
| मम मे | आवयोः नौ | अस्माकम् नः |
| मयि | आवयोः | अस्मासु |

| | | |
|---|---|---|
| अमुम् | अमू | अमून् |
| अमुना | अमूभ्याम् | अमीभिः |
| अमुष्मै | ,, | अमीभ्यः |
| अमुष्मात् | ,, | ,, |
| अमुष्य | अमुयोः | अमीषाम् |
| अमुष्मिन् | ,, | अमीषु |

स्त्रीलिंग

| | | |
|---|---|---|
| असौ | अमू | अमूः |
| अमूम् | ,, | ,, |
| अमुया | अमूभ्याम् | अमूभिः |
| अमुष्यै | ,, | अमूभ्यः |
| अमुष्याः | अमूभ्याम् | अमूभ्यः |
| ,, | अमुयोः | अमूषाम् |
| अमुष्याम् | ,, | अमूषु |

नपुंसकलिंग

| | | |
|---|---|---|
| अदः | अमू | अमूनि |
| ,, | ,, | ,, |

शेष पुँल्लिंग की तरह

## उभ ( दोनों ) शब्द

उभ शब्द के रूप केवल द्विवचन में होते हैं।

| पुँल्लिंग | स्त्रीलिङ्ग | नपुंसकलिंग |
|---|---|---|
| उभौ | उभे | उभे |
| ,, | ,, | ,, |
| उभाभ्याम् | उभाभ्याम् | उभाभ्याम् |
| ,, | ,, | ,, |
| ,, | ,, | ,, |

| | | |
|---|---|---|
| च० | उभयोः | उभयोः |
| ष० | " | " |

## अभ्यास

१. सर्वनाम किसे कहते हैं

२. निम्नलिखित सर्वनामों के रूप लिखो—
   सर्व ( पुल्लिंग ), एतद् ( स्त्रीलिंग ), युष्मद् ( नपुंसकलिंग )।

३. रूप लिखो—
   किम् शब्द का स्त्रीलिंग में षष्ठी बहुवचन में।
   अस्मद् शब्द का तृतीया द्विवचन में।
   यद् शब्द का स्त्रीलिंग में चतुर्थी एकवचन में।

४. शुद्ध करो—
   सर्वाय, युष्माभ्याम् , अस्देषु।

५. निम्नलिखित श्लोकों में सर्वनाम शब्दों की विभक्तियाँ पहचान
   उनके अर्थ करो :—

(क) यत् पृथिव्यां व्रीहियवं, हिरण्यं पशवः स्त्रियः।
    नालमेकस्य तत् सर्वं, इति पश्यन्न मुह्यति॥

(ख) येन केन प्रकारेण, यस्य कस्यापि जन्तुनः।
    सन्तोषं जनयेत् प्राज्ञः, तदेवेश्वरपूजनम्॥

(ग) क्वाहं क्व च गमिष्यामि, कश्चाहं किमिहागतः।
    को बन्धुर्मम कस्याहम्, इत्यात्मानं विचिन्तय॥

(घ) यस्मिन् यथा वर्तते यो मनुष्यः
            तस्मिन् तथा वर्तितव्यं स धर्मः।
    मायाचारो मायया वर्तितव्यः
            साध्वाचारः साधुना प्रत्युपेयः॥

(ङ) न कश्चिदपि जानाति, किं कस्य श्वो भविष्यति।
    अतः श्वः करणीयानि, कुर्यादद्यैव बुद्धिमान्॥

काम इच्छों के प्रयोग का ध्यान रखते हुए अनुवाद करो—
सार में सुखी वह है, जो सब कामनाओं को त्याग देता है और सब
भावना से करता है। उसका चित्त सदा प्रसन्न रहता है। यही
म मार्ग है। इस पर चलने से कोई मनुष्य कभी दुःख नहीं
जो इस सत्य को समझ लेता है, उसकी आत्मा सदा शान्त रहती
जिस अवस्था में जो मनुष्य है, उस उसमें रह सन्तोष करे और
का पालन करे। संसार में कौन सा पदार्थ स्थिर है, कौन सा
, कौन सी विभूति अनश्वर है! हे अर्जुन! तुम केवल आत्मा
समझो। तुम्हारा शरीर मरता है, आत्मा नहीं। मेरा सच्चा भक्त
देश जानते हुए निष्काम बुद्धि से कर्तव्य का पालन करता है।

---

# अष्टम अध्याय

## विशेषण

शब्द से संज्ञा या सर्वनाम के गुण, अवस्था, संख्या तथा
परिमाणादि का बोध हो, उसे विशेषण ( adject ve ) कहते हैं।
यथा: प्रभूतं धनं, त्रिचतुराः बालकाः, इमानि पुस्तकानि,
वाक्यों में क्रमशः प्रभूत त्रिचतुराः तथा इमानि शब्द क्रमशः
बालक तथा पुस्तक के विशेषण हैं [illegible] विशेषण शब्दों
[illegible] करते हैं इसलिए इन्हें [illegible] करने वाला
[illegible]
[illegible]

---

[illegible]
[illegible] मनो-
[illegible] मनोहर [illegible]
[illegible]

(२) विशेषण शब्दों से तारतम्य (Degrees of C
का भी बोध होता है। इसके लिए 'तर' 'तम' प्रत्ययों का प्रयोग 
जाता है। कुछ विशेषण शब्दों के उदाहरण आगे दिये जाते हैं—

| स्वरूपवाचक<br>Positive degree | तुलनावाचक<br>Comparative | अतिशयवाचक<br>Superlative |
|---|---|---|
| प्रिय | प्रियतर | प्रियतम |
| गुरु | गुरुतर | गुरुतम |
| लघु | लघुतर | लघुतम |
| महत् | महत्तर | महत्तम |
| बलवत् | बलवत्तर | बलवत्तम |

यह स्पष्ट है कि दो में किसी एक की उत्कृष्टता दिखाने के लि
तुलनावाचक 'तर' प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है और सब में कि
एक की उत्कृष्टता दिखाने के लिए अतिशयवाचक 'तम' का प्रयोग कि
जाता है।

(३) क्रिया तथा अव्यय शब्दों के पीछे 'तर' 'तम' अथ
'तराम्' 'तमाम्' का उपयुक्त अर्थों में ही प्रयोग किया जाता है। यथा—
शाद्दितराम्, शाद्दितमाम्। उत्पतितराम् उत्पतितमाम्। उच्च
ैस्तम। नीचैस्तर, नीचैस्तम। इत्यादि।

(४) तर तम प्रत्ययों के अर्थ में ही ईयस और इष्ठ प्रत्ययों 
भी प्रयोग होता है परन्तु ये प्रत्यय कुछ गिने गुणवाचक विशेषणों
पीछे ही लग सकते हैं। तर तम प्रत्यय प्रायः सभी विशेषणों के स
लगाये जा सकते हैं। ईयस और इष्ठ प्रत्ययों के उदाहरण आगे दि
जाते हैं। इन्हें स्मरण कर लेना चाहिए।

विशेषण शब्दों के रूप अजन्त अथवा हलन्त शब्दों की भ लिङ्गानुसार बन सकते । यथा—( अजन्त पुँ० ) प्रियः, प्रि प्रियाः; ( स्त्री० ) प्रिया, प्रिये, प्रियाः; ( नपु ) प्रियम्, प्रिये, प्रि आदि । ( हलन्त पुँ० ) महान्, महान्तौ महान्तः; ( स्त्री० ) म महत्यौ, महत्यः; ( नपु० ) महत्, महती, महान्ति ।

इष्ठ-प्रत्ययान्त शब्दों के रूप लिङ्गानुसार नर, लता तथा फल सदृश बताये जा सकते हैं । यथा—( पुं० ) ज्येष्ठः, ज्येष्ठौ, ( स्त्री० ) ज्येष्ठा, ज्येष्ठे, ज्येष्ठाः, (नपुं०) ज्येष्ठम्, ज्येष्ठे, ईयस्-प्रत्ययान्त शब्दों के रूप नीचे दिये जाते हैं ।

प्रेयस् ( बहुत प्यारा ) पुँल्लिङ्ग

| | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
|---|---|---|---|
| प्रथमा | प्रेयान् | प्रेयांसौ | प्रेयांसः |
| द्वितीया | प्रेयांसम् | " | प्रेयसः |
| तृतीया | प्रेयसा | प्रेयोभ्याम् | प्रेयोभिः |
| चतुर्थी | प्रेयसे | " | प्रेयोभ्यः |
| पञ्चमी | प्रेयसः | " | |
| षष्ठी | " | प्रेयसोः | प्रेयसाम् |
| सप्तमी | प्रेयसि | " | प्रेयःसु |
| सम्बोधन | हे प्रेयन् | हे प्रेयांसौ | हे प्रेयांसः |

स्त्रीलिङ्ग

| | एक० | द्वि० | बहु० |
|---|---|---|---|
| प्रथमा | प्रेयसी | प्रेयस्यौ | प्रेयस्यः |
| द्वितीया | प्रेयसीम् | " | प्रेयसीः |
| तृतीया | प्रेयस्या | प्रेयसीभ्याम् | प्रेयसीभिः |
| चतुर्थी | प्रेयस्यै | | प्रेयसीभ्यः |
| पञ्चमी | प्रेयस्याः | | |

को यह कन्या अधिक प्यारी है। तुम दोनों में कौन बड़ा है? मैं राजेन्द्र[illegible] से छोटा हूँ। इन नौ फलों में कौन सा फल अधिक कोमल है।

(ग) भारत में जगन्नाथ का मन्दिर सबसे बड़ा है। हिमालय सब पर्व[illegible] से ऊँचा है। सब नदियों में गंगा का पानी सबसे अधिक स्वच्छ है। पशुओं [illegible] हाथी सबसे भारी है। छोटे पुत्र माता को सबसे प्यारे होते हैं। पाप [illegible] पुण्य में पुण्य की विजय होती है। दशरथ की सब पत्नियों में कौशल्या [illegible] थी। दशरथ का सबसे बड़ा तथा सबसे अधिक गुणवान पुत्र राम था। लक्ष्[illegible] राम का छोटा भाई था।

४. अधोनिर्दिष्ट में विशेषण शब्दों को स्पष्ट करते हुए श्लोकों के अर्थ क[illegible]

(क) सन्तुष्टस्य निरीहस्य, स्वात्मारामस्य यत्सुखम्।
कुतस्तत् कामलोभेन, धावतोऽर्थेहया दिशः॥

(ख) कुतस्त्वा कश्मलमिदं, विषमे समुपस्थितम्।
अनार्यजुष्टमस्वर्ग्यमकीर्तिकरमर्जुन॥

(ग) भवन्ति नम्रास्तरवः फलोद्गमैः
नवाम्बुभिर्भूरिविलम्बिनो घनाः।
अनुद्धताः सत्पुरुषाः समृद्धिभिः
स्वभाव एवैष परोपकारिणाम्॥

(घ) गंगातीरे हिमगिरिशिलाबद्धपद्मासनस्य।
ब्रह्मध्यानाभ्यसनविधिना योगनिद्रां गतस्य।
किं तैर्भाव्यं मम सुदिवसैः यत्र ते निर्विशङ्काः।
कण्डूयन्ते जरठहरिणाः स्वाङ्गमङ्गे मदीयैः।

---

# नवम अध्याय

## संख्यावाची शब्द (१ [illegible])

संख्यावाची शब्द विशेष्य शब्द के अनुसार [illegible]

अतः इनके लिङ्ग, विभक्ति और वचन भी संज्ञा के अनुसार ही होते हैं। इनका प्रयोग संज्ञा शब्दों के अनुकूल तीनों लिङ्गों में किया जाता है। नीचे एक से दस पर्यन्त संख्यावाची शब्दों के रूप दिये जाते हैं—

## एक ( एक ) शब्द

| | पुंलिङ्ग | स्त्रीलिङ्ग | नपुंसकलिङ्ग |
|---|---|---|---|
| प्र० | एकः | एका | एकम् |
| द्वि० | एकम् | एकाम् | एकम् |
| तृ० | एकेन | एकया | एकेन |
| च० | एकस्मै | एकस्यै | एकस्मै |
| पं० | एकस्मात् | एकस्याः | एकस्मात् |
| ष० | एकस्य | " | एकस्य |
| स० | एकस्मिन् | एकस्याम् | एकस्मिन् |

एक शब्द 'एक' अर्थ में नित्य एकवचनान्त होता है। 'कई' अर्थ में इसके बहुवचन में 'सर्व' की तरह रूप होते हैं।

## द्वि ( दो ) शब्द

( द्वि शब्द केवल द्विवचन में ही होता है )

| | पुंलिङ्ग | स्त्रीलिङ्ग | नपुंसकलिङ्ग |
|---|---|---|---|
| प्रथमा | द्वौ | द्वे | द्वे |
| द्वितीया | " | " | " |
| तृतीया | द्वाभ्याम् | द्वाभ्याम् | द्वाभ्याम् |
| चतुर्थी | " | " | " |
| पंचमी | | " | " |
| षष्ठी | द्वयोः | द्वयोः | द्वयोः |
| सप्तमी | | " | " |

## त्रि ( तीन ) शब्द

( 'त्रि' शब्द केवल बहुवचन में ही होता है )

| | पुँल्लिङ्ग | स्त्रीलिङ्ग | नपुंसकलिङ्ग |
|---|---|---|---|
| प्रथमा | त्रयः | तिस्रः | त्रीणि |
| द्वितीया | त्रीन् | " | " |
| तृतीया | त्रिभिः | तिसृभिः | त्रिभिः |
| चतुर्थी | त्रिभ्यः | तिसृभ्यः | त्रिभ्यः |
| पञ्चमी | " | " | " |
| षष्ठी | त्रयाणाम् | तिसृणाम् | त्रयाणाम् |
| सप्तमी | त्रिषु | तिसृषु | त्रिषु |

## चतुर् ( चार ) शब्द

( चतुर् शब्द भी नित्य बहुवचन में ही होता है )

| | पुँल्लिङ्ग | स्त्रीलिंग | नपुंसकलिङ्ग |
|---|---|---|---|
| प्र० | चत्वारः | चतस्रः | चत्वारि |
| द्वि० | चतुरः | चतस्रः | चत्वारि |
| तृ० | चतुर्भिः | चतसृभिः | चतुर्भिः |
| च० | चतुर्भ्यः | चतसृभ्यः | चतुर्भ्यः |
| प० | " | " | " |
| ष० | चतुर्णाम् | चतसृणाम् | चतुर्णाम् |
| स० | चतुर्षु | चतसृषु | चतुर्षु |

'पञ्चन्' से लेकर 'दशन्' तक शब्द तीनों लिंगों में समान होते और सदा बहुवचन में होते हैं।

| पंचन् ( पाँच ) | | षष् ( छः ) | |
|---|---|---|---|
| प्र० | पञ्च | प्र० | षट् |
| | | द्वि० | " |

| | पञ्चन् | | षष् |
|---|---|---|---|
| तृ० | पञ्चभिः | तृ० | षड्भिः |
| च० | पञ्चभ्यः | च० | षड्भ्यः |
| पं० | ,, | पं० | ,, |
| ष० | पञ्चानाम् | ष० | षण्णाम् |
| स० | पञ्चसु | स० | षट्सु, षट्सु |

| | सप्तन् ( सात ) | अष्टन् ( आठ ) |
|---|---|---|
| प्र० | सप्त | अष्टौ, अष्ट |
| द्वि० | ,, | ,, ,, |
| तृ० | सप्तभिः | अष्टाभिः, अष्टभिः |
| च० | सप्तभ्यः | अष्टाभ्यः, अष्टभ्यः |
| पं० | ,, | ,, ,, |
| ष० | सप्तानाम् | अष्टानाम् |
| स० | सप्तसु | अष्टासु, अष्टसु |

| | नवन् ( नौ ) | दशन् ( दस ) |
|---|---|---|
| प्र० | नव | दश |
| द्वि० | ,, | ,, |
| तृ० | नवभिः | दशभिः |
| च० | नवभ्यः | दशभ्यः |
| पं० | ,, | ,, |
| ष० | नवानाम् | दशानाम् |
| स० | नवसु | दशसु |

### कति ( कितना ) शब्द

कति शब्द के निम्न बहुवचन रूप हैं

प्र० कति

द्वि० कति

| | |
|---|---|
| तृ० | कतिभिः |
| च० | कतिभ्यः |
| प० | " |
| ष० | कतीनाम् |
| स० | कतिषु |

## गणना

दस तक संख्याएँ ऊपर दी गई हैं। इनके आगे की संख्याएँ सङ्ख्यावाचक शब्दों को मिलाने से बनती हैं। यथा एक+दश=एकादश (ग्यारह), चतुर्+दश=चतुर्दश (चौदह)।

द्वि, त्रि और अष्टन् जब अन्य शब्दों से मिलते हैं तो उनमें परिवर्तन हो जाते हैं। जैसे द्वि को द्वा—द्वादश त्रि को त्रयस्—त्रयोदश, अष्टन् को अष्टा—अष्टादश। पञ्चन्, सप्तन् आदि के न् का लोप हो जाता है। दश के योग में 'एक' को 'एका' हो जाता है—एकादश। १९, २९, ३९, आदि की रचना में 'नव' अथवा 'एकोन' का प्रयोग किया जाता है। विद्यार्थियों के लिए इन सङ्ख्यावाचक शब्दों (Card nals) की तालिका नीचे दी जाती है।

सङ्ख्यावाचक शब्दों का एक और प्रकार भी है, जिसे क्रमवाचक अथवा पूरण (Ord nal) कहते हैं। एक, द्वि, त्रि, चतुर् और षष् क्रमशः प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ और षष्ठ पूरण बनते हैं। पञ्चन् तथा सप्तन् से दशन् तक की संख्याओं के पूरण 'न्' को 'म' करने से बनते हैं। दश के बाद एकादश आदि में कोई विकार नहीं होता, केवल विंशति आदि के दो रूप बनते हैं। एक तो अन्त में 'तम' लगाने से—यथा विंशतितमः—दूसरा 'ति' का लोप करने से—यथा विंशः आदि। सङ्ख्यावाचक शब्दों के साथ ही क्रमवाचक शब्द भी नीचे दिये जाते हैं। यहाँ इनके केवल पुल्लिङ्ग रूप ही दिये गये हैं।

| अङ्क | संख्यावाचक | पूरण | |
|---|---|---|---|
| २५ | पञ्चविंशतिः | पञ्चविंशतितमः | पञ्चविंशः |
| २६ | षड्विंशतिः | षड्विंशतितमः | षड्विंशः |
| २७ | सप्तविंशतिः | सप्तविंशतितमः | सप्तविंशः |
| २८ | अष्टाविंशतिः | अष्टाविंशतितमः | अष्टाविंश |
| २९ | { नवविंशतिः<br>{ एकोनत्रिंशत् | नवविंशतितमः<br>एकोनत्रिंशत्तमः | नवविंश<br>एकोनत्रिंश |
| ३० | त्रिंशत् | त्रिंशत्तमः | त्रिंशः |
| ३१ | एकत्रिंशत् | एकत्रिंशत्तमः | एकत्रिंशः |
| ३२ | द्वात्रिंशत् | द्वात्रिंशत्तमः | द्वात्रिंशः |
| ३३ | त्रयस्त्रिंशत् | त्रयस्त्रिंशत्तमः | त्रयस्त्रिंशः |
| ३४ | चतुस्त्रिंशत् | चतुस्त्रिंशत्तमः | चतुस्त्रिंशः |
| ३५ | पञ्चत्रिंशत् | पञ्चत्रिंशत्तमः | पञ्चत्रिंशः |
| ३६ | षट्त्रिंशत् | षट्त्रिंशत्तमः | षट्त्रिंशः |
| ३७ | सप्तत्रिंशत् | सप्तत्रिंशत्तमः | सप्तत्रिंश |
| ३८ | अष्टात्रिंशत् | अष्टात्रिंशत्तमः | अष्टात्रिं |
| ३९ | { नवत्रिंशत्<br>{ एकोनचत्वारिंशत् | नवत्रिंशत्तमः<br>एकोनचत्वारिंशत्तमः | नवत्रिंशः<br>एकोनचत्वा |
| ४० | चत्वारिंशत् | चत्वारिंशत्तमः | चत्वारिंश |
| ४१ | एकचत्वारिंशत् | एकचत्वारिंशत्तमः | एकचत्वारि |
| ४२ | { द्वाचत्वारिंशत्<br>{ द्विचत्वारिंशत् | द्वाचत्वारिंशत्तमः<br>द्विचत्वारिंशत्तमः | द्वाचत्वारिं<br>द्विचत्वारिं |
| ४३ | त्रयश्चत्वारिंशत् | त्रयश्चत्वारिंशत्तमः | त्रयश्चत्वारि |
| ४४ | चतुश्चत्वारिंशत् | चतुश्चत्वारिंशत्तमः | चतुश्चत्वारि |
| ४५ | पञ्चचत्वारिंशत् | पञ्चचत्वारिंशत्तमः | पञ्चचत्वारि |
| ४६ | षट्चत्वारिंशत् | षट्चत्वारिंशत्तमः | षट्चत्वारि |

(घ) तृणानि भूमिरुदकं वाक् चतुर्थी च सूनृता ।
एतान्यपि सतां गेहे, नोच्छिद्यन्ते कदाचन ॥
(ङ) लालयेत् पञ्च वर्षाणि, दश वर्षाणि ताडयेत् ।
प्राप्ते तु षोडशे वर्षे, पुत्रं मित्रवदाचरेत् ॥

---

# दशम अध्याय

## स्त्री-प्रत्यय

संस्कृत में पुंल्लिङ्ग से स्त्रीलिङ्ग बनाने के लिए चार मुख्य प्रत्यय हैं—आ, ई, ऊ, ति । जैसे बाल से बाला, पुत्र से पुत्री, श्वसुर से श्वश्रू तथा युवन् से युवति ।

इन प्रत्ययों के सम्बन्ध में निश्चित नियम स्थिर नहीं किये जा सकते, यद्यपि कुछ आवश्यक प्रयोग स्मरण रखे जा सकते हैं ।

### आ

१. अज आदि अकारान्त पुंल्लिङ्ग शब्दों में 'आ' लगाने से स्त्रीलिङ्ग बन जाता है । जैसे—अजा, अश्वा, चटका, कोकिला, वत्सा, कान्ता, शान्ता, पठिता इत्यादि ।

२. जिन शब्दों के अन्त में 'क' हो उनमें भी 'आ' लगाने से स्त्रीलिङ्ग बनता है, साथ ही 'क' से पूर्व 'अ' को 'इ' हो जाता है । यथा—

कारिका, पाठिका, पाचिका, परिव्राजिका, दारिका, मूषिका इत्यादि । त्यक्ता, अधित्यका, कन्यका आदि कुछ शब्दों में 'क' से पूर्व 'अ' को इ नहीं होता ।

### ई

१. गौर आदि अकारान्त पुंल्लिङ्ग शब्दों को 'ई' लगाने से

स्त्रीलिङ्ग बनता है। यथा—गौरी, सुन्दरी, मातामही, नर्तकी, प
पितामही, आदि।

इनके अतिरिक्त कुमारी, किशोरी, पुत्री, मानिकी, चतुरी, बड़
षोडशी, तादृशी आदि शब्द भी ईकारान्त ही बनते हैं।

२. ह्रस्व ऋकारान्त, इन्नन्तरान्त, वत्, मत् प्रत्ययान्त, वन्,
एयस्, अच् प्रत्ययान्त शब्दों को भी 'ई' लगाने से स्त्रीलिङ्ग
हैं। यथा—

| | |
|---|---|
| कर्तृ + ई = कर्त्री | गरीयस् + ई = गरीयसी |
| गन्तृ + ई = गन्त्री | श्रेयस् + ई = श्रेयसी |
| मानिन् + ई = मानिनी | प्रत्यच् + ई = प्रतीची |
| भवत् + ई = भवती | उदच् + ई = उदीची |
| बलवत् + ई = बलवती | धीमत् + ई = धीमती |
| श्रीमत् + ई = श्रीमती | विद्वस् + ई = विदुषी |

३. शत्रन्त शब्दों का स्त्रीलिङ्ग भी 'ई' प्रत्यय लगाने से बनत
यथा—गच्छन्ती, पश्यन्ती, तिष्ठन्ती, पिबन्ती, वदन्ती, स्मरन्ती,
जिघ्रती, जाग्रती, जुह्वती, बिभ्यती, ददती, नश्यन्ती, दीव्यन्ती, आप्नुव
इच्छन्ती, कुर्वन्ती, गृह्णन्ती, चोरयन्ती आदि।

४. जातिवाचक अकारान्त शब्दों के बाद भी 'ई' प्रत्यय लगाने
स्त्रीलिङ्ग रूप बनते हैं। यथा—ब्राह्मणी, मृगी, हंसी, काकी,
मयूरी, बकी, सिंही, बिडाली, महिषी आदि।

५. गुणवाचक उकारान्त शब्दों के बाद 'ई' प्रत्यय लगाने
स्त्रीलिङ्ग रूप बनते हैं। यथा—गुरु—गुर्वी, मृदु—मृद्वी, साधु—
आदि।

६. इन्द्र आदि शब्दों के बाद भी 'ई' प्रत्यय लगाने से स्त्री
रूप बनते हैं, साथ ही 'आन' का आगम भी हो जाता है। यथ
इन्द्राणी, वरुणानी, मातुलानी, क्षत्रियाणी, आचार्यानी इत्यादि।

परन्तु स्वयं व्याख्यात्री (आप पढ़ाने वाली) के अर्थ में 'आ'
य से 'आचार्या' रूप बनता है। इसी तरह उपाध्याय की स्त्री
ध्यायानी तथा स्वयं व्याख्यात्री उपाध्याया कहलाती है। शूद्र की
शूद्री परन्तु वर्ण से शूद्र स्त्री शूद्रा कहलाती है।

ऊ

ऊ प्रत्यय उकारान्त मनुष्यवाची शब्दों के पीछे लगता है। यथा—
वधू, पङ्गू, इत्यादि।

ति

न शब्द के साथ 'ति' प्रत्यय आता है और अन्त के न् का लोप
है। युवन्+ति=युवति।

अभ्यास

निम्नलिखित शब्दों के स्त्रीप्रत्ययान्त रूप बनाओ—
ाचक, आचार्य, उपाध्याय, शूद्र, ब्राह्मण, [illegible], बलवत्, [illegible],
न्, पति, बाल, हंस, पशु, युवन्, मृग, महत्, [illegible], सूचक।
ठ करो—
) यह लड़की हमारे विद्यालय में पढ़ती है।
) तुम्हारी [illegible] बहुत सुन्दर है।
[illegible] ने बुढ़िया को पकड़ लिया।
[illegible] को कहानी सुनाती है।
[illegible] कहाँ गया है।

त्रयाणां भुवनानां समाहारः = त्रिभुवनम्

समाहार का अर्थ समूह है, प्रायः इसी अर्थ में द्विगु समास रचना होती है। द्विगु समास नपुंसकलिङ्ग अथवा स्त्रीलिङ्ग में प्रयु होता है।

४. द्वन्द्व (Copulative)—जिस समास में प्रत्येक पद प्रधानता हो और विग्रह में 'च' का प्रयोग किया जाय वह द्वन्द्व सम है। यह तीन प्रकार का है—

१. इतरेतर द्वन्द्व—जिसमें पृथक् पृथक् प्रत्येक पद का समान मह हो। जैसे—रामश्च लक्ष्मणश्च = रामलक्ष्मणौ। कृष्णश्च अर्जुनश्च कृष्णार्जुनौ। यदि दो शब्दों से अधिक शब्द समस्त हों तो बहुव होगा। जैसे—रामश्च लक्ष्मणश्च भरतश्च शत्रुघ्नश्च = रामलक्ष्मणभर शत्रुघ्नाः। समस्त पद का लिङ्ग वही होता है जो अंतिम शब्द का है

२. समाहार द्वन्द्व—जिसमें समूह का महत्त्व हो, पृथक् पृ पद का नहीं। इस में मिलने वाले शब्द चाहे किसी लिंग के क्यों हों समस्त पद नपुंसकलिंग तथा एकवचनान्त हो जाता है। जैसे—प च पादौ च = पाणिपादम्। अहिश्च नकुलश्च = अहिनकुलम्।

३. एकशेष द्वन्द्व—जहाँ दो पदों में से एक शेष रह जाय और दे का अर्थ बोध करावे। जैसे माता च पिता च = पितरौ। श्वश्रूश्च श्व रश्च = श्वशुरौ। भ्राता च स्वसा च = भ्रातरौ। पुत्रश्च दुहिता च = पु

५. तत्पुरुष (Determinative)—जिसमें उत्तरपद की प्रधा हो और विग्रह में द्वितीया से सप्तमी तक विभक्तियों का प्रयोग हो, तत्पुरुष समास है। इसके छः भेद हैं। विग्रह करते समय जो विभ लगाई जाय उसी के अनुसार इसका भेद किया जाता है।

द्वितीया तत्पुरुष—ग्रामं गतः = ग्रामगतः

नरकं पतितः = नरकपतितः

दुःखम् अतीतः = दुःखातीतः

चतुर्थी अलुक्=परस्मैपदम्
पंचमी अलुक्=स्तोकान्मुक्तः
षष्ठी अलुक्=वाचस्पतिः
सप्तमी अलुक्=युधिष्ठिरः

संस्कृत में तत्पुरुष समास का बहुत प्रयोग पाया जाता है।

बहुव्रीहि (Possessive)—जिस समास में पूर्व अथवा उत्तर पद भी प्रधान न हो बल्कि अन्य पद की प्रधानता हो और जिसमें 'यत्' शब्द के किसी रूप का प्रयोग होता हो वह बहुव्रीहि कहाता है। यह समस्त शब्द सदा विशेषण होता है। हिन्दी में अर्थ करने पर 'वाला' का भाव पाया जाता है। यथा—

पीतम् अम्बरं यस्य सः=पीताम्बरः
चक्रं पाणौ यस्य सः=चक्रपाणिः
न विद्यमानः पुत्रः यस्य सः=अपुत्रः
विमलम् उदकं यस्मिन् तद्=विमलोदकम्
निर्गतं भयं यस्मात् सः=निर्भयः

'इव' तथा 'सह' के अर्थ प्रकाशित होने पर भी बहुव्रीहि होता है। यथा—चन्द्रस्य प्रभा इव प्रभा यस्याः सा=चन्द्रप्रभा।; सह=सपुत्रः।

बहुव्रीहि समास में पदान्त 'ऋ' तथा 'ई' के बाद प्रायः ? के लिए 'क' लगाया जाता है। यथा—समर्तृका, सपत्नीक इत्यादि।

कई समस्त पदों में विग्रह करने पर अर्थानुसार दो-दो समास होते हैं। यथा 'महाबाहुः' का 'महान्तौ बाहू यस्य सः' यह विग्रह करें तो बहुव्रीहि समास होगा, परन्तु "महान्तौ बाहू" यदि विग्रह किया जाय तो कर्मधारय समास होगा।

राज्य-अभिषेक चाहती थी। उसने अपने पति से पहले दिये हुए दो
माँगे। एक से राम का वन में रहना, दूसरे से भरत का अभिषेक।
चौदह वर्षों के लिए वन को चले गये। राम की पत्नी सती सीता भी व
गई। राम का अनुज लक्ष्मण भी अपने भाई की सेवा के लिए
- साथ गया।

१. समस्त शब्दों के विग्रह करते हुए निम्न श्लोकों के अर्थ लिखो:

(क) अनेकसंशयोच्छेदि, परोक्षार्थस्य दर्शकम्।
सर्वस्य लोचनं शास्त्रं, यस्य नास्त्यन्ध एव सः॥

(ख) सुखार्थी यस्त्यजेद्विद्यां विद्यार्थी वा त्यजेत् सुखम्।
सुखार्थिनः कुतो विद्या, कुतो विद्यार्थिनः सुखम्॥

(ग) योऽविद्धिरण्याभरणाम्बरादि-
द्रव्येषु मायारचितेषु मूढः।
प्रलोभितात्मा ह्युपभोगबुद्ध्या
पतंगवत् नश्यति नष्टबुद्धिः॥

(घ) अस्मिन् महामोहमये कटाहे
सूर्याग्निना रात्रिदिवेन्धनेन।
मासर्तुदर्वीपरिघट्टनेन
भूतानि कालः पचतीति वार्ता॥

(ङ) रोगशोकपरितापबन्धनव्यसनानि च।
आत्मापराधवृक्षाणां फलान्येतानि देहिनाम्॥

(च) अचिन्त्यरूपो भगवान्निरञ्जनो विश्वम्भरो ज्ञानमयश्चिदात्म
विशोधितो येन हृदि क्षणं नो वृथा गतं तस्य नरस्य जीवितम्

नोट—उपर्युल्लिखित श्लोकों में जहाँ जहाँ सन्धि है, वहाँ सन्धिच्छेद भी

# चतुर्दश अध्याय

## धातु-प्रकरण

### ( Conjugation of Verbs )

१. धातु तथा लकार—

संस्कृत में क्रिया शब्दों को धातु कहते हैं। धातुओं के रूप दश लकारों ( Tenses and Moods ) में बनते हैं। परन्तु मुख्य लकार निम्नलिखित पाँच ही हैं :—

| | | |
|---|---|---|
| १. लट् | वर्तमान | Present Tense |
| २. लृट् | भविष्यत् | Second Future |
| ३. लोट् | आज्ञा | Imperative Mood |
| ४. लङ् | भूतकाल | Past Imperfect |
| ५. विधिलिङ् | विधि | Potential Mood |

इन्हीं लकारों में धातुओं के रूप यहाँ लिखे जाएँगे।

२. गण—धातुओं को रचना के अनुसार दस भागों में बाँटा गया ...न्हें गण कहते हैं। वे दस गण निम्नलिखित हैं—

. भ्वादिगण—जिनमें धातुओं के रूप 'भू' धातु की तरह होते हैं।
. अदादिगण " " " 'अद्' " " " "
जुहोत्यादिगण " " " 'हु' " " " "
दिवादिगण—जिनमें धातुओं के रूप दिव् धातु की तरह होते हैं।
स्वादिगण— " " " 'सु' " " " "
...दादिगण— " " " 'तुद्' " " " "
...धादिगण— " " " 'रुध्' " " " "
...ादिगण— " " " 'तन्' " " " "
...ादिगण— " " " 'क्री' " " " "
... " " " 'चुर्' " " " "

त्वा तुम—पक्तुम क्तवत—पक्तवत अनीय—पचनीय शत-
तृ (पुं.), शानच्—पचमान।

## नम् ( झुकना )

**लट्**

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | नमति | नमतः | नमन्ति |
| म० ,, | नमसि | नमथः | नमथ |
| उ० | नमामि | नमावः | नमामः |

**लृट्**

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | नंस्यति | नंस्यतः | नंस्यन्ति |
| म० | नंस्यसि | नंस्यथः | नंस्यथ |
| उ० ,, | नंस्यामि | नंस्यावः | नंस्यामः |

**लोट्**

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | नमतु नमतात् | नमताम् | नमन्तु |
| म० ,, | नम नमतात् | नमतम् | नमत |
| उ० ,, | नमानि | नमाव | नमाम |

**लङ्**

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | अनमत् | अनमताम् | अनमन् |
| म० ,, | अनमः | अनमतम् | अनमत |
| उ० ,, | अनमम् | अनमाव | अनमाम |

**विधिलिङ्**

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | नमेत् | नमेताम् | नमेयुः |
| म० , | नमेः | नमेतम् | नमेत |
| उ० | नमेयम् | नमेव | नमेम |

भाववाच्य—लट—नम्यते लृट—नंस्यते लोट—नम्यताम्
लङ्—अनम्यत।

प्रेरणार्थक रूप—गमयति।

कृदन्त—क्त—गतः (पुं॰), क्तवतु—गतवान् (पुं॰), क्त्वा—गत्वा, तुम—गन्तुम्, तव्यत्—गन्तव्य, अनीय—गमनीय, शतृ—गच्छत् (पुं॰)।

उपसर्गों के योग में—

अधि + गम्—अधिगच्छति = प्राप्त करता है।

अव + गम्—अवगच्छति = जानता है।

आ + गम्—आगच्छति = आता है।

अनु + गम्—अनुगच्छति = पीछे चलता है।

निर् + गम्—निर्गच्छति = निकलता है।

## दृश् (पश्य्)—(देखना)

लट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र॰ पु॰ | पश्यति | पश्यतः | पश्यन्ति |
| म॰ " | पश्यसि | पश्यथः | पश्यथ |
| उ॰ " | पश्यामि | पश्यावः | पश्यामः |

लृट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र॰ पु॰ | द्रक्ष्यति | द्रक्ष्यतः | द्रक्ष्यन्ति |
| म॰ " | द्रक्ष्यसि | द्रक्ष्यथः | द्रक्ष्यथ |
| उ॰ " | द्रक्ष्यामि | द्रक्ष्यावः | द्रक्ष्यामः |

लोट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र॰ पु॰ | पश्यतु पश्यतात् | पश्यताम् | पश्यन्तु |
| म॰ | पश्य पश्यतात् | पश्यतम् | पश्यत |
| उ॰ | पश्यानि | पश्याव | पश्याम |

लङ्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र॰ पु॰ | अपश्यत् | अपश्यताम् | अपश्यन् |

| | | | |
|---|---|---|---|
| म० पु० | अपश्यः | अपश्यतम् | अपश्यत |
| उ० ,, | अपश्यम् | अपश्याव | अपश्याम |

विधिलिङ्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | पश्येत् | पश्येताम् | पश्येयुः |
| म० ,, | पश्येः | पश्येतम् | पश्येत |
| उ० ,, | पश्येयम् | पश्येव | पश्येम |

कर्मवाच्य—लट् दृश्यते लृट्-द्रक्ष्यते लोट्-दृश्यताम् लङ्—अदृश्यत।

प्रेरणार्थक रूप—दर्शयति।

कृदन्त—क्त—दृष्टः (पुं०), क्तवतु—दृष्टवान् (पुं०) क्त्वा—दृष्ट्वा तुमुन—द्रष्टुम्, तव्यत—द्रष्टव्य, अनीय—दर्शनीय शतृ—पश्यन् (पुं०)।

## सद् (सीद्)—(बैठना, दुःखी होना)

लट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | सीदति | सीदतः | सीदन्ति |
| म० ,, | सीदसि | सीदथः | सीदथ |
| उ० ,, | सीदामि | सीदावः | सीदामः |

लृट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | सत्स्यति | सत्स्यतः | सत्स्यन्ति |
| म० ,, | सत्स्यसि | सत्स्यथः | सत्स्यथ |
| उ० ,, | सत्स्यामि | सत्स्यावः | सत्स्यामः |

लोट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | सीदतु सीदतात् | सीदताम् | सीदन्तु |
| म० ,, | सीद सीदतात् | सीदतम् | सीदत |
| उ० ,, | सीदानि | सीदाव | सीदाम |

लङ्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | असीदत् | असीदताम् | असीदन् |
| म० " | असीदः | असीदतम् | असीदत |
| उ० " | असीदम् | असीदाव | असीदाम |

विधिलिङ्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | सीदेत् | सीदेताम् | सीदेयुः |
| म० " | सीदेः | सीदेतम् | सीदेत |
| उ० " | सीदेयम् | सीदेव | सीदेम |

भाववाच्य—( लट् )—सीद्यते लृट्—सत्स्यते लोट्—सीद्यताम् लङ्—असीद्यत।

प्रेरणार्थक रूप—सादयति।

कृदन्त—क्त—सन्न (पुं०) क्तवतु—सन्नवान् (पुं०), क्त्वा—सत्त्वा तुम्—सत्तुम् तव्यत्—सत्तव्य, शत्—सीदत् (पुं०)।

उपसर्गों के योग से—

नि+सद्—निषीदति = बैठता है

प्र+सद्—प्रसीदति = प्रसन्न होता है

वि+सद्—विषीदति = दुःखी होता है।

स्था ( तिष्ठ् )—( ठहरना)

लट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | तिष्ठति | तिष्ठतः | तिष्ठन्ति |
| म० " | तिष्ठसि | तिष्ठथः | तिष्ठथ |
| उ० " | तिष्ठामि | तिष्ठाव | तिष्ठाम |

लृट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु | स्थास्यति | स्थास्यतः | स्थास्यन्ति |
| म० " | स्थास्यसि | स्थास्यथः | स्थास्यथ |
| उ० " | स्थास्यामि | स्थास्याव | स्थास्याम |

लृट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | स्मरिष्यति | स्मरिष्यतः | स्मरिष्यन्ति |
| म० ,, | स्मरिष्यसि | स्मरिष्यथः | स्मरिष्यथ |
| उ० ,, | स्मरिष्यामि | स्मरिष्यावः | स्मरिष्यामः |

लोट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | स्मरतु स्मरतात् | स्मरताम् | स्मरन्तु |
| म० ,, | स्मर, स्मरतात् | स्मरतम् | स्मरत |
| उ० ,, | स्मराणि | स्मराव | स्मराम |

लङ्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | अस्मरत् | अस्मरताम् | अस्मरन् |
| म० ,, | अस्मरः | अस्मरतम् | अस्मरत |
| उ० ,, | अस्मरम् | अस्मराव | अस्मराम |

विधिलिङ्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | स्मरेत् | स्मरेताम् | स्मरेयुः |
| म० ,, | स्मरेः | स्मरेतम् | स्मरेत |
| उ० ,, | स्मरेयम् | स्मरेव | स्मरेम |

कर्मवाच्य—लट्—स्मर्यते लृट् स्मरिष्यते, लोट्—स्मर्यताम् लङ्—अस्मर्यत ।

प्रेरणार्थक—स्मारयति ।

कृदन्त—क्त—स्मृत, ( पु० ) क्तवतु—स्मृतवान् ( पु० ) क्त्वा—स्मृत्वा तुमुन—स्मर्तुम् तव्यत—स्मर्तव्य अनीय—स्मरणीय शतृ—स्मरत् ( पु० ) ।

उपसर्ग के योग से—

वि + स्मर—विस्मरति = भूलना है ।

पा ( पिब् ) (पीना)

लट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | पिबति | पिबतः | पिबन्ति |

| | | | |
|---|---|---|---|
| म० पु० | जयसि | जयथः | जयथ |
| उ० ” | जयामि | जयावः | जयामः |

लृट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | जेष्यति | जेष्यतः | जेष्यन्ति |
| म० ” | जेष्यसि | जेष्यथः | जेष्यथ |
| उ० ” | जेष्यामि | जेष्यावः | जेष्यामः |

लोट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | जयतु, जयतात् | जयताम् | जयन्तु |
| म० ” | जय, जयतात् | जयतम् | जयत |
| उ० ” | जयानि | जयाव | जयाम |

लङ्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | अजयत् | अजयताम् | अजयन् |
| म० ” | अजयः | अजयतम् | अजयत |
| उ० | अजयम् | अजयाव | अजयाम |

विधिलिङ्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | जयेत् | जयेताम् | जयेयुः |
| म० ” | जयेः | जयेतम् | जयेत |
| उ० ” | जयेयम् | जयेव | जयेम |

कर्मवाच्य—लट्—जीयते, लृट्—जेष्यते, लोट्—जीयताम् लङ्—अजीयत।

प्रेरणार्थक रूप—जापयति।

कृदन्त—क्त—जितः ( पुं० ) क्तवतु—जितवान् ( पुं० ) क्त्वा—जित्वा, तुमुन्—जेतुम्, तव्यत्—जेतव्य शतृ—जयत् ( पुं० )।

उपसर्गों के योग में

वि + जय—विजयते = जीतना है।

परा + जय—पराजयते = हारना या हराना है।

प्रेरणार्थक रूप—सेवयति सेवयते

कृदन्त—क्त—सेवितः (पुं०); क्तवतु—सेवितवान् (पुं० क्त्वा—सेवित्वा, तुमुन्—सेवितुम्, तव्यत्—सेवितव्यः (पुं०), अनीय सेवनीयः (पुं०), शानच्—सेवमानः (पुं०)।

## लभ् ( पाना )

लट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | लभते | लभेते | लभन्ते |
| म० " | लभसे | लभेथे | लभध्वे |
| उ० " | लभे | लभावहे | लभामहे |

लृट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | लप्स्यते | लप्स्येते | लप्स्यन्ते |
| म० " | लप्स्यसे | लप्स्येथे | लप्स्यध्वे |
| उ० " | लप्स्ये | लप्स्यावहे | लप्स्यामहे |

लोट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | लभताम् | लभेताम् | लभन्ताम् |
| म० " | लभस्व | लभेथाम् | लभध्वम् |
| उ० " | लभै | लभावहै | लभामहै |

लङ्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | अलभत | अलभेताम् | अलभन्त |
| म० " | अलभथाः | अलभेथाम् | अलभध्वम् |
| उ० " | अलभे | अलभावहि | अलभामहि |

विधिलिङ्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | लभेत | लभेयाताम् | लभेरन् |
| म० " | लभेथाः | लभेयाथाम् | लभेध्वम् |
| उ० " | लभेय | लभेवहि | लभेमहि |

कर्मवाच्य—लट्—लभ्यते. लृट्—लप्स्यते. लोट्—लभ्यताम्, लङ्—अलभ्यत।

प्रेरणार्थक रूप—लम्भयति, लम्भयते।

कृदन्त—क्त—लब्धः (पुं०); क्तवतु—लब्धवान् (पुं०), क्त्वा—लब्ध्वा, तुम्—लब्धुम्, तव्यत्—लब्धव्यः (पुं०), अनीय लभनीयः (पुं०), शानच्—लभमानः (पुं०)।

## वृत् (होना)

लट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | वर्तते | वर्तेते | वर्तन्ते |
| म० ,, | वर्तसे | वर्तेथे | वर्तध्वे |
| उ० ,, | वर्ते | वर्तावहे | वर्तामहे |

लृट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | वर्तिष्यते | वर्तिष्येते | वर्तिष्यन्ते |
| म० ,, | वर्तिष्यसे | वर्तिष्येथे | वर्तिष्यध्वे |
| उ० ,, | वर्तिष्ये | वर्तिष्यावहे | वर्तिष्यामहे। |

लोट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | वर्तताम् | वर्तेताम् | वर्तन्ताम् |
| म० ,, | वर्तस्व | वर्तेथाम् | वर्तध्वम् |
| उ० ,, | वर्तै | वर्तावहै | वर्तामहै |

लङ्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | अवर्तत | अवर्तेताम् | अवर्तन्त |
| म० | अवर्तथाः | अवर्तेथाम् | अवर्तध्वम् |
| उ० | अवर्ते | अवर्तावहि | अवर्तामहि |

विधिलिङ्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | वर्तेत | वर्तेयाताम् | वर्तेरन् |
| [illegible] | | | |

| | | | |
|---|---|---|---|
| म० पु० | वर्तेथाः | वर्तेयाथाम् | वर्तेध्वम् |
| उ० ,, | वर्तेय | वर्तेवहि | वर्तेमहि |

भाववाच्य—लट्—वृत्यते, लृट्—वर्तिष्यते, लोट्—वृत्यताम् लङ्—अवृत्यत।

प्रेरणार्थक रूप—वर्तयति, वर्तयते।

कृदन्त—क्त—वृत्तम् ( नपुं० ), क्तवतु—वृत्तवान् ( पुं० ), क्त्वा-वृत्त्वा-वर्तित्वा, तुमुन्—वर्तितुम्, तव्यत्—वर्तितव्यम् ( नपुं० ), अनीयर्-वर्तनीयम् ( नपुं० ), शानच्—वर्तमानः (पुं०)।

## वृध् ( बढ़ना )

लट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | वर्धते | वर्धेते | वर्धन्ते |
| म० ,, | वर्धसे | वर्धेथे | वर्धध्वे |
| उ० ,, | वर्धे | वर्धावहे | वर्धामहे |

लृट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | वर्धिष्यते | वर्धिष्येते | वर्धिष्यन्ते |
| म० ,, | वर्धिष्यसे | वर्धिष्येथे | वर्धिष्यध्वे |
| उ० ,, | वर्धिष्ये | वर्धिष्यावहे | वर्धिष्यामहे |

लोट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | वर्धताम् | वर्धेताम् | वर्धन्ताम् |
| म० ,, | वर्धस्व | वर्धेथाम् | वर्धध्वम् |
| उ० ,, | वर्धै | वर्धावहै | वर्धामहै |

लङ्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | अवर्धत | अवर्धेताम् | अवर्धन्त |
| म० ,, | अवर्धथाः | अवर्धेथाम् | अवर्धध्वम् |
| उ० ,, | अवर्धे | अवर्धावहि | अवर्धामहि |

| | | | |
|---|---|---|---|
| म० पु० | अमोदथाः | अमोदेथाम् | अमोदध्वम् |
| उ० ,, | अमोदे | अमोदावहि | अमोदामहि |

विधिलिङ्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | मोदेत | मोदेयाताम् | मोदेरन् |
| म० ,, | मोदेथाः | मोदेयाथाम् | मोदेध्वम् |
| उ० ,, | मोदेय | मोदेवहि | मोदेमहि |

भाववाच्य—लट्—मुद्यते, लृट्—मोदिष्यते, लोट्—मुद्यताम् लङ्—अमुद्यत।

प्रेरणार्थक रूप—मोदयति, मोदयते।

कृदन्त—क्त—मोदितः-मुदितः (पुं०), क्तवतु—मोदितवान्-मुदितवान् (पुं०), क्त्वा—मोदित्वा-मुदित्वा, तुम्—मोदितुम्, तव्यत्-मोदितव्यः (पुं०), अनीय—मोदनीयः (पुं०), शानच्-मोदमानः (पुं०)।

उपसर्ग के योग में

अनु + मुद्—अनुमोदते = समर्थन करता है।

## सह् ( सहन करना )

लट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | सहते | सहेते | सहन्ते |
| म० ,, | सहसे | सहेथे | सहध्वे |
| उ० ,, | सहे | सहावहे | सहामहे |

लृट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | सहिष्यते | सहिष्येते | सहिष्यन्ते |
| म० ,, | सहिष्यसे | सहिष्येथे | सहिष्यध्वे |
| उ० ,, | सहिष्ये | सहिष्यावहे | सहिष्यामहे |

लोट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | सहताम् | सहेताम् | सहन्ताम् |

| | | | |
|---|---|---|---|
| म० पु० | याचसे | याचेथे | याचध्वे |
| उ० ,, | याचे | याचावहे | याचामहे |

लृट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | याचिष्यते | याचिष्येते | याचिष्यन्ते |
| म० ,, | याचिष्यसे | याचिष्येथे | याचिष्यध्वे |
| उ० ,, | याचिष्ये | याचिष्यावहे | याचिष्यामहे |

लोट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | याचताम् | याचेताम् | याचन्ताम् |
| म० ,, | याचस्व | याचेथाम् | याचध्वम् |
| उ० ,, | याचै | याचावहै | याचामहै |

लङ्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | अयाचत | अयाचेताम् | अयाचन्त |
| म० ,, | अयाचथाः | अयाचेथाम् | अयाचध्वम् |
| उ० ,, | अयाचे | अयाचावहि | अयाचामहि |

विधिलिङ्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | याचेत | याचेयाताम् | याचेरन् |
| म० ,, | याचेथाः | याचेयाथाम् | याचेध्वम् |
| उ० ,, | याचेय | याचेवहि | याचेमहि |

कर्मवाच्य—लट्—याच्यते लृट्—याचिष्यते, लोट्—याच्यताम् लङ्—अयाच्यत।

प्रेरणार्थक लट्—याचयति, याचयते।

कृदन्त—क्त—याचितः (पुं०) क्तवतु—याचितवान् (पुं०) क्त्वा—याचित्वा तुमुन्—याचितुम् तव्यत् याचितव्य (पुं०) अनीयर् याचनीय (पुं०) शतृ—याचत् (पुं०) शानच्—याचमान (पुं०

| | | | |
|---|---|---|---|
| म० पु० | नयसे | नयेथे | नयध्वे |
| उ० ,, | नये | नयावहे | नयामहे |

लृट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | नेष्यते | नेष्येते | नेष्यन्ते |
| म० ,, | नेष्यसे | नेष्येथे | नेष्यध्वे |
| उ० ,, | नेष्ये | नेष्यावहे | नेष्यामहे |

लोट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | नयताम् | नयेताम् | नयन्ताम् |
| म० ,, | नयस्व | नयेथाम् | नयध्वम् |
| उ० ,, | नयै | नयावहै | नयामहै |

लङ्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | अनयत | अनयेताम् | अनयन्त |
| म० ,, | अनयथाः | अनयेथाम् | अनयध्वम् |
| उ० ,, | अनये | अनयावहि | अनयामहि |

विधिलिङ्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | नयेत | नयेयाताम् | नयेरन् |
| म० ,, | नयेथाः | नयेयाथाम् | नयेध्वम् |
| उ० ,, | नयेय | नयेवहि | नयेमहि |

कर्मवाच्य लट्—नीयते लृट्—नेष्यते लोट्—नीयताम्, लङ् अनीयत।

प्रेरणार्थक रूप—नाययति नाययते।

उपसर्गों के योग में—

परि + नी—परिणयति = विवाह करता है।

प्र + नी—प्रणयति = बनाता है

अप + नी—अपनयति = दूर करता है

आङ् + नी—आनयति = लाता है

आत्मनेपद

लट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | हरते | हरेते | हरन्ते |
| म० ,, | हरसे | हरेथे | हरध्वे |
| उ० ,, | हरे | हरावहे | हरामहे |

लृट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | हरिष्यते | हरिष्येते | हरिष्यन्ते |
| म० ,, | हरिष्यसे | हरिष्येथे | हरिष्यध्वे |
| उ० ,, | हरिष्ये | हरिष्यावहे | हरिष्यामहे |

लोट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | हरताम् | हरेताम् | हरन्ताम् |
| म० ,, | हरस्व | हरेथाम् | हरध्वम् |
| उ० ,, | हरै | हरावहै | हरामहै |

लङ्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | अहरत | अहरेताम् | अहरन्त |
| म० ,, | अहरथाः | अहरेथाम् | अहरध्वम् |
| उ० ,, | अहरे | अहरावहि | अहरामहि |

विधिलिङ्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | हरेत | हरेयाताम् | हरेरन् |
| म० ,, | हरेथाः | हरेयाथाम् | हरेध्वम् |
| उ० ,, | हरेय | हरेवहि | हरेमहि |

कर्मवाच्य—लट्—ह्रियते, लृट्—हरिष्यते, लोट्—ह्रियताम्, लङ्—अह्रियत।

प्रेरणार्थक रूप—हारयति, हारयते।

उपसर्गों के योग में—

प्र + हृ—प्रहरति = प्रहार करता है।

आ + हृ—आहरति = लाता है, खाता है।

सं+हृ—संहरति = संहार करता है।
वि+हृ—विहरति = खेलता है।
परि+हृ—परिहरति = दूर करता है।
कृदन्त—क्त—हृतम् (नपुं०), क्तवतु—हृतवान् (पुं०), क्त्वा—हृत्वा, तुमुन्—हर्तुम्, तव्यत्—हर्तव्यम् (नपुं०), अनीय—हरणीयम् (नपुं०), शतृ—हरन् (पुं०), शानच्—हरमाणः (पुं०)।

## भ्वादिगण धातुकोश

### परस्मैपद

पत्—गिरना। पतति, पतिष्यति, पततु, अपतत्, पतेत्।
वस्—रहना। वसति, वत्स्यति, वसतु, अवसत्, वसेत्।
यच्छ्—देना। यच्छति, दास्यति, यच्छतु, अयच्छत्, यच्छेत्।
चल्—हिलना, चलना। चलति, चलिष्यति, चलतु, अचलत्, चलेत्।
अर्च्—पूजा करना। अर्चति, अर्चिष्यति, अर्चतु, आर्चत्, अर्चेत्।
धाव्—दौड़ना। धावति, धाविष्यति, धावतु, अधावत्, धावेत्।
दह्—जलाना। दहति, धक्ष्यति, दहतु, अदहत्, दहेत्।
खाद्—खाना। खादति, खादिष्यति, खादतु, अखादत्, खादेत्।
जप्—जपना। जपति, जपिष्यति, जपतु, अजपत्, जपेत्।
अर्ज्—कमाना। अर्जति, अर्जिष्यति, अर्जतु, आर्जत्, अर्जेत्।
घ्रा (जिघ्र)—सूंघना। जिघ्रति, घ्रास्यति, जिघ्रतु, अजिघ्रत्, जिघ्रेत्।
निन्द्—निन्दा करना। निन्दति, निन्दिष्यति, निन्दतु, अनिन्दत्, निन्देत्।

वाञ्छ्—चाहना। वाञ्छति, वाञ्छिष्यति, वाञ्छतु, अवाञ्छत्, वाञ्छेत्।

क्रीड्—खेलना। क्रीडति क्रीडिष्यति क्रीडतु अक्रीडत् क्रीडेत्।
भ्रम्—घूमना भ्रमति भ्रमिष्यति भ्रमतु अभ्रमत्, भ्रमेत्

## अदादिगण

### (क) परस्मैपद

### अद् ( खाना )

लट्

| | एक० | द्वि० | बहु० |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | अत्ति | अत्तः | अदन्ति |
| म० ,, | अत्सि | अत्थः | अत्थ |
| उ० ,, | अद्मि | अद्वः | अद्मः |

लृट्

| | एक० | द्वि० | बहु० |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | अत्स्यति | अत्स्यतः | अत्स्यन्ति |
| म० ,, | अत्स्यसि | अत्स्यथः | अत्स्यथ |
| उ० ,, | अत्स्यामि | अत्स्यावः | अत्स्यामः |

लोट्

| | एक० | द्वि० | बहु० |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | अत्तु, अत्तात् | अत्ताम् | अदन्तु |
| म० ,, | अद्धि, अत्तात् | अत्तम् | अत्त |
| उ० ,, | अदानि | अदाव | अदाम |

लङ्

| | एक० | द्वि० | बहु० |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | आदत् | आत्ताम् | आदन् |
| म० ,, | आदः | आत्तम् | आत्त |
| उ० ,, | आदम् | आद्व | आद्म |

विधिलिङ्

| | एक० | द्वि० | बहु० |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | अद्यात् | अद्याताम् | अद्युः |
| म० ,, | अद्याः | अद्यातम् | अद्यात |
| उ० ,, | अद्याम् | अद्याव | अद्याम |

कर्मवाच्य—लट् - अद्यते, लृट्—अत्स्यते, लोट्—अद्यताम्, लङ्—आद्यत।

प्रेरणार्थक रूप—आदयति, आदयते।

कृदन्त—क्त—जग्धम् (नपुँ०), क्तवतु—जग्धवान्, अन्नवान् (पुँ०), क्त्वा—जग्ध्वा, तुमुन—अत्तुम्, तव्यत्—अत्तव्यम् (नपुँ०), अनीय—अदनीयम् (नपुँ०), ल्युट्—अदन (पुँ०)।

## अस् (होना)

लट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | अस्ति | स्तः | सन्ति |
| म० ,, | असि | स्थः | स्थ |
| उ० ,, | अस्मि | स्वः | स्मः |

लृट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | भविष्यति | भविष्यतः | भविष्यन्ति |
| म० ,, | भविष्यसि | भविष्यथः | भविष्यथ |
| उ० ,, | भविष्यामि | भविष्यावः | भविष्यामः |

लोट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | अस्तु, स्तात् | स्ताम् | सन्तु |
| म० ,, | एधि, स्तात् | स्तम् | स्त |
| उ० ,, | असानि | असाव | असाम |

लङ्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | आसीत् | आस्ताम् | आसन् |
| म० ,, | आसीः | आस्तम् | आस्त |
| उ० ,, | आसम् | आस्व | आस्म |

विधिलिङ्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | स्यात् | स्याताम् | स्युः |

| | | | |
|---|---|---|---|
| म० पु० | स्याः | स्यातम् | स्यात |
| उ० ,, | स्याम् | स्याव | स्याम |

अस् धातु के कर्मवाच्य में, प्रेरणार्थक और कृदन्त रूप वे होंगे जो भू धातु के होते हैं, क्योंकि इन स्थानों में 'अस्' को 'भू' जाता है। कृदन्त—शतृ—सत (पुं०)

### स्तु* (स्तुति करना)

लट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | स्तौति† | स्तुतः | स्तुवन्ति |
| म० ,, | स्तौषि | स्तुथः | स्तुथ |
| उ० ,, | स्तौमि | स्तुवः | स्तुमः |

लृट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | स्तोष्यति | स्तोष्यतः | स्तोष्यन्ति |
| म० ,, | स्तोष्यसि | स्तोष्यथः | स्तोष्यथ |
| उ० ,, | स्तोष्यामि | स्तोष्यावः | स्तोष्यामः |

लोट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | स्तौतु, स्तुतात् | स्तुताम् | स्तुवन्तु |
| म० ,, | स्तुहि, स्तुतात् | स्तुतम् | स्तुत |
| उ० ,, | स्तवानि | स्तवाव | स्तवाम |

लङ्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | अस्तौत् | अस्तुताम् | अस्तुवन् |

*स्तु और ब्रू उभयपदी धातु हैं, पर मैट्रिकुलेशन परीक्षा के लिए इन परस्मैपद के रूप जानना ही आवश्यक है अतः आत्मनेपद के रूप न दिये गये।

†'स्तु' धातु के 'स्तवीति' आदि दूसरे रूप भी होते हैं, पर विद्यार्थी के लिए कठिन होने के कारण नहीं दिये गये।

| | | | |
|---|---|---|---|
| म० पु० | अस्तौः | अस्तुतम् | अस्तुत |
| उ० .. | अस्तवम् | अस्तुव | अस्तुम |

विधिलिङ्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | स्तुयात् | स्तुयाताम् | स्तुयुः |
| म० .. | स्तुयाः | स्तुयातम् | स्तुयात |
| उ० .. | स्तुयाम् | स्तुयाव | स्तुयाम |

कर्मवाच्य—लट्—स्तूयते  लृट्—स्तोष्यते.  लोट्—स्तूयताम्,
लङ्—अस्तूयत ।
प्रेरणार्थक रूप—स्तावयति, स्तावयते
कृदन्त—क्त—स्तुतः ( पुं० ). क्तवतु—स्तुतवान ( पुं० ). क्त्वा—स्तुत्वा, तुमुन्—स्तोतुम्. तव्यत्—स्तोतव्यः (पुं० ) अनीय—स्तवनीयः (पुं०), शतृ—स्तुवन् (पुं०)।

## ब्रू ( बोलना )

लट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | ब्रवीति, आह | ब्रूतः, आहतुः | ब्रुवन्ति, आहुः |
| म० .. | ब्रवीषि आत्थ | ब्रूथः, आहथुः | ब्रूथ |
| उ० .. | ब्रवीमि | ब्रूवः | ब्रूमः |

लृट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | वक्ष्यति | वक्ष्यतः | वक्ष्यन्ति |
| म० .. | वक्ष्यसि | वक्ष्यथः | वक्ष्यथ |
| उ० | वक्ष्यामि | वक्ष्यावः | वक्ष्यामः |

लोट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | ब्रवीतु, ब्रूतात् | ब्रूताम् | ब्रुवन्तु |
| म० | ब्रूहि, ब्रूतात् | ब्रूतम् | ब्रूत |
| उ० | ब्रवाणि | ब्रवाव | ब्रवाम |

लङ्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | अब्रवीत् | अब्रूताम् | अब्रुवन् |
| म० ,, | अब्रवीः | अब्रूतम् | अब्रूत |
| उ० ,, | अब्रवम् | अब्रूव | अब्रूम |

विधिलिङ्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | ब्रूयात् | ब्रूयाताम् | ब्रूयुः |
| म० ,, | ब्रूयाः | ब्रूयातम् | ब्रूयात |
| उ० ,, | ब्रूयाम् | ब्रूयाव | ब्रूयाम |

कर्मवाच्य—लट्—उच्यते, लृट्—वक्ष्यते, लोट्—उच्य
लङ्—औच्यत।

प्रेरणार्थक रूप—वाचयति, वाचयते।

कृदन्त—क्त—उक्तः (पुं०), क्तवतु—उक्तवान् (पुं०), क्त्
उक्त्वा, तुमुन्—वक्तुम्, तव्यत्—वक्तव्य, अनीय—वचनीय, श
ब्रुवन् शानच्—ब्रुवाणः (पुं०) ण्यत्—वाच्यः, वाक्यम्।

## रुद् ( रोना )

लट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | रोदिति | रुदितः | रुदन्ति |
| म० ,, | रोदिषि | रुदिथः | रुदिथ |
| उ० ,, | रोदिमि | रुदिवः | रुदिमः |

लृट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | रोदिष्यति | रोदिष्यतः | रोदिष्यन्ति |
| म० | रोदिष्यसि | रोदिष्यथः | रोदिष्यथ |
| उ० | [illegible] | [illegible] | रोदिष्याम |

[illegible]

[illegible]

| | | | |
|---|---|---|---|
| म० पु० | जागरिष्यसि | जागरिष्यथः | जागरिष्यथ |
| उ० .. | जागरिष्यामि | जागरिष्यावः | जागरिष्यामः |

लोट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | जागर्तु, जागृतात् | जागृताम् | जाग्रतु |
| म० .. | जागृहि, जागृतात् | जागृतम् | जागृत |
| उ० .. | जागराणि | जागराव | जागराम |

लङ्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | अजागः | अजागृताम् | अजागरुः |
| म० .. | अजागः | अजागृतम् | अजागृत |
| उ० .. | अजागरम् | अजागृव | अजागृम |

विधिलिङ्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | जागृयात् | जागृयाताम् | जागृयुः |
| म० .. | जागृयाः | जागृयातम् | जागृयात |
| उ० .. | जागृयाम् | जागृयाव | जागृयाम |

भाववाच्य—लट्—जागर्यते, लृट्—जागरिष्यते, लोट्—जागर्यताम्, लङ्—अजागर्यत ।

प्रेरणार्थक रूप—जागरयति, जागरयते ।

कृदन्त—क्त—जागरितः (पुं०), क्तवतु—जागरितवान् (पुं०), क्त्वा—जागरित्वा, तुमुन्—जागरितुम्, तव्यत्—जागरितव्यः (पुं०) अनीयर्—जागरणीयः (पुं०) शतृ—जाग्रत् (पुं०, नपुं०) ।

स्वप् । सोना ।

लट्

[illegible]

लृट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | स्वप्स्यति | स्वप्स्यतः | स्वप्स्यन्ति |
| म० ,, | स्वप्स्यसि | स्वप्स्यथः | स्वप्स्यथ |
| उ० ,, | स्वप्स्यामि | स्वप्स्यावः | स्वप्स्यामः |

लोट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | स्वपितु, स्वपितात् | स्वपिताम् | स्वपन्तु |
| म० ,, | स्वपिहि, स्वपितात् | स्वपितम् | स्वपित |
| उ० ,, | स्वपानि | स्वपाव | स्वपाम |

लङ्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | अस्वपत्, अस्वपीत् | अस्वपिताम् | अस्वपन् |
| म० ,, | अस्वपः, अस्वपीः | अस्वपितम् | अस्वपित |
| उ० ,, | अस्वपम् | अस्वपिव | अस्वपिम |

विधिलिङ्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | स्वप्यात् | स्वप्याताम् | स्वप्युः |
| म० ,, | स्वप्याः | स्वप्यातम् | स्वप्यात |
| उ० ,, | स्वप्याम् | स्वप्याव | स्वप्याम |

भाववाच्य—लट्—सुप्यते, लृट्—स्वप्स्यते, लोट्—सुप्यताम् लङ्—असुप्यत ।

प्रेरणार्थक रूप—स्वापयति, स्वापयते ।

कृदन्त—क्त—सुप्तः (पुं०), क्तवतु—सुप्तवान् (पुं०), क्त्वा—सुप्त्वा तुमुन्—स्वप्तुम् तव्यत्—स्वप्तव्यः (पुं०), अनीय—स्वपनीयः (पुं० ल्युट्—स्वपन (पुं०)

हन् ( मारना )

लट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | हन्ति | हतः | घ्नन्ति |

## विद् ( जानना )

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | वेत्ति | वित्तः | विदन्ति |
| म० ,, | वेत्सि | वित्थः | वित्थ |
| उ० ,, | वेद्मि | विद्वः | विद्मः |

अथवा

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | वेद | विदतुः | विदुः |
| म० ,, | वेत्थ | विदथुः | विद |
| उ० ,, | वेद | विद्व | विद्म |

लृट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | वेदिष्यति | वेदिष्यतः | वेदिष्यन्ति |
| म० ,, | वेदिष्यसि | वेदिष्यथः | वेदिष्यथ |
| उ० ,, | वेदिष्यामि | वेदिष्यावः | वेदिष्यामः |

लोट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | वेत्तु, वित्तात् | वित्ताम् | विदन्तु |
| म० ,, | विद्धि, वित्तात् | वित्तम् | वित्त |
| उ० ,, | वेदानि | वेदाव | वेदाम |

या

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | विदाङ्करोतु विदाङ्कुरुतात् | विदाङ्कुरुताम् | विदाङ्कुर्वन्तु |
| म० | विदाङ्कुरु विदाङ्कुरुतात् | विदाङ्कुरुतम् | विदाङ्कुरुत |
| उ० | विदाङ्करवाणि | विदाङ्करवाव | [illegible] |

लङ्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | अवेत्-द् | अवित्ताम् | अविदुः |
| म० | अवेत् द् अवेः | अवित्तम् | अवित्त |
| उ० | अवेदम् | अविद्व | अविद्म |

विधिलिङ्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | विद्यात् | विद्याताम् | विद्युः |

| | | | |
|---|---|---|---|
| म० पु० | विद्याः | विद्यातम् | विद्यात |
| उ० .. | विद्याम् | विद्याव | विद्याम |

कर्मवाच्य—लट्—विद्यते, लृट्—वेदिष्यते, लोट्—विद्यताम्
ङ्—अविद्यत।

प्रेरणार्थक रूप—वेदयति, वेदयते।

कृदन्त—क्त—विदितः (पुं०), क्तवतु—विदितवान् (पुं०), क्त्वा—विदित्वा, तुमुन्—वेदितुम्, तव्यत्—वेदितव्यः (पुं०), अनीय—दनीयः (पुं०), शतृ—विदन् (पुं०)।

## शास् ( शासन करना )

लट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | शास्ति | शिष्टः | शासति |
| म० .. | शास्सि | शिष्ठः | शिष्ठ |
| उ० .. | शास्मि | शिष्वः | शिष्मः |

लृट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | शासिष्यति | शासिष्यतः | शासिष्यन्ति |
| म० .. | शासिष्यसि | शासिष्यथः | शासिष्यथ |
| उ० .. | शासिष्यामि | शासिष्यावः | शासिष्यामः |

लोट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | शास्तु शिष्टात् | शिष्टाम् | शासतु |
| म० | शाधि शिष्टात् | शिष्टम् | शिष्ट |
| उ० | शासानि | शासाव | शासाम |

लङ्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | अशात्-द् | अशिष्टाम् | अशासुः |
| म० | अशात्-द् अशाः | अशिष्टम् | अशिष्ट |
| उ० | अशासम् | अशिष्व | अशिष्म |

विधिलिङ्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | शिष्यात् | शिष्याताम् | शिष्युः |
| म० ,, | शिष्याः | शिष्यातम् | शिष्यात |
| उ० ,, | शिष्याम् | शिष्याव | शिष्याम |

कर्मवाच्य—लट्—शिष्यते, लृट्—शासिष्यते, लोट्—शिष्यता, लङ्—अशिष्यत।

प्रेरणार्थक रूप—शासयति।

कृदन्त—क्त—शिष्टः (पुं०), क्तवतु—शिष्टवान् (पुं०), क्त्वा—शासित्वा, तुमुन्—शासितुम्, तव्यत्—शासितव्यः (पुं०), अनीय—शासनीयः (पुं०), शतृ—शासत् (पुं०), क्यप्—शिष्यः।

## इ (जाना)

लट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | एति | इतः | यन्ति |
| म० ,, | एषि | इथः | इथ |
| उ० ,, | एमि | इवः | इमः |

लृट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | एष्यति | एष्यतः | एष्यन्ति |
| म० ,, | एष्यसि | एष्यथः | एष्यथ |
| उ० ,, | एष्यामि | एष्यावः | एष्यामः |

लोट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | एतु, इतात् | इताम् | यन्तु |
| म० ,, | इहि, इतात् | इतम् | इत |
| उ० ,, | अयानि | अयाव | अयाम |

लङ्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | ऐत् | ऐताम् | आयन् |

| | | | |
|---|---|---|---|
| म० पु० | ऐः | ऐतम् | ऐत |
| उ० ,, | आयम् | ऐव | ऐम |

विधिलिङ्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | इयात् | इयाताम् | इयुः |
| म० ,, | इयाः | इयातम् | इयात |
| उ० ,, | इयाम् | इयाव | इयाम |

कर्मवाच्य—लट्—ईयते लृट्—एष्यते, लोट्—ईयताम्
लङ—ऐयत।

प्रेरणार्थक रूप—गमयति, गमयते।

कृदन्त—क्त—इतः (पुं०) क्तवतु—इतवान् (पुं०), क्त्वा—इत्वा, तुमुन्—एतुम्, तव्यत्—एतव्यः (पुं०) अनीय—अयनीयः (पुं०), शतृ—यन् (पुं०)।

## (ख) आत्मनेपदी

### अस् (बैठना)

लट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | आस्ते | आसाते | आसते |
| म० ,, | आस्से | आसाथे | आध्वे |
| उ० ,, | आसे | आस्वहे | आस्महे |

लृट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | आसिष्यते | आसिष्येते | आसिष्यन्ते |
| म० ,, | आसिष्यसे | आसिष्येथे | आसिष्यध्वे |
| उ० ,, | आसिष्ये | आसिष्यावहे | आसिष्यामहे |

लोट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | आस्ताम् | आसाताम् | आसताम् |
| म० | आस्स्व (आस्व) | आसाथाम् | आध्वम् |
| उ० | आसै | आसावहै | आसामहै |

| | | | |
|---|---|---|---|
| म० पु० | अध्येष्यसे | अध्येष्येथे | अध्येष्यध्वे |
| उ० ,, | अध्येष्ये | अध्येष्यावहे | अध्येष्यामहे |

लोट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | अधीताम् | अधीयाताम् | अधीयताम् |
| म० ,, | अधीष्व | अधीयाथाम् | अधीध्वम् |
| उ० ,, | अध्ययै | अध्ययावहै | अध्ययामहै |

लङ्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | अध्यैत | अध्यैयाताम् | अध्यैयत |
| म० ,, | अध्यैथाः | अध्यैयाथाम् | अध्यैध्वम् |
| उ० ,, | अध्यैयि | अध्यैवहि | अध्यैमहि |

विधिलिङ्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | अधीयीत | अधीयीयाताम् | अधीयीरन् |
| म० ,, | अधीयीथाः | अधीयीयाथाम् | अधीयीध्वम् |
| उ० ,, | अधीयीय | अधीयीवहि | अधीयीमहि |

कर्मवाच्य—लट्—अधीयते, लृट्—अध्येष्यते, लोट्—अधीयताम् लङ्—अध्यैयत ।

प्रेरणार्थक रूप—अध्यापयति ।

कृदन्त—क्त—अधीतः (पुं०), क्तवतु—अधीतवान् (पुं० तुमुन्—अध्येतुम्, तव्यत्—अध्येतव्यः (पुं०), अनीय—अध्ययनी (पुं०), शानच्—अधीयानः (पुं०)।

## अभ्यास

अनुवाद करो—

१. मनुष्य जैसा अन्न खाता है, वैसा ही उसका मन होता है। पशुओं को मारते हैं और उनका मांस खाते हैं, उनका मन निर्दय तथा क्रू जाता है। मनुष्य कभी किसी जीव को न मारे। भगवान् निर्बल की रक्षा क

२. एक राजा था। उसके तीन मन्त्री थे। वे सदा उसकी स्तुति करते थे। राजा जो कहता था मन्त्री भी वही बोलते थे। वे कदापि अप्रिय सत्य का भाषण न करते थे। उस राजा का राज्य शीघ्र नष्ट हो गया।

३. जब बालक रोता है, माता उसे दूध देती है। वन में एक अबला एक आश्रम में बैठी थी और रो रही थी। एक महात्मा आये। उन्होंने पूछा—देवी, तू क्यों रोती है। जब संसार सोता है, संयमी पुरुष तब जागता है। वह जानता है कि जो सोता है वह खोता है। वह अपनी इन्द्रियों पर शासन करता है। शास्त्रों को पढ़ता है और जानता है कि वही मोक्ष का मार्ग है।

## जुहोत्यादिगण

### (क) परस्मैपदी

### हु ( हवन करना )

लट्

| | एक० | द्वि० | बहु० |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | जुहोति | जुहुतः | जुह्वति |
| म० .. | जुहोषि | जुहुथः | जुहुथ |
| उ० .. | जुहोमि | जुहुवः | जुहुम |

लृट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | होष्यति | होष्यतः | होष्य |
| म० .. | होष्यसि | होष्यथः | होष्य |
| उ० .. | होष्यामि | होष्यावः | होष्य |

लोट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | जुहोतु, जुहुतात् | जुहुताम् | जु |
| म० .. | जुहुधि, जुहुतात् | जुहुतम् | जु |
| उ० | जुहवानि | जुहवाव | जु |

लङ्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | अजुहोत् | अजुहुताम् | अजुहवुः |
| म० ,, | अजुहोः | अजुहुतम् | अजुहुत |
| उ० ,, | अजुहवम् | अजुहुव | अजुहुम |

विधिलिङ्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | जुहुयात् | जुहुयाताम् | जुहुयुः |
| म० ,, | जुहुयाः | जुहुयातम् | जुहुयात |
| उ० ,, | जुहुयाम् | जुहुयाव | जुहुयाम |

कर्मवाच्य—लट्—हूयते, लृट्—होष्यते, लोट्—हूयता
लङ्—अहूयत।

कृदन्त—क्त—हुतः (पुं०), क्तवतु—हुतवान् (पुं०)
क्त्वा—हुत्वा, तुमुन—होतुम्, तव्यत्—होतव्यः (पुं०), अनीय-
हवनीयः (पुं०), शतृ—जुह्वत् (पुं०)।

भी (डरना)

लट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | बिभेति | बिभितः, बिभीतः | बिभ्यति |
| म० ,, | बिभेषि | बिभिथः, बिभीथः | बिभिथ, बिभी |
| उ० ,, | बिभेमि | बिभिवः, बिभीवः | बिभिमः, बिभी |

लृट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | भेष्यति | भेष्यतः | भेष्यन्ति |
| म० ,, | भेष्यसि | भेष्यथः | भेष्यथ |
| उ० ,, | भेष्यामि | भेष्यावः | भेष्यामः |

लोट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | बिभेतु, बिभितात् / बिभीतात् | बिभिताम् / बिभीताम् | बिभ्यतु |

### (ख) उभयपदी

### दा ( देना )

#### परस्मैपद

| | | | |
|---|---|---|---|
| | **लट्** | | |
| प्र० पु० | ददाति | दत्तः | ददति |
| म० ,, | ददासि | दत्थः | दत्थ |
| उ० ,, | ददामि | दद्वः | दद्मः |
| | **लृट्** | | |
| प्र० पु० | दास्यति | दास्यतः | दास्यन्ति |
| म० ,, | दास्यसि | दास्यथः | दास्यथ |
| उ० ,, | दास्यामि | दास्यावः | दास्यामः |
| | **लोट्** | | |
| प्र० पु० | ददातु, दत्तात् | दत्ताम् | ददतु |
| म० ,, | देहि, दत्तात् | दत्तम् | दत्त |
| उ० ,, | ददानि | ददाव | ददाम |
| | **लङ्** | | |
| प्र० पु० | अददात् | अदत्ताम् | अददुः |
| म० ,, | अददाः | अदत्तम् | अदत्त |
| उ० ,, | अददाम् | अदद्व | अदद्म |
| | **विधिलिङ्** | | |
| प्र० पु० | दद्यात् | दद्याताम् | दद्युः |
| म० ,, | दद्याः | दद्यातम् | दद्यात |
| उ० ,, | दद्याम् | दद्याव | दद्याम |

#### आत्मनेपद

| | | | |
|---|---|---|---|
| | **लट्** | | |
| प्र० पु० | दत्ते | ददाते | ददते |

## भृ ( भरण करना )

### परस्मैपद

लट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | बिभर्ति | बिभृतः | बिभ्रति |
| म० ,, | बिभर्षि | बिभृथः | बिभृथ |
| उ० ,, | बिभर्मि | बिभृवः | बिभृमः |

लृट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | भरिष्यति | भरिष्यतः | भरिष्यन्ति |
| म० ,, | भरिष्यसि | भरिष्यथः | भरिष्यथ |
| उ० ,, | भरिष्यामि | भरिष्यावः | भरिष्यामः |

लोट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | बिभर्तु, बिभृतात् | बिभृताम् | बिभ्रतु |
| म० ,, | बिभृहि, बिभृतात् | बिभृतम् | बिभृत |
| उ० ,, | बिभराणि | बिभराव | बिभराम |

लङ्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | अबिभः | अबिभृताम् | अबिभरुः |
| म० ,, | अबिभः | अबिभृतम् | अबिभृत |
| उ० ,, | अबिभरम् | अबिभृव | अबिभृम |

विधिलिङ्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | बिभृयात् | बिभृयाताम् | बिभृयुः |
| म० ,, | बिभृयाः | बिभृयातम् | बिभृयात |
| उ० ,, | बिभृयाम् | बिभृयाव | बिभृयाम |

### आत्मनेपद

लट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | बिभृते | बिभ्राते | बिभ्रते |

कर्मवाच्य—लट्—दीव्यते, लृट्—देविष्यते, लोट्—दीव्यता
लङ्—अदीव्यत।

प्रेरणार्थक रूप—देवयति।

कृदन्त—क्त—द्यूनः (पुं०), द्यूनम् (नपुं०), क्तवतु—देवित
(पुं०), क्त्वा—देवित्वा, तुम्—देवितुम्, तव्यत्—देवितव्यः (पुं
अनीय—देवनीयः (पुं०) यत्—देव्यः (पुं०), शतृ—दीव्यत् (पुं०)।

## नृत् ( नाचना )

लट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | नृत्यति | नृत्यतः | नृत्यन्ति |
| म० ,, | नृत्यसि | नृत्यथः | नृत्यथ |
| उ० ,, | नृत्यामि | नृत्यावः | नृत्यामः |

लृट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | नर्तिष्यति | नर्तिष्यतः | नर्तिष्यन्ति |
| म० ,, | नर्तिष्यसि | नर्तिष्यथः | नर्तिष्यथ |
| उ० ,, | नर्तिष्यामि | नर्तिष्यावः | नर्तिष्यामः |

वा

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | नर्त्स्यति | नर्त्स्यतः | नर्त्स्यन्ति |
| म० ,, | नर्त्स्यसि | नर्त्स्यथः | नर्त्स्यथ |
| उ० ,, | नर्त्स्यामि | नर्त्स्यावः | नर्त्स्यामः |

लोट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | नृत्यतु, नृत्यतात् | नृत्यताम् | नृत्यन्तु |
| म० | नृत्य, नृत्यतात् | नृत्यतम् | नृत्यत |
| उ० | नृत्यानि | नृत्याव | नृत्याम |

लङ्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | अनृत्यत् | अनृत्यताम् | अनृत्यन् |

| | | | |
|---|---|---|---|
| म० पु० | अनृत्यः | अनृत्यतम् | अनृत्यत |
| उ० ,, | अनृत्यम् | अनृत्याव | अनृत्याम |

विधिलिङ्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | नृत्येत् | नृत्येताम् | नृत्येयुः |
| म० ,, | नृत्येः | नृत्येतम् | नृत्येत |
| उ० ,, | नृत्येयम् | नृत्येव | नृत्येम |

कर्मवाच्य—लट्—नृत्यते, लृट्—नर्तिष्यते. लोट्—नृत्यताम्, लङ्—अनृत्यत।

प्रेरणार्थक रूप—नर्तयति, नर्तयते।

कृदन्त—क्त—नृत्तः (पुं०), क्तवतु—नृत्तवान् (पुं०) क्त्वा—नर्तित्वा, तुम्—नर्तितुम्. तव्यत्—नर्तितव्यः (पुं०), अनीय—नर्तनीय (पुं०), ल्यप्—नृत्यम् (नपुं०) शतृ—नृत्यन् (पुं०)।

## व्यध् ( मारना )

लट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | विध्यति | विध्यतः | विध्यन्ति |
| म० ,, | विध्यसि | विध्यथः | विध्यथ |
| उ० ,, | विध्यामि | विध्यावः | विध्यामः |

लृट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | व्यत्स्यति | व्यत्स्यतः | व्यत्स्यन्ति |
| म० ,, | व्यत्स्यसि | व्यत्स्यथः | व्यत्स्यथ |
| उ० ,, | [illegible] | [illegible] | व्यत्स्यामः |

लङ्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | अविध्यत् | अविध्यताम् | अविध्यन् |
| म० ,, | अविध्यः | अविध्यतम् | अविध्यत |
| उ० ,, | अविध्यम् | अविध्याव | अविध्याम |

विधिलिङ्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | विध्येत् | विध्येताम् | विध्येयुः |
| म० ,, | विध्येः | विध्येतम् | विध्येत |
| उ० ,, | विध्येयम् | विध्येव | विध्येम |

कर्मवाच्य—लट्—विध्यते, लृट्—व्यत्स्यते, लोट्—विध्यताम्, लङ्—अविध्यत।

प्रेरणार्थक रूप—व्याधयति।

कृदन्त—क्त—विद्धः (पुं०), क्तवतु—विद्धवान् (पुं०), क्त्वा—विद्ध्वा, तुम्—व्यद्धुम्, तव्यत—व्यद्धव्यः (पुं०), अनीय—व्यधनीयः (पुं०), शतृ—विध्यत् (पुं०)।

नश् ( नष्ट होना )

लट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | नश्यति | नश्यतः | नश्यन्ति |
| म० ,, | नश्यसि | नश्यथः | नश्यथ |
| उ० ,, | नश्यामि | नश्यावः | नश्यामः |

लृट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | नशिष्यति | नशिष्यतः | नशिष्यन्ति |
| म० ,, | नशिष्यसि | नशिष्यथः | नशिष्यथ |
| उ० ,, | नशिष्यामि | नशिष्यावः | नशिष्यामः |

या

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | नङ्क्ष्यति | नङ्क्ष्यतः | नङ्क्ष्यन्तिः |

| | | | |
|---|---|---|---|
| म० पु० | नङ्क्ष्यसि | नङ्क्ष्यथः | नङ्क्ष्यथ |
| उ० ,, | नङ्क्ष्यामि | नङ्क्ष्यावः | नङ्क्ष्यामः |

लोट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | नश्यतु, नश्यतात् | नश्यताम् | नश्यन्तु |
| म० ,, | नश्य, नश्यतात् | नश्यतम् | नश्यत |
| उ० ,, | नश्यानि | नश्याव | नश्याम |

लङ्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | अनश्यत् | अनश्यताम् | अनश्यन् |
| म० ,, | अनश्यः | अनश्यतम् | अनश्यत |
| उ० ,, | अनश्यम् | अनश्याव | अनश्याम |

विधिलिङ्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | नश्येत् | नश्येताम् | नश्येयुः |
| म० ,, | नश्येः | नश्येतम् | नश्येत |
| उ० ,, | नश्येयम् | नश्येव | नश्येम |

भाववाच्य—लट्—नश्यते, लृट्—नंक्ष्यते, लोट्—नश्यताम्, लङ्—अनश्यत।

प्रेरणार्थक रूप—नाशयति।

कृदन्त—क्त—नष्टः (पुं०), क्तवतु—नष्टवान् (पुं०), क्त्वा—नंष्ट्वा, नशित्वा, तुमुन्—नष्टुम्, नशितुम्, तव्यत्—नशितव्यः, नष्टव्यः (नपुं०), अनीय—नशनीयः (पुं०), शतृ—नश्यन् (पुं०)।

## शम् (शान्त होना)

लट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | शाम्यति | शाम्यतः | शाम्यन्ति |
| म० ,, | शाम्यसि | शाम्यथः | शाम्यथ |
| उ० ,, | शाम्यामि | शाम्यावः | शाम्यामः |

लृट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | शमिष्यति | शमिष्यतः | शमिष्यन्ति |
| म० ,, | शमिष्यसि | शमिष्यथः | शमिष्यथ |
| उ० ,, | शमिष्यामि | शमिष्यावः | शमिष्यामः |

लोट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | शाम्यतु, शाम्यतात् | शाम्यताम् | शाम्यन्तु |
| म० ,, | शाम्य, शाम्यतात् | शाम्यतम् | शाम्यत |
| उ० ,, | शाम्यानि | शाम्याव | शाम्याम |

लङ्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | अशाम्यत् | अशाम्यताम् | अशाम्यन् |
| म० ,, | अशाम्यः | अशाम्यतम् | अशाम्यत |
| उ० ,, | अशाम्यम् | अशाम्याव | अशाम्याम |

विधिलिङ्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | शाम्येत् | शाम्येताम् | शाम्येयुः |
| म० ,, | शाम्येः | शाम्येतम् | शाम्येत |
| उ० ,, | शाम्येयम् | शाम्येव | शाम्येम |

भाववाच्य—लट्—शाम्यते, लृट्—शमिष्यते, लोट्—शाम्यताम् लङ्—अशाम्यत।

प्रेरणार्थक रूप—शमयति, शमयते।

कृदन्त—क्त—शमितः, शान्तः (पुं०), क्तवतु—शमितवान् (पुं०), क्त्वा—शमित्वा, शान्त्वा, तुम्—शमितुम्, तव्यत्—शमितव्यः (पुं०), अनीय—शमनीयः (पुं०), शतृ—शाम्यत् (पुं०)।

## भ्रम् ( घूमना )

लट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | भ्राम्यति | भ्राम्यतः | भ्राम्यन्ति |

(ख) आत्मनेपदी

विद् (होना)

लट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | विद्यते | विद्येते | विद्यन्ते |
| म० ,, | विद्यसे | विद्येथे | विद्यध्वे |
| उ० ,, | विद्ये | विद्यावहे | विद्यामहे |

लृट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | वेत्स्यते | वेत्स्येते | वेत्स्यन्ते |
| म० ,, | वेत्स्यसे | वेत्स्येथे | वेत्स्यध्वे |
| उ० ,, | वेत्स्ये | वेत्स्यावहे | वेत्स्यामहे |

लोट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | विद्यताम् | विद्येताम् | विद्यन्ताम् |
| म० ,, | विद्यस्व | विद्येथाम् | विद्यध्वम् |
| उ० ,, | विद्यै | विद्यावहै | विद्यामहै |

लङ्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | अविद्यत | अविद्येताम् | अविद्यन्त |
| म० ,, | अविद्यथाः | अविद्येथाम् | अविद्यध्व |
| उ० ,, | अविद्ये | अविद्यावहि | अविद्याम |

विधिलिङ्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | विद्येत | विद्येयाताम् | विद्येरन् |
| म० ,, | विद्येथाः | विद्येयाथाम् | विद्येध्वम् |
| उ० ,, | विद्येय | विद्येवहि | विद्येमहि |

भाववाच्य—लट्—विद्यते, लृट्—वेत्स्यते, लोट्—विद्यता

लङ्—अविद्यत।

प्रेरणार्थक रूप—वेदयति वेदयते।

कृदन्त—क्त—वित्त (पु०) क्तवतु—वित्तवान क्त्वा-

त्वा. तुमुन्—वेत्तुम्. तव्यत्—वेत्तव्य (पुं०). अनीय—वेदनीयः (पुं०). शानच्—विद्यमानः (पुं०)।

## युध् ( युद्ध करना )

लट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | युध्यते | युध्येते | युध्यन्ते |
| म० .. | युध्यसे | युध्येथे | युध्यध्वे |
| उ० .. | युध्ये | युध्यावहे | युध्यामहे |

लृट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | योत्स्यते | योत्स्येते | योत्स्यन्ते |
| म० .. | योत्स्यसे | योत्स्येथे | योत्स्यध्वे |
| उ० .. | योत्स्ये | योत्स्यावहे | योत्स्यामहे |

लोट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | युध्यताम् | युध्येताम् | युध्यन्ताम् |
| म० .. | युध्यस्व | युध्येथाम् | युध्यध्वम् |
| उ० .. | युध्यै | युध्यावहै | युध्यामहै |

लङ्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | अयुध्यत | अयुध्येताम् | अयुध्यन्त |
| म० .. | अयुध्यथाः | अयुध्येथाम् | अयुध्यध्वम् |
| उ० .. | अयुध्ये | अयुध्यावहि | अयुध्यामहि |

विधिलिङ्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | युध्येत | युध्येयाताम् | युध्येरन् |
| म० | युध्येथाः | युध्येयाथाम् | युध्येध्वम् |
| उ० | युध्येय | युध्येवहि | युध्येमहि |

[illegible]
[illegible]

अर्जुन ने श्रीकृष्ण से कहा कि मैं युद्ध नहीं करूँगा। श्रीकृष्ण ने उत्तर दिया कि यदि तुम युद्ध न करोगे तो कौरव समझेंगे कि तुम डर युद्ध नहीं करते हो।

(ग) शकुन्तला सुई से कपड़ों को सीती है। माता शिशु को पालने में रखती है और उसे देखकर खुश होती है। यदि वह नहीं सोता तो गुस्से होती है। बालक माता के प्रेम से पुष्ट होता है। यदि तुम सीधे मार्ग पर चलोगे तो तुम्हारे सब काम सिद्ध होंगे। जो ईश्वर से द्रोह करता है, नष्ट हो जाता है। यदि तू हमेशा गुस्सा करेगा तो कमज़ोर हो जायगा। भोजन खाने से मेरा चित्त तृप्त हो गया। क्या तुम समझते हो और क्या तुम मानते हो कि ईश्वर संसार का बनाने वाला है। जो ईश्वर को ऐसा समझेगा और मानेगा, वह पाप नहीं करेगा।

## स्वादिगण

### (क) उभयपदी

### सु ( रस निकालना )

परस्मैपद

लट्

| | एक० | द्वि० | बहु० |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | सुनोति | सुनुतः | सुन्वन्ति |
| म० " | सुनोषि | सुनुथः | सुनुथ |
| उ० " | सुनोमि | सुनुवः, सुन्वः | सुनुमः, सुन्मः |

लृट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | सोष्यति | सोष्यतः | सोष्यन्ति |
| म० | सोष्यसि | सोष्यथः | सोष्यथ |
| उ० | सोष्यामि | सोष्यावः | सोष्यामः |

लृट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | शक्ष्यति | शक्ष्यतः | शक्ष्यन्ति |
| म० ,, | शक्ष्यसि | शक्ष्यथः | शक्ष्यथ |
| उ० ,, | शक्ष्यामि | शक्ष्यावः | शक्ष्यामः |

लोट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | शक्नोतु, शक्नुतात् | शक्नुताम् | शक्नुवन्तु |
| म० ,, | शक्नुहि, ,, | शक्नुतम् | शक्नुत |
| उ० ,, | शक्नवानि | शक्नवाव | शक्नवाम |

लङ्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | अशक्नोत् | अशक्नुताम् | अशक्नुवन् |
| म० ,, | अशक्नोः | अशक्नुतम् | अशक्नुत |
| उ० ,, | अशक्नवम् | अशक्नुव | अशक्नुम |

विधिलिङ्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | शक्नुयात् | शक्नुयाताम् | शक्नुयुः |
| म० ,, | शक्नुयाः | शक्नुयातम् | शक्नुयात |
| उ० ,, | शक्नुयाम् | शक्नुयाव | शक्नुयाम |

भाववाच्य—लट्—शक्यते, लृट्—शक्ष्यते, लोट्—शक्यताम्, लङ्—अशक्यत।

प्रेरणार्थक रूप—शाकयति, शाकयते।

कृदन्त—क्त—शक्तः (पुँ०), क्तवतु—शक्तवान् (पुँ०), क्त्वा—शक्त्वा, तुम्—शक्तुम्, तव्यत्—शक्तव्यः (पुँ०), अनीय—शकनीयः (पुँ०) शतृ—शक्नुवन् (पुँ०) यत्—शक्य (पुँ०)।

## स्वादिगण धातु-कोश

उभयपदी

चि—चुनना—चिनोति, चेष्यति, चिनोतु, अचिनोत्, चिनुयात्, चिनुते,

| | | | |
|---|---|---|---|
| म० पु० | सोत्स्यसि | सोत्स्यथः | सोत |
| उ० ,, | सोत्स्यामि | सोत्स्यावः | सोत |

लोट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | तुदतु, तुदतात् | तुदताम् | |
| म० ,, | तुद, तुदतात् | तुदतम् | तुद |
| उ० ,, | तुदानि | तुदाव | तुद |

लङ्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | अतुदत् | अतुदताम् | अतुद |
| म० ,, | अतुदः | अतुदतम् | अतुद |
| उ० ,, | अतुदम् | अतुदाव | अतुद |

विधिलिङ्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | तुदेत् | तुदेताम् | तुदेयुः |
| म० ,, | तुदेः | तुदेतम् | तुदेत |
| उ० ,, | तुदेयम् | तुदेव | तुदेम |

कर्मवाच्य—लट्—तुद्यते, लृट्—तोत्स्यते, लोट्—तुद
लङ्—अतुद्यत।

प्रेरणार्थक रूप—तोदयति, तोदयते।

कृदन्त—क्त—तुन्नः (पुं०), क्तवतु—तुन्नवान् (पुं०), क्त्वा—तु
तुमुन्—तोत्तुम्, तव्यत्—तोत्तव्यः (पुं०), अनीय—तोदनीयः (पुं
शतृ—तुदन् (पुं०)।

## इष् (इच्छा करना)

लट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | इच्छति | इच्छतः | इच्छन्ति |
| म० ,, | इच्छसि | इच्छथः | इच्छथ |
| उ० ,, | इच्छामि | इच्छावः | इच्छामः |

| | | | |
|---|---|---|---|
| म० पु० | स्पृशसि | स्पृशथः | स्पृशथ |
| उ० ,, | स्पृशामि | स्पृशावः | स्पृशामः |

लृट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | स्पर्क्ष्यति | स्पर्क्ष्यतः | स्पर्क्ष्यन्ति |
| म० ,, | स्पर्क्ष्यसि | स्पर्क्ष्यथः | स्पर्क्ष्यथ |
| उ० ,, | स्पर्क्ष्यामि | स्पर्क्ष्यावः | स्पर्क्ष्यामः |

लोट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | स्पृशतु, स्पृशतात् | स्पृशताम् | स्पृशन्तु |
| म० ,, | स्पृश, स्पृशतात् | स्पृशतम् | स्पृशत |
| उ० ,, | स्पृशानि | स्पृशाव | स्पृशाम |

लङ्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | अस्पृशत् | अस्पृशताम् | अस्पृशन् |
| म० ,, | अस्पृशः | अस्पृशतम् | अस्पृशत |
| उ० ,, | अस्पृशम् | अस्पृशाव | अस्पृशाम |

विधिलिङ्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | स्पृशेत् | स्पृशेताम् | स्पृशेयुः |
| म० पु० | स्पृशेः | स्पृशेतम् | स्पृशेत |
| उ० ,, | स्पृशेयम् | स्पृशेव | स्पृशेम |

कर्मवाच्य—लट्—स्पृश्यते लृट्—स्पर्क्ष्यते लोट्—स्पृश्यताम् लङ्—अस्पृश्यत ।

प्रेरणार्थक रूप—स्पर्शयति ।

कृदन्त—क्त—स्पृष्ट (पुं०) क्तवतु—स्पृष्टवान् (पुं०) क्त्वा—स्पृष्ट्वा तुमुन्—स्प्रष्टुम् स्पर्ष्टुम् तव्यत्—स्प्रष्टव्य (पुं०) अनीय—स्पर्शनीय (पुं०) शतृ—स्पृशत् (पुं०) क्यप्—स्पृश्य (पुं०) ।

पृष्ट्वा, तुम्—प्रष्टुम्, तव्यन्—प्रष्टव्यः (पुं०), अनीय—प्रच्छनी (पुं०), शतृ—पृच्छन (पुं०)।

(ख) आत्मनेपदी

मृ (मरना)

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | म्रियते | म्रियेते | म्रियन्ते |
| म० ,, | म्रियसे | म्रियेथे | म्रियध्वे |
| उ० ,, | म्रिये | म्रियावहे | म्रियामहे |

लृट्

('मृ' धातु लृट् में परस्मैपदी होती है)

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | मरिष्यति | मरिष्यतः | मरिष्यन्ति |
| म० ,, | मरिष्यसि | मरिष्यथः | मरिष्यथ |
| उ० ,, | मरिष्यामि | मरिष्यावः | मरिष्यामः |

लोट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | म्रियताम् | म्रियेताम् | म्रियन्ताम् |
| म० ,, | म्रियस्व | म्रियेथाम् | म्रियध्वम् |
| उ० ,, | म्रियै | म्रियावहै | म्रियामहै |

लङ्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | अम्रियत | अम्रियेताम् | अम्रियन्त |
| म० ,, | अम्रियथाः | अम्रियेथाम् | अम्रियध्वम् |
| उ० ,, | अम्रिये | अम्रियावहि | अम्रियामहि |

विधिलिङ्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | म्रियेत | म्रियेयाताम् | म्रियेरन् |
| म० ,, | म्रियेथाः | म्रियेयाथाम् | म्रियेध्वम् |
| उ० ,, | म्रियेय | म्रियेवहि | म्रियेमहि |

भाववाच्य—लट्–म्रियते लृट्–मरिष्यते लोट्–म्रियताम् लङ्–अम्रियत

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | विन्देत | विन्देताम् | विन्देयुः |
| म० ,, | विन्देः | विन्देतम् | विन्देत |
| उ० ,, | विन्देयम् | विन्देव | विन्देम |

आत्मनेपद

लट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | विन्दते | विन्देते | विन्दन्ते |
| म० ,, | विन्दसे | विन्देथे | विन्दध्वे |
| उ० ,, | विन्दे | विन्दावहे | विन्दामहे |

लृट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | वेदिष्यते<br>वेत्स्यते | वेदिष्येते<br>वेत्स्येते | वेदिष्यन्ते<br>वेत्स्यन्ते |
| म० ,, | वेदिष्यसे<br>वेत्स्यसे | वेदिष्येथे<br>वेत्स्येथे | वेदिष्यध्वे<br>वेत्स्यध्वे |
| उ० ,, | वेदिष्ये<br>वेत्स्ये | वेदिष्यावहे<br>वेत्स्यावहे | वेदिष्यामहे<br>वेत्स्यामहे |

लोट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | विन्दताम् | विन्देताम् | विन्दन्ताम् |
| म० ,, | विन्दस्व | विन्देथाम् | विन्दध्वम् |
| उ० ,, | विन्दै | विन्दावहै | विन्दामहै |

लङ्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | अविन्दत | अविन्देताम् | अविन्दन्त |
| म० ,, | अविन्दथाः | अविन्देथाम् | अविन्दध्वम् |
| उ० ,, | अविन्दे | अविन्दावहि | अविन्दामहि |

| | विधिलिङ् | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | विन्देत | विन्देयाताम् | विन्देरन् |
| म० ,, | विन्देथाः | विन्देयाथाम् | विन्देध्वम् |
| उ० ,, | विन्देय | विन्देवहि | विन्देमहि |

कर्मवाच्य—लट्—विद्यते, लृट्—वेदिष्यते-वेत्स्यते, लोट्—विद्यताम्, लङ्—अविद्यत।

प्रेरणार्थक रूप—वेदयति, वेदयते।

कृदन्त—क्त—वित्तः (पुं०), क्तवतु—वित्तवान् (पुं०), क्त्वा—वित्त्वा, तुम्—वेत्तुम्, वेदितुम् तव्यत्—वेत्तव्यः (पुं०), अनीय—वेदनीयः (पुं०), शतृ—विन्दन् (पुं०)।

## मुच् (मुञ्च्) (छोड़ना)

परस्मैपद

| | लट् | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | मुञ्चति | मुञ्चतः | मुञ्चन्ति |
| म० ,, | मुञ्चसि | मुञ्चथः | मुञ्चथ |
| उ० ,, | मुञ्चामि | मुञ्चावः | मुञ्चावः |

| | लृट् | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | मोक्ष्यति | मोक्ष्यतः | मोक्ष्यन्ति |
| म० ,, | मोक्ष्यसि | मोक्ष्यथः | मोक्ष्यथ |
| उ० ,, | मोक्ष्यामि | मोक्ष्यावः | मोक्ष्यावः |

| | लोट् | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | मुञ्चतु, मुञ्चतात् | मुञ्चताम् | मुञ्चन्तु |
| म० | मुञ्च, मुञ्चतात् | मुञ्चतम् | मुञ्चत |
| उ० | मुञ्चानि | मुञ्चाव | मुञ्चाम |

| | लङ् | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | अमुञ्चत् | अमुञ्चताम् | अमुञ्चन् |

| | | | |
|---|---|---|---|
| म० पु० | अमुञ्चः | अमुञ्चतम् | अमुञ्चत |
| उ० ,, | अमुञ्चम् | अमुञ्चाव | अमुञ्चाम |

विधिलिङ्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | मुञ्चेत | मुञ्चेताम् | मुञ्चेयुः |
| म० ,, | मुञ्चेः | मुञ्चेतम् | मुञ्चेत |
| उ० ,, | मुञ्चेयम् | मुञ्चेव | मुञ्चेम |

आत्मनेपद

लट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | मुञ्चते | मुञ्चेते | मुञ्चन्ते |
| म० ,, | मुञ्चसे | मुञ्चेथे | मुञ्चध्वे |
| उ० | मुञ्चे | मुञ्चावहे | मुञ्चामहे |

लृट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | मोक्ष्यते | मोक्ष्येते | मोक्ष्यन्ते |
| म० ,, | मोक्ष्यसे | मोक्ष्येथे | मोक्ष्यध्वे |
| उ० ,, | मोक्ष्ये | मोक्ष्यावहे | मोक्ष्यामहे |

लोट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | मुञ्चताम् | मुञ्चेताम् | मुञ्चन्ताम् |
| म० ,, | मुञ्चस्व | मुञ्चेथाम् | मुञ्चध्वम् |
| उ० ,, | मुञ्चै | मुञ्चावहै | मुञ्चामहै |

लङ्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | अमुञ्चत | अमुञ्चेताम् | अमुञ्चन्त |
| म० | अमुञ्चथाः | अमुञ्चेथाम् | अमुञ्चध्वम् |
| उ० | अमुञ्चे | अमुञ्चावहि | अमुञ्चामहि |

विधिलिङ्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | मुञ्चेत | मुञ्चेयाताम् | मुञ्चेरन् |
| म० | मुञ्चेथाः | मुञ्चेयाथाम् | मुञ्चेध्वम् |
| उ० | मुञ्चेय | मुञ्चेवहि | मुञ्चेमहि |

कर्मवाच्य—लट्—मुच्यते, लृट्—मोक्ष्यते, लोट्—मुच्यताम्, लङ्—अमुच्यत।

प्रेरणार्थक रूप—मोचयति, मोचयते।

कृदन्त—क्त—मुक्तः (पुं०), क्तवतु—मुक्तवान् (पुं०), क्त्वा—मुक्त्वा, तुमुन्—मोक्तुम्, तव्यत्—मोक्तव्यः (पुं०), अनीय—मोचनीयः (पुं०), शतृ—मुञ्चन् (पुं०) शानच्—मुञ्चमानः (पुं०)।

## तुदादिगण धातु-कोश

### परस्मैपदी

लिख्—लिखना—लिखति, लेखिष्यति, लिखतु, अलिखत्, लिखेत्।

सृज्—छोड़ना, बनाना—सृजति, स्रक्ष्यति, सृजतु, असृजत्, सृजेत्।

प्र-विश्—प्रवेश करना—प्रविशति, प्रवेक्ष्यति, प्रविशतु, प्राविशत्, प्रविशेत्।

### आत्मनेपदी

लस्ज्—लज्जा करना—लज्जते, लज्जिष्यते, लज्जताम्

| | | | |
|---|---|---|---|
| म० पु० | रुन्धि, रुन्धात् | रुन्धम् | रुन्ध |
| उ० ,, | रुणधानि | रुणधाव | रुणधाम |

लङ्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | अरुणत्-द् | अरुन्धाम् | अरुन्धन् |
| म० ,, | अरुणः अरुणत्-द् | अरुन्धम् | अरुन्द्ध |
| उ० ,, | अरुणधम् | अरुन्ध्व | अरुन्ध्म |

विधिलिङ्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | रुन्ध्यात् | रुन्ध्याताम् | रुन्ध्युः |
| म० ,, | रुन्ध्याः | रुन्ध्यातम् | रुन्ध्यात |
| उ० ,, | रुन्ध्याम् | रुन्ध्याव | रुन्ध्याम |

आत्मनेपद

लट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | रुन्धे | रुन्धाते | रुन्धते |
| म० ,, | रुन्त्से | रुन्धाथे | रुन्द्ध्वे |
| उ० ,, | रुन्धे | रुन्ध्वहे | रुन्ध्महे |

लृट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | रोत्स्यते | रोत्स्येते | रोत्स्यन्ते |
| म० ,, | रोत्स्यसे | रोत्स्येथे | रोत्स्यध्वे |
| उ० ,, | रोत्स्ये | रोत्स्यावहे | रोत्स्यामहे |

लोट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | रुन्धाम् | रुन्धाताम् | रुन्धताम् |
| म० ,, | रुन्त्स्व | रुन्धाथाम् | रुन्द्ध्वम् |
| उ० ,, | रुणधै | रुणधावहै | रुणधामहै |

लङ्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | अरुन्ध | अरुन्धाताम् | अरुन्धत |

| | | | |
|---|---|---|---|
| म० पु० | अरुन्धाः | अरुन्धाथाम् | |
| उ० ,, | अरुन्धि | अरुन्ध्वहि | |

विधिलिङ्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | रुन्धीत | रुन्धीयाताम् | रुन्धीरन् |
| म० ,, | रुन्धीथाः | रुन्धीयाथाम् | रुन्धीध्वम् |
| उ० ,, | रुन्धीय | रुन्धीवहि | रुन्धीमहि |

कर्मवाच्य—लट्—रुध्यते, लृट्—रोत्स्यते, लोट्—रुध्यताम्, लङ्—अरुध्यत।

प्रेरणार्थक रूप—रोधयति।

उपसर्ग के योग में—

वि + रुध्—विरुणद्धि—विरोध करता है।

अनु + रुध्—अनुरुणद्धि—अनुरोध करता है।

कृदन्त—क्त—रुद्धः (पुं०), क्तवतु—रुद्धवान् (पुं०), क्त्वा—रुद्ध्वा, तुमुन्—रोद्धुम्, तव्यत्—रोद्धव्यः (पुं०), अनीय—रोधनीयः (पुं०), शतृ—रुन्धन् (पुं०), शानच्—रुन्धानः (पुं०)।

## भुज् (पालना, खाना या भोगना)

परस्मैपद

लट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | भुनक्ति | भुङ्क्तः | भुञ्जन्ति |
| म० ,, | भुनक्षि | भुङ्क्थः | भुङ्क्थ |
| उ० ,, | भुनज्मि | भुञ्ज्वः | भुञ्ज्मः |

लृट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | भोक्ष्यति | भोक्ष्यतः | भोक्ष्यन्ति |
| म० ,, | भोक्ष्यसि | भोक्ष्यथः | भोक्ष्यथ |
| उ० ,, | भोक्ष्यामि | भोक्ष्यावः | भोक्ष्यामः |

लङ्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | अभुङ्क्त | अभुञ्जाताम् | अभुञ्जत |
| म० ,, | अभुङ्क्थाः | अभुञ्जाथाम् | अभुङ्ग्ध्व |
| उ० ,, | अभुञ्जि | अभुञ्ज्वहि | अभुञ्ज्म |

विधिलिङ्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | भुञ्जीत | भुञ्जीयाताम् | भुञ्जीरन् |
| म० ,, | भुञ्जीथाः | भुञ्जीयाथाम् | भुञ्जीध्व |
| उ० ,, | भुञ्जीय | भुञ्जीवहि | भुञ्जीमहि |

नोट—ध्यान रहे कि भुज् धातु का परस्मैपद में प्रयोग "र करना" अर्थ में ही होता है। खाने आदि अर्थ में आत्मनेप प्रयोग होता है।

कर्मवाच्य—लट्—भुज्यते, लृट्—भोक्ष्यते, लोट्—भुज्य लङ्—अभुज्यत।

प्रेरणार्थक रूप—भोजयते।

कृदन्त—क्तः—भुक्तः (पुं०) क्तवतु—भुक्तवान् (पुं०), क्त भुक्त्वा, तुमुन्—भोक्तुम्, तव्यत्—भोक्तव्यः (पुं०), अनीय—भोज (पुं०), शतृ—भुञ्जन् (पुं०), शानच्—भुञ्जानः (पुं०)।

## युज् ( मिलाना, जोड़ना )

परस्मैपद

लट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | युनक्ति | युङ्क्तः | युञ्जन्ति |
| म० | युनक्षि | युङ्क्थः | युङ्क्थ |
| उ० | युनज्मि | युञ्ज्वः | युञ्ज्मः |

लृट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | योक्ष्यति | योक्ष्यतः | योक्ष्यन्ति |

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | अयुङ्क्त | अयुञ्जाताम् | अयुञ्जत |
| म० ,, | अयुङ्क्थाः | अयुञ्जाथाम् | अयुङ्ग्ध्वम् |
| उ० ,, | अयुञ्जि | अयुञ्ज्वहि | अयुञ्ज्महि |

विधिलिङ्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | युञ्जीत | युञ्जीयाताम् | युञ्जीरन् |
| म० ,, | युञ्जीथाः | युञ्जीयाथाम् | युञ्जीध्वम् |
| उ० ,, | युञ्जीय | युञ्जीवहि | युञ्जीमहि |

उपसर्ग के योग में :—

प्र+युज्—प्रयुङ्क्ते=प्रयोग करता है।

उद्+युज्—उद्युङ्क्ते=उद्योग करता है।

वि+युज्—वियुङ्क्ते=अलग होता है।

अनु+युज्—अनुयुङ्क्ते=पूछता है।

उप+युज्—उपयुङ्क्ते=उपयोग करता है।

कर्मवाच्य—लट्—युज्यते; लृट्—योक्ष्यते, लोट्—युज्यताम्, लङ्—अयुज्यत।

प्रेरणार्थक रूप—योजयति, योजयते।

कृदन्त—क्त—युक्तः (पुं०), क्तवतु—युक्तवान् (पुं०), क्त्वा—युक्त्वा, तुम्—योक्तुम्, तव्यत्—योक्तव्यः (पुं०), अनीय—योजनीयः (पुं०), शतृ—युञ्जन् (पुं०), शानच्—युञ्जानः (पुं०)।

## अभ्यास

अनुवाद करो—

१. जो अपनी इन्द्रियों को रोकता है, वह शाश्वत सुख को पाता है। जो इन्द्रियों को नहीं रोकेगा वह विषयों में लिप्त होकर निर्बल एवं शक्तिहीन हो जाएगा। अतः पुरुष अपने मन को विषयों से रोके। प्राचीन समय में मुनि लोग अपने चित्त को रोकते थे और लम्बी आयु प्राप्त करते थे। आज हम

विधिलिङ्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | तनुयात् | तनुयाताम् | तनुयुः |
| म० ,, | तनुयाः | तनुयातम् | तनुयात |
| उ० ,, | तनुयाम् | तनुयाव | तनुयाम |

आत्मनेपद

लट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | तनुते | तन्वाते | तन्वते |
| म० ,, | तनुषे | तन्वाथे | तनुध्वे |
| उ० ,, | तन्वे | तनुवहे तन्वहे | तनुमहे तन्महे |

लृट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | तनिष्यते | तनिष्येते | तनिष्यन्ते |
| म० ,, | तनिष्यसे | तनिष्येथे | तनिष्यध्वे |
| उ० ,, | तनिष्ये | तनिष्यावहे | तनिष्यामहे |

लोट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | तनुताम् | तन्वाताम् | तन्वताम् |
| म० ,, | तनुष्व | तन्वाथाम् | तनुध्वम् |
| उ० ,, | तनवै | तनवावहै | तनवामहै |

लङ्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | अतनुत | अतन्वाताम् | अतन्वत |
| म० ,, | अतनुथाः | अतन्वाथाम् | अतनुध्वम् |
| उ० ,, | अतन्वि | अतनुवहि, अतन्वहि | अतनुमहि, अतन्महि |

विधिलिङ्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | तन्वीत | तन्वीयाताम् | तन्वीरन् |
| म० ,, | तन्वीथाः | तन्वीयाथाम् | तन्वीध्वम् |
| उ० ,, | तन्वीय | तन्वीवहि | तन्वीमहि |

| | | | |
|---|---|---|---|
| म० पु० | कुर्याः | कुर्यातम् | कुर्यात |
| उ० ,, | कुर्याम् | कुर्याव | कुर्याम |

आत्मनेपद

लट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | कुरुते | कुर्वाते | कुर्वते |
| म० ,, | कुरुषे | कुर्वाथे | कुरुध्वे |
| उ० ,, | कुर्वे | कुर्वहे | कुर्महे |

लृट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | करिष्यते | करिष्येते | करिष्यन्ते |
| म० ,, | करिष्यसे | करिष्येथे | करिष्यध्वे |
| उ० ,, | करिष्ये | करिष्यावहे | करिष्यामहे |

लोट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | कुरुताम् | कुर्वाताम् | कुर्वताम् |
| म० ,, | कुरुष्व | कुर्वाथाम् | कुरुध्वम् |
| उ० ,, | करवै | करवावहै | करवामहै |

लङ्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | अकुरुत | अकुर्वाताम् | अकुर्वत |
| म० ,, | अकुरुथाः | अकुर्वाथाम् | अकुरुध्वम् |
| उ० ,, | अकुर्वि | अकुर्वहि | अकुर्महि |

विधिलिङ्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | कुर्वीत | कुर्वीयाताम् | कुर्वीरन् |
| म० ,, | कुर्वीथाः | कुर्वीयाथाम् | कुर्वीध्वम् |
| उ० ,, | कुर्वीय | कुर्वीवहि | कुर्वीमहि |

कर्मवाच्य—लट्—क्रियते लृट्—करिष्यते, लोट्—क्रियताम्, लङ्—अक्रियत।

प्रेरणार्थक रूप—कारयति, कारयते।

उपसर्गों के योग में—

उप+कृ—उपकरोति—उपकार करता है।

अप+कृ—अपकरोति—अपकार करता है।

अनु+कृ—अनुकरोति—नकल करता है।

अलम्+कृ—अलङ्करोति—सुशोभित करता है।

आविस+कृ—आविष्करोति—आविष्कार करता है।

स्वी+कृ—स्वीकरोति—स्वीकार करता है।

नोट—अलम्, आविस् और स्वी यद्यपि उपसर्ग नहीं हैं, तथापि नके योग में भी 'कृ' धातु का अर्थ बदल जाता है—इसलिए और व्यवहार में अधिक आवश्यक होने से इनके योग का भी यहाँ उल्लेख किया गया है।

कृदन्त—क्त—कृतः (पुँ०), क्तवतु—कृतवान् (पुँ०), क्त्वा—त्वा, तुमुन्—कर्तुम्, तव्यत्—कर्तव्यः (पुँ०), अनीय—करणीयः (पुँ०), शतृ—कुर्वन् (पुँ०), शानच्—कुर्वाणः (पुँ०), ण्यत्—कार्यः (पुँ०), क्यप्—कृत्यः (पुँ०)।

## अभ्यास

अनुवाद करो—

दुष्ट लोग संसार में अपना मायाजाल फैलाते हैं और साधु पुरुषों को छल देते हैं। रावण ने अपने मायाजाल को फैलाया और सती सीता को चुरा लिया।

जो जैसा करता है, वैसा फल पाता है। हे मनुष्य! तू शुभ कर्म कर; जो शुभ कर्म करेगा वही इस लोक में तथा परलोक में सुख पाएगा। जब [illegible] करता है वह [illegible] है, [illegible] कहता है [illegible] 'हाय, मैंने शुभ कर्म करो [illegible]

[illegible]

## क्रयादिगण

### (क) उभयपदी

### क्री ( खरीदना )

#### परस्मैपद

**लट्**

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | क्रीणाति | क्रीणीतः | क्रीणन्ति |
| म० ,, | क्रीणासि | क्रीणीथः | क्रीणीथ |
| उ० ,, | क्रीणामि | क्रीणीवः | क्रीणीमः |

**लृट्**

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | क्रेष्यति | क्रेष्यतः | क्रेष्यन्ति |
| म० ,, | क्रेष्यसि | क्रेष्यथः | क्रेष्यथ |
| उ० ,, | क्रेष्यामि | क्रेष्यावः | क्रेष्यामः |

**लोट्**

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | क्रीणातु, क्रीणीतात् | क्रीणीताम् | क्रीणन्तु |
| म० ,, | क्रीणीहि, क्रीणीतात् | क्रीणीतम् | क्रीणीत |
| उ० ,, | क्रीणानि | क्रीणाव | क्रीणाम |

**लङ्**

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | अक्रीणात् | अक्रीणीताम् | अक्रीणन् |
| म० ,, | अक्रीणाः | अक्रीणीतम् | अक्रीणीत |
| उ० ,, | अक्रीणाम् | अक्रीणीव | अक्रीणीम |

**विधिलिङ्**

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | क्रीणीयात् | क्रीणीयाताम् | क्रीणीयुः |
| म० ,, | क्रीणीयाः | क्रीणीयातम् | क्रीणीयात |
| उ० ,, | क्रीणीयाम् | क्रीणीयाव | क्रीणीयाम |

प्रेरणार्थक रूप—क्रापयति, क्रापयते।

कृदन्त—क्त—क्रीतः (पुं०), क्तवतु—क्रीतवान्, (पुं०) क्त्वा क्रीत्वा, तुमुन्—क्रेतुम्, तव्यत्—क्रेतव्यः (पुं०), अनीय—क्रयणीयः (पुं०) यत्—क्रेयः (पुं०), शतृ—क्रीणन् (पुं०). शानच्—क्रीणानः (पुं०)।

## ग्रह् ( लेना )

### परस्मैपदी

लट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | गृह्णाति | गृह्णीतः | गृह्णन्ति |
| म० ,, | गृह्णासि | गृह्णीथः | गृह्णीथ |
| उ० ,, | गृह्णामि | गृह्णीवः | गृह्णीमः |

लृट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | ग्रहीष्यति | ग्रहीष्यतः | ग्रहीष्यन्ति |
| म० ,, | ग्रहीष्यसि | ग्रहीष्यथः | ग्रहीष्यथ |
| उ० ,, | ग्रहीष्यामि | ग्रहीष्यावः | ग्रहीष्यामः |

लोट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | गृह्णातु, गृह्णीतात् | गृह्णीताम् | गृह्णन्तु |
| म० ,, | गृहाण, गृह्णीतात् | गृह्णीतम् | गृह्णीत |
| उ० ,, | गृह्णानि | गृह्णाव | गृह्णाम |

लङ्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | अगृह्णात् | अगृह्णीताम् | अगृह्णन् |
| म० ,, | अगृह्णाः | अगृह्णीतम् | अगृह्णीत |
| उ० ,, | अगृह्णाम् | अगृह्णीव | अगृह्णीम |

विधिलिङ्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | गृह्णीयात् | गृह्णीयाताम् | गृह्णीयुः |
| म० | गृह्णीयाः | गृह्णीयातम् | गृह्णीयात |
| उ० | गृह्णीयाम् | गृह्णीयाव | गृह्णीयाम |

| | | | |
|---|---|---|---|
| म० पु० | जानीयाः | जानीयातम् | जानीयात |
| उ० ,, | जानीयाम् | जानीयाव | जानीयाम |

आत्मनेपद

लट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | जानीते | जानाते | जानते |
| म० ,, | जानीषे | जानाथे | जानीध्वे |
| उ० ,, | जाने | जानीवहे | जानीमहे |

लृट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | ज्ञास्यते | ज्ञास्येते | ज्ञास्यन्ते |
| म० ,, | ज्ञास्यसे | ज्ञास्येथे | ज्ञास्यध्वे |
| उ० ,, | ज्ञास्ये | ज्ञास्यावहे | ज्ञास्यामहे |

लोट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| ० पु० | जानीताम् | जानाताम् | जानताम् |
| ० ,, | जानीष्व | जानाथाम् | जानीध्वम् |
| ,, | जानै | जानावहै | जानामहै |

लङ्

| | | | |
|---|---|---|---|
| पु० | अजानीत | अजानाताम् | अजानत |
| ,, | अजानीथाः | अजानाथाम् | अजानीध्वम् |
| ,, | अजानि | अजानीवहि | अजानीमहि |

विधिलिङ्

| | | | |
|---|---|---|---|
| पु० | जानीत | जानीयाताम् | जानीरन् |
| .. | जानीथाः | जानीयाथाम् | जानीध्वम् |
| . | जानीय | जानीवहि | जानीमहि |

न्य—लट्—ज्ञायते. लृट्—ज्ञास्यते लोट्—ज्ञायताम्
ज्ञायत ।
र्थक रूप—ज्ञापयति, ज्ञापयते

उपसर्गों के योग में—

अव+ज्ञा—अवजानाति—निरादर करता है।

अनु+ज्ञा—अनुजानाति—आज्ञा देता है।

प्रति+ज्ञा—प्रतिजानाति—प्रतिज्ञा करता है।

कृदन्त—क्त—ज्ञातः (पुं०), क्तवतु—ज्ञातवान् (पुं०), क्त्वा—ज्ञात्वा, तुम्—ज्ञातुम्, तव्यत्—ज्ञातव्यः (पुं०), अनीय—ज्ञा[illegible] (पुं०), शतृ—जानन् (पुं०), शानच्—जानानः (पुं०), य[illegible] [illegible]यः (पुं०)।

(ख) परस्मैपदी

## मुष् (चुराना)

लट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | मुष्णाति | मुष्णीतः | मुष्णन्ति |
| म० ,, | मुष्णासि | मुष्णीथः | मुष्णीथ |
| उ० ,, | मुष्णामि | मुष्णीवः | मुष्णीमः |

लृट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | मोषिष्यति | मोषिष्यतः | मोषिष्य[illegible] |
| म० ,, | मोषिष्यसि | मोषिष्यथः | मोषिष्यथ |
| उ० ,, | मोषिष्यामि | मोषिष्यावः | मोषिष्याम[illegible] |

लोट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | मुष्णातु, मुष्णीतात् | मुष्णीताम् | मुष्णन्तु |
| म० ,, | मुषाण, मुष्णीतात् | मुष्णीतम् | मुष्णीत |
| उ० ,, | मुष्णानि | मुष्णाव | मुष्णाम |

लङ्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | अमुष्णात् | अमुष्णीताम् | अमुष्णन् |
| म० ,, | अमुष्णाः | अमुष्णीतम् | अमुष्णीत |
| उ० ,, | अमुष्णाम् | अमुष्णीव | अमुष्णीम |

| | | | |
|---|---|---|---|
| म० पु० | चोरय, चोरयतात् | चोरयतम् | चोरयत |
| उ० ,, | चोरयाणि | चोरयाव | चोरयाम |

लङ्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | अचोरयत् | अचोरयताम् | अचोरयन् |
| म० ,, | अचोरयः | अचोरयतम् | अचोरयत |
| उ० ,, | अचोरयम् | अचोरयाव | अचोरयाम |

विधिलिङ्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | चोरयेत् | चोरयेताम् | चोरयेयुः |
| म० ,, | चोरयेः | चोरयेतम् | चोरयेत |
| उ० ,, | चोरयेयम् | चोरयेव | चोरयेम |

आत्मनेपद

लट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | चोरयते | चोरयेते | चोरयन्ते |
| म० ,, | चोरयसे | चोरयेथे | चोरयध्वे |
| उ० ,, | चोरये | चोरयावहे | चोरयामहे |

लृट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | चोरयिष्यते | चोरयिष्येते | चोरयिष्यन्ते |
| म० ,, | चोरयिष्यसे | चोरयिष्येथे | चोरयिष्यध्वे |
| उ० ,, | चोरयिष्ये | चोरयिष्यावहे | चोरयिष्यामहे |

लोट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | चोरयताम् | चोरयेताम् | चोरयन्ताम् |
| म० ,, | चोरयस्व | चोरयेथाम् | चोरयध्वम् |
| उ० ,, | चोरयै | चोरयावहै | चोरयामहै |

लङ्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | अचोरयत | अचोरयेताम् | अचोरयन्त |

| | | | |
|---|---|---|---|
| म० पु० | अचोरयथाः | अचोरयेथाम् | अचोरयध्वम् |
| उ० .. | अचोरये | अचोरयावहि | अचोरयामहि |

विधिलिङ्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | चोरयेत | चोरयेयाताम् | चोरयेरन् |
| म० .. | चोरयेथाः | चोरयेयायाम् | चोरयेध्वम् |
| उ० ,, | चोरयेय | चोरयेवहि | चोरयेमहि |

कर्मवाच्य—लट्—चोर्यते, लृट्—चोरयिष्यते, लोट्—चोर्यताम, लङ्—अचोर्यत।

प्रेरणार्थक रूप—चोरयति, चोरयते

नोट—चुरादिगण के धातुओं के प्रेरणार्थक रूप में कोई अन्तर नहीं आता।

कृदन्त—क्त—चोरितः (पुँ०), क्तवतु—चोरितवान् (पुँ०), क्त्वा—चोरयित्वा, तुमु—चोरयितुम्, तव्यत्—चोरयितव्यः (पुँ०), अनीय—चोरणीयः (पुँ०), शतृ—चोरयन् (पुँ०), शानच्—चोरयमाणः (पुँ०)।

चिन्त् ( सोचना, विचार करना )

परस्मैपद

लट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | चिन्तयति | चिन्तयतः | चिन्तयन्ति |
| म० .. | चिन्तयसि | चिन्तयथः | चिन्तयथ |
| उ० ,, | चिन्तयामि | चिन्तयावः | चिन्तयामः |

लृट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | चिन्तयिष्यति | चिन्तयिष्यतः | चिन्तयिष्यन्ति |
| म० .. | चिन्तयिष्यसि | चिन्तयिष्यथः | चिन्तयिष्यथ |
| उ० .. | चिन्तयिष्यामि | चिन्तयिष्यावः | चिन्तयिष्यामः |

लोट्

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| पु | चिन्तयतु | चिन्तयतात् | चिन्तयताम् | [illegible] |

| | | | |
|---|---|---|---|
| म० पु० | ताडय, ताडयतात् | ताडयतम् | ताडयत |
| उ० ,, | ताडयानि | ताडयाव | ताडयाम |

लङ्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | अताडयम् | अताडयताम् | अताडयन् |
| म० ,, | अताडयः | अताडयतम् | अताडयत |
| उ० ,, | अताडयम् | अताडयाव | अताडयाम |

विधिलिङ्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | ताडयेन् | ताडयेताम् | ताडयेयु: |
| म० ,, | ताडयेः | ताडयेतम् | ताडयेत |
| उ० ,, | ताडयेयम् | ताडयेव | ताडयेम |

आत्मनेपद

लट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | ताडयते | ताडयेते | ताडयन्ते |
| म० ,, | ताडयसे | ताडयेथे | ताडयध्वे |
| उ० ,, | ताडये | ताडयावहे | ताडयामहे |

लृट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | ताडयिष्यते | ताडयिष्येते | ताडयिष्यन्ते |
| म० ,, | ताडयिष्यसे | ताडयिष्येथे | ताडयिष्यध्वे |
| उ० ,, | ताडयिष्ये | ताडयिष्यावहे | ताडयिष्यामहे |

लोट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | ताडयताम् | ताडयेताम् | ताडयन्ताम् |
| म० ,, | ताडयस्व | ताडयेथाम् | ताडयध्वम् |
| उ० ,, | ताडये | ताडयावहै | ताडयामहै |

लङ्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | अताडयत | अताडयेताम् | अताडय[illegible] |

| | | | |
|---|---|---|---|
| म० पु० | अभक्षयः | अभक्षयतम् | अभक्षयत |
| उ० ,, | अभक्षयम् | अभक्षयाव | अभक्षयाम |

विधिलिङ्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | भक्षयेत् | भक्षयेताम् | भक्षयेयुः |
| म० ,, | भक्षयेः | भक्षयेतम् | भक्षयेत |
| उ० ,, | भक्षयेयम् | भक्षयेव | भक्षयेम |

आत्मनेपद

लट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | भक्षयते | भक्षयेते | भक्षयन्ते |
| म० ,, | भक्षयसे | भक्षयेथे | भक्षयध्वे |
| उ० ,, | भक्षये | भक्षयावहे | भक्षयामहे |

लृट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | भक्षयिष्यते | भक्षयिष्येते | भक्षयिष्यन्ते |
| म० ,, | भक्षयिष्यसे | भक्षयिष्येथे | भक्षयिष्यध्वे |
| उ० ,, | भक्षयिष्ये | भक्षयिष्यावहे | भक्षयिष्यामहे |

लोट्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | भक्षयताम् | भक्षयेताम् | भक्षयन्ताम् |
| म० ,, | भक्षयस्व | भक्षयेथाम् | भक्षयध्वम् |
| उ० ,, | भक्षयै | भक्षयावहै | भक्षयामहै |

लङ्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | अभक्षयत | अभक्षयेताम् | अभक्षयन्त |
| म० ,, | अभक्षयथाः | अभक्षयेथाम् | अभक्षयध्वम् |
| उ० ,, | अभक्षये | अभक्षयावहि | अभक्षयामहि |

विधिलिङ्

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | भक्षयेत | भक्षयेयाताम् | भक्षयेरन् |

## अभ्यास

अनुवाद करो—

१. बाजार में जाओ और पुस्तक खरीदो। सदा नई पुस्तक खरीदो। मैं कभी पुरानी पुस्तक नहीं खरीदता। पिछले साल मैंने एक पुस्तक खरीदी थी, वह मेरे पास है। मैं पुस्तक कभी बेचता नहीं हूँ। जो पुरानी पुस्तक खरीदता है, वह उसका पूरा लाभ नहीं उठाता। यदि तुम्हारे पास धन है तो सदा नवीन पुस्तक खरीदो और पढ़ो।

२. तू शपथ ले कि मैं कभी झूठ न बोलूँगा, चोरी न करूँगा, नित्य ईश्वर को स्मरण करूँगा तथा धर्माचरण करूँगा। जो यह जानता है वह पाप नहीं कर सकता। जब तू यह जानेगा कि ईश्वर तेरे हृदय में भी बसता है तेरा अन्धकार दूर हो जायगा। दुःख को तू सुख जान, क्योंकि दुःख में मनुष्य ईश्वर को याद तो करता है। भक्त ध्रुव ने माता के अपमान को सुख जाना, इस से वह ईश्वर का प्यारा बन सका। भगवान् भक्त के हृदय को चुरा लेते हैं। जो दूसरों का धन चुराता है, कभी सुख नहीं पाता। यदि तू फिर चोरी करेगा तो दण्ड पायगा। सदा दूसरों के अच्छे गुणों की चोरी करो। रावण ने सीता को चुराया और उसके कुल का सर्वनाश हो गया। कोई भी पुरुष पराये धन की कदापि चोरी न करे।

३. अशोकवाटिका में सीता राम का चिन्तन करती रही। सती स्त्रियाँ पति के बिना किसी अन्य पुरुष का चिन्तन नहीं करतीं। जो पुरुष प्रातः प्रभु का चिन्तन करेगा वह संसार के दुःखों को शान्ति से पार करेगा। हे मेरे मन! तू भी शान्ति प्राप्त कर। भक्त प्रह्लाद ने प्रभु का चिन्तन किया, भगवान् ने उसे दर्शन दिये। इसलिए मनुष्य उसी एक आश्रय का चिन्तन करे तथा दुःख सहन के लिए बल प्राप्त करें।

मोटे टाइप में छपे धातु-रूपों का पद-परिचय (Parsing) करते हुए निम्नलिखित श्लोकों का अर्थ करो:—

(घ) पुष्प पुष्प मञ्जिलं ह्यालिये,
नास्ति नास्ति मधुरो निभ्यते।
अथ चातक कुले पुरे पुनः
वारि वारिधर ! किं करिष्यसि॥

---

# पञ्चदश अध्याय

## प्रेरणार्थक क्रियाएँ—णिजन्त ( Causals )

प्रेरणार्थक रूप—जब किसी की प्रेरणा से कोई क्रिया हो तो उसे प्रेरणार्थक क्रिया कहते हैं।

संस्कृत व्याकरण में प्रेरणार्थक क्रियाओं को णिजन्त कहा जाता है क्योंकि इन में धातु के आगे 'णिच्' प्रत्यय लगता है। णिच् के ण् और च् का लोप हो जाता है तथा 'इ' को अय् हो जाता है। प्रेरणार्थक क्रिया बनाने के कुछ साधारण नियम नीचे दिये जाते हैं।

१. चुरादिगण की तरह धातुओं के पीछे णिच् विकरण का प्रयोग होता है, जिसको अय् हो जाता है।

२. जिन धातुओं के अन्त में स्वर हो उनके अन्तिम स्वर को णिच् परे होने पर वृद्धि हो जाती है। जैसे—श्रु + अय + ति = श्रौ + अय + ति = श्रावयति ( सुनाता है )। इसी प्रकार कारयति ( करवाता है )।

३. आकारान्त धातुओं के पीछे अय से पूर्व प्रायः प् लग जाता है। स्नापयति ( नहलाता है ) स्थापयति ( रखवाता है )। 'पा' धातु इसका अपवाद है। पा ( पीना ) का प्रेरणार्थक बनेगा पाययति और पा ( पालना ) का प्रेरणार्थक होगा पालयति।

४. हलन्त ( व्यञ्जनान्त ) धातुओं के अन्त्य हल् ( व्यञ्जन ) से पहले यदि ह्रस्व या दीर्घ इ, उ या ऋ हो तो उन्हें क्रम से ए, ओ और

हन् = घातयति (मरवाता है)
शिक्ष् = शिक्षयति (पढ़ाता है)
दण्ड् = दण्डयति (दण्ड दिलाता है)
भक्ष् = भक्षयति (खिलाता है)
प्रच्छ् = पृच्छयति (पुछवाता है)

जन् = जनयति (पैदा करता है)
शम् = शमयति (शांत करता है)
गम् = गमयति (ले जाता है)
इ = गमयति (ले जाता है)
अधि + इ = अध्यापयति (पढ़ाता है

साधारण सकर्मक क्रियाओं का (प्रयोज्य) कर्ता णिजन्त में तृती यान्त हो जाता है और प्रेरक कर्ता प्रथमा विभक्ति में आता है तब कर्म पहले की तरह द्वितीया विभक्ति में ही रहता है। यथा—

देवदत्तः ओदनं पचति, पचन्तं देवदत्तं रामः प्रेरयति—इति राम देवदत्तेन ओदनं पाचयति।

गति (जाना), बोधन (ज्ञान करना) और खाना अर्थ वाली ध अकर्मक एवं जिनका कर्म 'शब्द' हो, उन धातुओं का प्रयोज्य कर्म बन जाता है।

रामो गच्छति तं कृष्णः प्रेरयति—इति कृष्णः रामं गमयति। राम पठति, अध्यापकस्तं प्रेरयति—इति अध्यापकः रामं पाठयति

## अभ्यास

अनुवाद करो—

१. गुरु शिष्य को पढ़ाता माता पुत्र को विद्यालय में भेजती है। भगवान् कृष्ण अर्जुन को विराट् स्वरूप का दर्शन कराते हैं। माँ बच्चे को दूध पिलाती है। मैं पुस्तक को भूमि पर रखता हूँ। कैकेयी ने दशरथ को अपने दो वर याद कराये। सीता ने मारीच को श्रीराम द्वारा मरवाया। अध्याप पाठशाला में बालकों को पढ़ाता है। राजा भोज याचकों को धन दिलवाता था।

# षोडश अध्याय

## कृदन्त ( Verbal Derivatives )

कृत् प्रत्यय—धातुओं के बाद जिन प्रत्ययों के लगाने से, नाम अथवा अव्यय बनते हैं वे कृत् प्रत्यय कहलाते हैं। जिन शब्दों के अन्त में कृत् प्रत्यय हों वे कृदन्त कहलाते हैं।

मुख्य कृत् प्रत्यय निम्नलिखित हैं। उनके वास्तविक स्वरूप अर्थ तथा उदाहरण भी नीचे लिखे जाते हैं—

| प्रत्यय | स्वरूप | अर्थ | उदाहरण |
|---|---|---|---|
| १. शतृ | अत्, अन | हुआ | पठन् |
| २. शानच् | आन, मान | ,, | सेवमान, कुर्वाण |
| ३. क्त | त | था | पठित |
| ४. क्तवतु | तवान् | ,, | पठितवान् |
| ५. तव्यत् | तव्य | चाहिए | पठितव्य |
| ६. अनीयर् | अनीय | ,, | पठनीय |
| ७. यत् | य | ,, | नेय |
| ८. तुमुन् | तुम् | के लिए | पठितुम् |
| ९. क्त्वा | त्वा | करके | पठित्वा |

### (१) शतृ, शानच् ( वर्तमान कृदन्त )

इन दोनों प्रत्ययों का अर्थ 'हुआ' है। ये वर्तमान काल में प्रयुक्त होते हैं। परस्मैपदी धातुओं के साथ 'शतृ' का तथा आत्मनेपदी धातुओं के साथ 'शानच्' का प्रयोग होता है।

गम्—गच्छन् = जाता हुआ
दृश्—पश्यन् = देखता हुआ
सद्—सीदन् = दुःखी होता हुआ
स्था—तिष्ठन् = ठहरता हुआ
स्मृ—स्मरन् = याद करता हुआ
पा—पिबन् = पीता हुआ
जि—जयन् = जीतता हुआ
याच्—याचन् = माँगता हुआ
नी—नयन् = ले जाता हुआ
हृ—हरन् = हरता हुआ
अद्—अदन् = खाता हुआ
स्तु—स्तुवन् = प्रशंसा करता हुआ
ब्रू—ब्रुवन् = बोलता हुआ
रुद्—रुदन् = रोता हुआ
स्वप्—स्वपन् = सोता हुआ
हन्—घ्नन्—मारता हुआ
जागृ—जाग्रत् = जागता हुआ
दा—ददत् = देता हुआ
भी—बिभ्यत् = डरता हुआ

श्रु—शृण्वन् = सुनता हुआ
आप्—आप्नुवन् = पाता हुआ।
तुद्—तुदन् = पीड़ा पहुँचाता हुआ
इष्—इच्छन् = चाहता हुआ
स्पृश्—स्पृशन् = छूता हुआ
प्रच्छ्—पृच्छन् = पूछता हुआ
मुच्—मुञ्चन् = छोड़ता हुआ
रुध्—रुन्धन् = रोकता हुआ
भुज्—भुञ्जन् = खाता हुआ
तन्—तन्वन् = फैलता हुआ
कृ—कुर्वन् = करता हुआ
क्री—क्रीणन् = खरीदता हुआ
ज्ञा—जानन् = जानता हुआ
मुष्—मुष्णन् = चुराता हुआ
ग्रह्—गृह्णन् = लेता हुआ
चुर्—चोरयन् = चुराता हुआ
चिन्त्—चिन्तयन् = सोचता हुआ
तड्—ताडयन् = मारता हुआ
कथ्—कथयन् = कहता हुआ
भक्ष्—भक्षयन् = खाता हुआ

## शानच्

सेव्—सेवमान = सेवा करता हुआ
लभ्—लभमान = पाता हुआ
वृत्—वर्तमान = होता हुआ

वृध्—वर्धमान—बढ़ता हुआ
मुद्—मोदमान = खुश होता हुआ
सह्—सहमान—सहन करता हुआ

कुछ मुख्य मुख्य धातओं के रूप नीचे दिये जाते हैं। इनके प्रयो की चर्चा वाच्य-प्रकरण में की जायगी—

| धातु | क्त | क्तवतु |
|---|---|---|
| भू— | भूत | भूतवान् |
| पठ्— | पठित | पठितवान् |
| वद्— | उदित | उदितवान् |
| पच्— | पक्व | पक्ववान् |
| नम्— | नत | नतवान् |
| गम्— | गत | गतवान् |
| दृश्— | दृष्ट | दृष्टवान् |
| स्था— | स्थित | स्थितवान् |
| स्मृ— | स्मृत | स्मृतवान् |
| पा— | पीत | पीतवान् |
| सेव्— | सेवित | सेवितवान् |
| ब्रू— | उक्त | उक्तवान् |
| हन्— | हत | हतवान् |
| दा— | दत्त | दत्तवान् |
| आप्— | आप्त | आप्तवान् |
| इष्— | इष्ट | इष्टवान् |
| प्रच्छ्— | पृष्ट | पृष्टवान् |
| कृ— | कृत | कृतवान् |
| ग्रह्— | गृहीत | गृहीतवान् |
| चुर्— | चोरित | चोरितवान् |
| लभ्— | लब्ध | लब्धवान् |
| मृ— | मृत | मृतवान् |
| मुच्— | मुक्त | मुक्तवान् |

## ( २ ) तव्यत्, अनीय, यत् ( विधि कृदन्त )

इन प्रत्ययों का प्रयोग विधि अर्थ में होता है। ये कर्मवाच्य में प्रयुक्त होते हैं। उसे पढ़ना चाहिए—तेन पठितव्यम् अथवा पठनीयम्। तव्य तथा अनीय प्रत्यय तो सब धातुओं के साथ प्रयुक्त हो सकते हैं—यथा—कर्तव्य, करणीय, द्रष्टव्य, दर्शनीय, पातव्य, पानीय इत्यादि। परन्तु 'यत्' प्रत्यय 'चाहिए' अर्थ में केवल स्वरान्त धातुओं के बाद प्रयुक्त होता है। यथा—पेयम्, गेयम्, देयम्, ध्येयम्, स्थेयम्, नेयम्, इत्यादि। ऋकारान्त धातुओं को वृद्धि भी हो जाती है। यथा—कृ—कार्यम्, धृ—धार्यम्, स्मृ—स्मार्यम्, इत्यादि। कुछ व्यञ्जनान्त धातुओं के बाद भी 'य'* प्रत्यय का प्रयोग होता है। यथा—

शप्—शप्य, लभ्—लभ्य, रम्—रम्य, शक्—शक्य, सह्—सह्य, जन्—जन्य, वह्—वाह्य, हन्—वध्य, शास्—शिष्य, दुह्—दोह्य, पच्—पाच्य, यज्—याज्य, रुच्—रोच्य, त्यज्—त्याज्य, भुज्—भोज्य, तथा भोग्य इत्यादि।

मुख्य-मुख्य धातुओं के तव्य तथा अनीय प्रत्ययान्त रूप नीचे दिये जाते हैं:—

---

*यत् प्रत्यय स्वरान्त, पवर्गान्त, ह्रस्व अकारोपध (अर्थात् जिन के अन्त्य व्यञ्जन से पूर्व ह्रस्व अकार हो) और शक् तथा सह् धातुओं के साथ लगता है। व्यञ्जनान्त और ऋकारान्त धातुओं के साथ 'ण्यत्' प्रत्यय लगता है। तथा यम्, जुष् आदि धातुओं के साथ 'क्यप्' प्रत्यय लगता है। इन सबका य ही शेष बचता है। विद्यार्थियों के लिए प्रत्येक को अलग अलग बताना पेचीदा सा होता है इसलिए यहाँ केवल 'य' ही लिखा गया है।

| | | |
|---|---|---|
| आप्—पाना | आप्तव्य | आपनीय |
| स्पृश्—छूना | स्प्रष्टव्य | स्पर्शनीय |
| पृच्छ्—पूछना | प्रष्टव्य | पृच्छनीय |
| मृ—मरना | मर्तव्य | मरणीय |
| मुच्—छोड़ना | मोक्तव्य | मोचनीय |
| भुज्—खाना | भोक्तव्य | भोजनीय |
| कृ—करना | कर्तव्य | करणीय |
| क्री—खरीदना | क्रेतव्य | क्रयणीय |
| श्रु—सुनना | श्रोतव्य | श्रवणीय |
| ग्रह्—लेना | ग्रहीतव्य | ग्रहणीय |
| चुर्—चुराना | चोरयितव्य | चोरणीय |
| चिन्त्—सोचना | चिन्तयितव्य | चिन्तनीय |

## ( ४ ) तुमुन्, क्त्वा ( अव्यय कृदन्त )

तुमुन तथा क्त्वा प्रत्ययान्त शब्द अव्यय होते हैं। इनके रूपों में कभी कोई परिवर्तन नहीं होता। ये दोनों वाक्यों में प्रयुक्त होते हैं। तुमुन का वास्तविक रूप 'तुम्' है तथा 'क्त्वा' का 'त्वा' है। तुम् का अर्थ 'के लिए' अथवा 'को' है और 'त्वा' का 'कर' है। यथा पठितुम्=पढ़ने के लिए या पढ़ने को, पठित्वा=पढ़ कर। गन्तुम्=जाने के लिए या जाने को, गन्त्वा=जा कर। द्रष्टुम्=देखने के लिए या देखने को दृष्ट्वा=देख कर। क्त्वा प्रत्यय वाक्य में प्रयुक्त अनेक क्रियाओं में से पहले होने वाली क्रिया में होता है। इसीलिए क्त्वा प्रत्ययान्त क्रिया को पूर्वकालिक क्रिया कहा जाता है।

कुछ मुख्य धातुओं के 'तुम्' तथा 'क्त्वा' प्रत्ययान्त रूप नीचे लिखे जाते हैं –

| धातु | तुमुन् | क्त्वा |
|---|---|---|
| भू = होना | भवितुम् | भूत्वा |
| पठ् = पढ़ना | पठितुम् | पठित्वा |
| वद् = बोलना | वदितुम् | उदित्वा |
| पच् = पकाना | पक्तुम् | पक्त्वा |
| नम् = झुकना | नन्तुम् | नत्वा |
| गम् = जाना | गन्तुम् | गत्वा |
| दृश् = देखना | द्रष्टुम् | दृष्ट्वा |
| स्था = ठहरना | स्थातुम् | स्थित्वा |
| स्मृ = याद करना | स्मर्तुम् | स्मृत्वा |
| पा = पीना | पातुम् | पीत्वा |
| जि = जीतना | जेतुम् | जित्वा |
| सेव् = सेवा करना | सेवितुम् | सेवित्वा |
| लभ् = पाना | लब्धुम् | लब्ध्वा |
| वृध् = बढ़ना | वर्धितुम् | वर्धित्वा |
| सह् = सहन करना | सोढुम्, सहितुम् | सहित्वा |
| याच् = माँगना | याचितुम् | याचित्वा |
| नी = ले जाना | नेतुम् | नीत्वा |
| हृ = हरना, छीनना | हर्तुम् | हृत्वा |
| अद् = खाना | अत्तुम् | जग्ध्वा |
| [illegible] = बोलना | वक्तुम् | उक्त्वा |
| [illegible]द् = रोना | रोदितुम् | रुदित्वा |
| [illegible]ह् = दुहना | दोग्धुम् | दुग्ध्वा |
| [illegible]प् = सोना | स्वप्तुम् | सुप्त्वा |
| [illegible] = मारना | हन्तुम् | हत्वा |
| [illegible]द् = जानना | वेत्तुम् | विदित्वा |
| [illegible]ध + इ = पढ़ना | अध्येतुम् | अधीत्य |

| | | |
|---|---|---|
| भी = डरना | भेतुम् | भीत्वा |
| दा = देना | दातुम् | दत्त्वा |
| भ्रम् = घूमना | भ्रमितुम् | भ्रान्त्वा, भ्रमि |
| आप् = पाना | आप्तुम | आप्त्वा |
| प्रच्छ् = पूछना | प्रष्टुम | पृष्ट्वा |
| मुच् = छोड़ना | मोक्तुम् | मुक्त्वा |
| मृ = मरना | मर्तुम् | मृत्वा |
| भुज् = खाना | भोक्तुम् | भुक्त्वा |
| कृ = करना | कर्तुम् | कृत्वा |
| श्रु = सुनना | श्रोतुम् | श्रुत्वा |
| ग्रह् = लेना | ग्रहीतुम् | गृहीत्वा |
| क्री = खरीदना | क्रेतुम् | क्रीत्वा |
| चुर् = चुराना | चोरयितुम् | चोरयित्वा |
| चिन्त् = सोचना | चिन्तयितुम् | चिन्तयित्वा |
| कथ् = कहना | कथयितुम् | कथयित्वा |
| तड् = मारना | ताडयितुम् | ताडयित्वा |
| भक्ष् = खाना | भक्षयितुम् | भक्षयित्वा |

## संक्षेप

कृदन्त प्रत्ययों का व्यवहार संस्कृत अनुवाद में अत्यन्त आवश्यक है। यह स्मरण रखना चाहिए कि शतृ, शानच् और क्तवतु का प्रयोग प्रायः कर्तृवाच्य में तथा तव्यत्, अनीय और क्त का प्रयोग कर्मवाच्य में होता है। 'तेन पुस्तकं पठितं' या 'पठितव्यम्' के स्थान पर 'स पुस्तकं पठितं' या 'पठितव्यम्' अशुद्ध होगा। कर्मवाच्य में कर्ता तृतीया में तथा कर्म प्रथमा में होता है।

अनुवाद में प्रायः प्रयुक्त होने वाली धातुओं के कृदन्त रूप संक्षेप में फिर एकत्र किये जाते हैं :—

## अभ्यास

अनुवाद करो—

१ शतृ, शानच्—

शतृ—राम पढ़ता हुआ घर जाता है। शिष्य नमस्कार करता हुआ गुरु के समीप जाता है। मोहन घर जाता हुआ गिर पड़ा था। मैं बाग को देखता हुआ विद्यालय को जाऊँगा। हम देहली ठहरते हुए आगरा को जाएँगे। बच्चा माता को स्मरण करता हुआ रोता है। पानी पीता हुआ पथिक मार्ग पर जाता था।

राजा प्रजाओं को धन देता हुआ शोभा पाता है। नाचता हुआ मोर किसके हृदय को नहीं हरता। युद्ध करते हुए वीर लोग स्वर्ग को प्राप्त होते हैं। मार्ग पूछता हुआ मैं यहाँ आया हूँ। अस्पृश्य को छूता हुआ मनुष्य पतित नहीं हो जाता। अपना अपना काम धर्मपूर्वक करता हुआ पुरुष आदर पाता है। वेद को सुनता हुआ शूद्र पतित नहीं हो जाता। सीता का चिन्तन करता हुआ राम लंका को गया।

शानच्—माता पिता की सेवा करता हुआ श्रवणकुमार स्वर्ग को प्राप्त हुआ। मनुष्यो, तुम घर में खुश होते हुए रहो। भिक्षा माँगता हुआ ब्राह्मण हरिश्चन्द्र के पास आया। रोता हुआ बालक माता को याद करता है। दुःखों को सहन करता हुआ पुरुष योगी होता है।

(२) तुमुन्, क्त्वा—

तुमुन—मैं पढ़ने के लिए विद्यालय जाता हूँ। ये दोनों खेलने के लिए उद्यत हैं। रसोइया भोजन पकाने के लिए घर गया। मैं आचार्य को नमस्कार करने के लिए प्रातःकाल जाता हूँ। तुम दोनों खाने के लिए तैयार हो जाओ। मैं उत्सव को देखने के लिए दरबार गया था

# सप्तदश अध्याय

## वाच्य ( Voices)

संस्कृत में तीन वाच्य हैं—कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य तथा भाववा

कर्तृवाच्य—इसमें कर्ता प्रथमा विभक्ति में, कर्म द्वितीया तथा क्रिया प्रायः लकारों में होती है। क्रिया के पुरुष, वचन आदि के अनुसार होते हैं।

उदाहरणार्थ—

रामः अश्वं पश्यति = राम घोड़े को देखता है।
रामः बालकान् पश्यति = राम लड़कों को देखता है।
बालकौ गृहं गच्छतः = दो लड़के घर को जाते हैं।

यहाँ दूसरे और तीसरे वाक्य से स्पष्ट है कि क्रिया कर्ता के अनु है। दूसरे वाक्य में कर्म ( बालकान् ) बहुवचन है तब भी क्रिया ( रामः ) के अनुसार एकवचन ही है। तीसरे वाक्य में कर्ता ( बाल द्विवचन और कर्म ( गृहम् ) एकवचन है, क्रिया कर्ता के अनुसार से द्विवचन में ही है।

कर्मवाच्य—इसमें कर्ता तृतीया विभक्ति में, कर्म प्रथमा में क्रिया कर्म के अनुसार होती है।

कर्मवाच्य में क्रिया के आत्मनेपदी रूप बन जाते हैं और बीच 'य' विकरण का प्रयोग होता है।

अरवी द्रष्टव्यौ, दर्शनीयौ वा इत्यादि। कर्म के अनुसार यहाँ भी क्रिया के पुरुष लिंग, वचन आदि में परिवर्तन होता है।

भाववाच्य—इस में अकर्मक क्रिया का ही प्रयोग होता है। अतः इसमें कोई कर्म नहीं होता। शेष सब नियम कर्मवाच्य के अनुसार ही होते हैं। यहाँ भी कर्ता तृतीया में होता है। क्रिया आत्मनेपदी विकरण के साथ प्रयुक्त होती है। यथा—

बालकेन सुप्यते, रामेण सुप्यते, इत्यादि।

भाववाच्य में क्रिया सदैव प्रथम पुरुष एकवचन में प्रयुक्त होती है। यथा—

अहं तिष्ठामि = मया स्थीयते। तौ तिष्ठतः = ताभ्यां स्थीयते। यूयं तिष्ठथ = युष्माभिः स्थीयते। इत्यादि।

वाच्य-परिवर्तन

| वाच्य | कर्ता | कर्म | क्रिया |
|---|---|---|---|
| कर्तृवाच्य | प्रथमा में | द्वितीया में | लकारों में |
| कर्मवाच्य | तृतीया में | प्रथमा में | आत्मनेपदी त, तव्य, अनी |
| भाववाच्य | तृतीया में | × | आत्मनेपदी त, तव्य, अनी |
| कर्तृवाच्य | राम | ग्रन्थ | अपठत् |
| कर्मवाच्य | रामेण | ग्रन्थ | [illegible] । अपठ्यत |

| | |
|---|---|
| सः फलं भक्षयति | तेन फलं भक्ष्यते |
| सः फलानि भक्षयति | तेन फलानि भक्ष्यन्ते |
| सः पाठम् अस्मरत् | तेन पाठः स्मृतः ( अस्मर्यत ) |
| सः कार्यम् अकरोत् | तेन कार्यं कृतम् (अक्रियत) |
| अहं शब्दम् अशृणवम् | मया शब्दः श्रुतः (अश्रूयत) |
| तौ पुस्तके अगृह्णीताम् | ताभ्यां पुस्तके गृहीते (अगृह्येताम्) |
| चौरः धनम् अचोरयत् | चौरेण धनं चोरितम् ( अचोर्यत ) |
| रामः मारीचम् अहन् | रामेण मारीचः हतः (अहन्यत) |
| त्वं गच्छ | त्वया गन्तव्यम् ( गम्यताम् ) |
| त्वं पठ | त्वया पठितव्यम् (पठ्यताम्) |
| यूयं मृगं पश्यत | युष्माभिः मृगः द्रष्टव्यः ( दृश्यताम्) |
| यूयं जलं पिबत | युष्माभिः जलं पातव्यम् (पीयताम्) |

## अभ्यास

१ कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य में बदलो—

(क) सः गृहं गच्छति। तौ पुस्तकं पठतः। ते मृगं पश्यन्ति। अहं प[illegible] पिबामि। छात्रौ शब्दं शृणुतः। त्वं पाठं स्मरसि। अहं जलं पिबामि। वय[म्] अत्र तिष्ठामः। कर्णः कवचं ददाति। मनुष्यः धनम् आप्नोति।

(ख) अहं कार्यं करिष्यामि। अहं पाठं स्मरिष्यामि। त्वं किं पठिष्यसि आवां फलानि ग्रहीष्यावः। नृपः चौरान् दण्डयिष्यति।

(ग) अहं पुस्तकम् अपठम्। अहं गृहम् अगच्छम्। तौ उपवनम् अपश्यताम्। ते जलम् अपिबन्। यूयं धनम् आनयत। अहं फलम् अभक्षयम्। अहं मृगम् अपश्यम्। सः धनम् आप्नोत्। रामः लक्ष्मणम् अपृच्छत्। अहं कार्यम् अकरवम्।

| | |
|---|---|
| नृपः दास्यति। | मैं दूँगा। |
| मृगः धाविष्यति। | घोड़े दौड़ेंगे। |
| तौ धाविष्यतः। | हम दो भागेंगे। |
| अहं धाविष्यामि। | देवदत्त भागेगा। |
| जनः वदिष्यति। | बालक बोलेंगे। |
| अहं हसिष्यामि। | मूर्ख हँसेंगे। |
| खगः नर्त्स्यति। | मोर नाचेंगे। |
| वयं चलिष्यामः। | वायु चलेगा। |
| मेघः वर्षिष्यति। | अमृत बरसेगा। |
| दुःखं भविष्यति। | रात्रि होगी। |
| सूर्यः उदेष्यति। | चन्द्र निकलेगा। |
| पिकः कूजिष्यति। | पक्षी चहचहाएँगे। |

## अभ्यास ३

### ( लोट् ) आज्ञा ( Imperat ve mood )

| हिन्दी में अनुवाद करोः | संस्कृत अनुवाद करो :— |
|---|---|
| ते पठन्तु। | तू पढ़। |
| युवां पठतम्। | तुम सब पढ़ो। |
| त्वं गच्छ। | तुम दोनों जाओ। |
| यूयं गच्छत। | वे सब जायें। |
| त्वं पश्य | वे दोनों देखें। |
| यूयं पठत | वे सब देखें |
| ते नमन्तु। | हम दोनों नमस्कार करें। |
| [illegible] | हम दोनों याद करें। |

| | |
|---|---|
| वयम् अगच्छाम। | तुम दोनों जाते थे। |
| अहम् अपश्यम्। | हम सब देखते थे। |
| ते अपश्यन्। | तू देखता था। |
| वयम् अनमाम। | मैं नमस्कार करता था। |
| ते अस्मरन्। | हम सब याद करते थे। |
| मृगः अधावत्। | घोड़ा भागता था। |
| अहं जलम् अपिबम्। | बालक दूध पीते थे। |
| वयम् अपताम। | मैं गिरता था। |
| ते अदहन्। | अग्नि जलाती थी। |
| ते अखादन्। | हम सब खाते थे। |
| युवाम् अक्रीडतम्। | वे दोनों खेलते थे। |
| वयम् अयच्छाम। | मैं देता था। |
| सः अधावत्। | अन्धकार भागता था। |
| अश्वाः अधावन्। | हरिण भागते थे। |
| अहम् अवदम्। | वे दोनों बोलते थे। |
| ते अहसन्। | हम सब हँसते थे। |
| मयूरः अनृत्यत्। | मोर नाचते थे। |
| तौ अचलताम्। | वायु चलती थी। |
| मेघः अवर्षत्। | बादल वर्षा करते थे। |
| रात्रिः अभवत्। | प्रातःकाल होता था। |
| ते अहृष्यन्। | मनुष्य प्रसन्न होते थे। |
| बालकः अस्वपन्। | वे सब सोते थे। |
| शिष्याः अपृच्छन्। | हम सब पूछते थे। |
| सीता अचिन्तयत्। | हम दोनों चिन्ता करते थे। |

सतायै मालाकारः भूमिं खनति।
तुभ्यम् अहं फलं दास्यामि।
कल्याणाय यत्नं कुरु।
धनाशाय यत्नं न कुरु।
जलानयनाय गृहं गच्छ।
पित्रे जलमानय।
मात्रे फलमानय।
पत्ये दुःखं सहते।
विदुषे धनं यच्छत।

राम ने सीता के लिए रावण को मारा।
तू मुझे पुस्तक दे।
राजा कल्याण के लिए राज्य करे।
क्रोध नाश के लिए होता है।
स्त्रियाँ पानी लाने जाती हैं।
श्रवण पिता के लिए पानी लाया।
यह माता के लिए भोजन लाया।
पत्नी पति के लिए दुःख सहे।
राजा विद्वान् को धन देता है।

---

## अभ्यास ८

### कारक

### अपादान और सम्बन्ध ( Ablative and Genitive)

हिन्दी में अनुवाद करो—
पर्वतात् जलं पतति।
अहं गृहात् गच्छामि।
आकाशात् वर्षा भवति।
[illegible]नात् रामः आगच्छति।
स ग्रामात् [illegible] निर्याति।
मृगः [illegible] [illegible]।
[illegible] आगच्छति
[illegible]
[illegible] आगच्छति

संस्कृत में अनुवाद करो—
वृक्ष से पत्ता गिरता है।
राम घर से आता है।
फूल आकाश से गिरते हैं।
बालक बाग से आता है।
चूहे बिल्ली से डरते हैं।
नदियाँ पहाड़ों से निकलती हैं।
गंगा हिमालय से आती है।
तुम कुएँ [illegible] से हटो।
मैं बनारस से अयोध्या गया।

| | |
|---|---|
| युष्माकं कुत्र गृहम् ? | तुम्हारा बाबा बनारस में रह<br>है। |
| युष्मभ्यं किं रोचते ? | हमारे लिए आप गङ्गा-जल लाएँ |
| अस्माकं विद्यालये सः बालकः पठति | हमारा गङ्गा इद विश्राम है |

---

## अभ्यास ११

### विशेषण ( Adjective )

| | |
|---|---|
| सुन्दरः देशः एषः। | यह घोड़ा सुन्दर है। |
| सुन्दरी बालिका एषा। | यह बेल सुन्दर है। |
| सुन्दरं पुष्पं एतत्। | यह वस्त्र सुन्दर है। |
| मनोहरे फले एते हृदयं हरतः। | ये सुन्दर फूल हृदय को हरते हैं |
| कृष्णं अश्वं सः आरोहति। | राम काले घोड़े पर चढ़ता है। |
| श्वेताः शशकाः वनेषु वसन्ति। | मेरे घर में दो श्वेत खरगोश हैं |
| मलिनानि वस्त्राणि न धारयत। | मलिन वस्त्रों से मनुष्य जहाँ नहीं<br>बैठ जाता है। |
| तृषिताय जलं यच्छत। | प्यासा आदमी कुएँ पर गया। |
| बुभुक्षिताय अन्नं यच्छत। | भूखा क्या पाप नहीं करता ? |
| श्रान्ताय आश्रयं यच्छत। | श्रान्त पथिक वृक्ष की छाया में<br>बैठ गये। |
| शीतलेन जलेन तृषां शमयत। | शीतल जल से हृदय शान्त<br>होता है। |
| युष्मासु कः योग्यतमः अस्ति ? | वह बालक श्रेणी में सब से<br>अधिक योग्य है। |
| तव कनीयान् भ्राता कः अस्ति ? | यह मेरा छोटा भाई है। |

| | |
|---|---|
| मासस्य त्रिंशत् दिनानि भवन्ति | श्रीराम चौदह वर्षों के लि॰ को गये। |
| युधिष्ठिरः पञ्चविंशति-वर्षपर्यन्तं राज्यमकरोत्। | पुरुष २५ वर्ष पर्यन्त ब्रह्म॰ में रहे। |
| पञ्चाशत्-वर्षानन्तरं पुरुषः वानप्रस्थाश्रमं प्रविशेत्। | पचास वर्ष तक मनुष्य गृहस्था॰ में रहे। |
| अस्मिन् विद्यालये छात्राणां पञ्चोत्तरपञ्चशतं पठति। | हिन्दूविद्यालय में प्रत्येक श्रेणी ८५ विद्यार्थी हैं। |
| सप्तत्रशत-अधिक-सप्तदशशततमे वर्षे प्लासी-युद्धमभवत्। | सप्तम श्रेणी में केवल ७५ छा॰ पढ़ते हैं। |
| सहदेवः पञ्चमः पाण्डव आसीत्। | दयानन्द महाविद्यालय में ११ विद्यार्थी पढ़ते हैं। |
| दशमश्रेण्यां चतुरशीतिः छात्राः पठन्ति। | १९३९ में महासभा का अधिवे॰ त्रिपुरी में हुआ। |
| एष मे षष्ठः पुत्रः। | भरत दशरथ का दूसरा ल॰ था। |
| अष्टमे वर्षे ब्राह्मणस्य उपनयनं भवति। | मैं दसवें दिन आप के आऊँगा। |

## अभ्यास १३

### उपपद विभक्तियाँ

| | |
|---|---|
| नगरं परितः परिखा अस्ति। | शहर के चारों ओर ॰ वन है। |
| हरद्वारमभितः गङ्गा नदी प्रवहति। | हमारे नगर के दोनों त॰ बाग है। |

## अभ्यास १४

### अव्यय (Indeclinable)

हिन्दी में अनुवाद करो—

यत्र धर्मस्तत्र जयः।

अत्र भारतवर्षे कालिदासः कविरभवत्।

कदा मे भाग्योदयो भविष्यति।

धीमतः सर्वत्र समादरो भवति।

यदा रामो वनमगच्छत् तदा दशरथोऽम्रियत।

कदास्माकं देशः सौख्यं प्राप्स्यति ?

पुनरेवं वृथालापं मा कुरु।

कदापि पापिनः सुखं न आयते।

तूष्णीं भूत्वा सर्वे मन्दिरं प्राविशन्।

यस्मिन्नपि वर्षे वर्षा नाभवत् अतो दुर्भिक्षमभवत्।

यावत् इन्द्रियाणि सशक्तानि तावत् ईश्वरभजनं कुरु

संस्कृत में अनुवाद करो—

जहाँ राम जायगा, वहीं
पत्नी सीता जायगी।

यहाँ हमारे देश में ऋषि
रहते थे।

तुम दोनों कब जाओगे ?

विद्वान् सब जगह पूजा
है।

अब वसंत ऋतु आती है
सुन्दर फूल खिलते हैं।

आप हमारे लिए पुस्तकें
लायेंगे ?

यदि तू ऐसा फिर करेगा
अच्छा न होगा।

मनुष्य कभी भी अवसर न
चोरी न करे।

तुम सब यहीं चुपचाप बैठो,
अभी आता है।

क्योंकि वह तुम्हारा बड़ा भाई
अतः तुम्हें उसका सम
करना चाहिए।

जब तक मैं नगर से नहीं आ
तब तक आप यहीं रहें।

पाण्डोः पञ्च पुत्राः अजायन्त, तस्य चित्तम् अनितरामहृष्यत् ।
भवान् किमिति मह्यं कुप्यति ।
यो यं तुदति स तं तुदति ।
यो यत् सुखमिच्छति, स तत् विन्दति ।
यत् प्रक्ष्यसि तत् कथयिष्यामि ।

मम माता त्रयोविंशति-अधिक-एकोनविंशतिशततमे वर्षे अम्रियत ।
पुरुषाः परेषां पदार्थान् न चोरयेयुः ।
यो यद् विचारयति तद् अवश्यं भवति ।
मम पिता सर्वेषां कल्याणं चिन्तयति । सदैव च सर्वेषां शुभं कथयति

जब दशरथ के चार पुत्र उत्पन्न
उसका चित्त अतिप्रसन्न हुआ
पिता पुत्र पर क्रोध करता था।
किसी जीव को दुःख न दो।
मनुष्य जो चाहता है, वह
आता है।
जब तू प्रश्न पूछेगा, तब मैं उ
दूँगा।
श्रवण के मृत्यु-समाचार से उस
पिता भी मर गया था।
मेरी पुस्तक किसने चुराई है ?
सीता दुःख में परमेश्वर का चि
करती थी।
वह भगवान् को प्रतिदिन
में पूजती थी।

---

## अभ्यास १६

गणप्रयोगाः ( अदादि, जुहोत्यादि, स्वादि )

हिन्दी में अनुवाद करो—
अहं न कदापि मामसपि ।

पाण्डवा-आश्रम [illegible] अत्र
[illegible]

संस्कृत में अनुवाद करो—
जो जैसा अन्न खाता है वैसा
उसका चित्त हो जाता है।
इस देश में बहुत धन धान्य
बड़े-बड़े महापुरुष थे।

| | |
|---|---|
| ोऽब्रवीत्—मित्र, कथं त्वं न्धनानि छेत्स्यति ? | राम बोला—आज हमारे देश में विपत्ति का समय है। |
| ः लाः दुहन्ति। | ग्वाला कब दूध दुहेगा ? |
| ाः रुदन्ति। | बालक रोता है और दूध माँगता है। |
| गिनः हन्ति स पापमा-नि। | श्रीराम ने हरिण को मारा और आश्रम में आये। |
| ने स समयं विनाशयति। | जो दिन में सोएगा वह आलसी हो जायगा। |
| क् जुहोति दक्षिणां च ने। | ऋत्विज् लोग यज्ञ करते हैं और स्वर्ग की इच्छा करते हैं। |
| न्तः पापान्न बिभ्यति ? | जो पाप से डरता है, वह संसार में सुखी होता है। |
| विद्वद्भ्यः सम्मानं ने, ब्राह्मणेभ्यश्च प्रतिष्ठां च्छन्ति। | जो निर्धनों को धन, भूखों को भोजन और प्यासों को पानी देता है, वह परमपद को प्राप्त करता है। |
| ग्येन गुरुः विद्यापात्रं त्वम् आप्नोति। | गोविंद ने भाग्य से धन के कोश को वन में पाया। |
| हन् पुरुषः संसारे सुखम् स्यति। | जो परोपकार करेगा, वह यश तथा कीर्ति को पायेगा। |
| वं पठितुं शक्नोषि ? | क्या आप इस पत्र को पढ़ सकते हैं ? |
| यह दुर्गिन जन द्रष्टुं न शक्नोमि. | जो इस पत्र को पढ़ सकेगा उसे मैं इनाम दूँगा। |

## अभ्यास १७

### गणप्रयोगाः ( रुधादि, तनादि, क्रयादि )

'हिन्दी में अनुवाद करोः—

मुनयः चित्तवृत्तीः रुन्धन्ति, योगं च अनुतिष्ठन्ति ।

वीरा एव वसुन्धरां भुञ्जते ।

यः स्वचित्तमीश्वरे युनक्ति, स सुखी भवति, दुःखानि च तरति ।

करिष्यामि करिष्यामि, करिष्यामीति चिन्तया, मरिष्यामि मरिष्यामि, मरिष्यामीति विस्मृतम् ।

श्रीरामः पितुराज्ञायाःपालनमकरोत् वनं चागच्छत् ।

परिश्रमं कुरु, स्वाध्याये च चित्त कुरु ।

संसारे दुःखानां सहनं कुरु,अवश्यं सफलो भविष्यसि ।

संस्कृत में अनुवाद करो :—

जो अपने मन को रोकता है, इंद्रियाँ उसके वश में जाती हैं ।

जिस राजा में बल होता है पृथिवी का भोग करता है

यदि मनुष्य ईश्वर में अपने चि को जोड़े तो संसार के दुः से पार हो जायगा ।

सज्जनों के गुण अपनी महि को फैलाते हैं ।

ईश्वर अपनी महिमा को संस में फैलाता है ।

जो शुभ कर्म करेगा, शुभ फ पायगा—अशुभ कर्म करे अशुभ फल पायगा ।

यदि तू परिश्रम करता तो अव उत्तीर्ण हो जाता ।

जो ससार के दुःखों को धैर्य सहन करेगा—वह जीवन परीक्षा में सफल होगा ।

मुनिः व्रतमनुतिष्ठति ।
तस्मादुत्तिष्ठ कौन्तेय युद्धाय कृत-
निश्चयः ।
प्रीतः प्रतस्थे मुनिराश्रमाय ।

कविः काव्यं प्रणयति ।
अपनेष्यामि ते दर्पम् ।
पुत्रमानय ।
रामः सीतां पर्यणयत् ।

गुरुः शिष्यमुपनयते ।
सीता राममनुनयति ।
कलहस्य मूल निर्णयति ।

देवस्य बलिमुपाहरति ।

द्विजः पुष्पाणि आहरति ।

रावणः सीतामपाहरत् ।
केशवः अर्जुनमुपदिशति ।
किं सन्दिशति स्वामी ?
किमादिशति प्रभु ?
यद् यदाचरति श्रेष्ठः तत्तदेवे-
तरो जनः
[illegible]

भगवान् बुद्ध तप करते हैं।
जब मैं प्रातः उठता हूँ, मेरा
अति प्रसन्न होता है।
समुद्रगुप्त दिग्विजय के
रवाना हुआ।
मैं काव्य बनाता हूँ।
वर्षा धूलि को दूर कर देती है
मेरे पास अपने भाई को ला।
नल ने दमयन्ती से वि
किया।
मैं तुझे जनेऊ पहनाऊँगा।
अपने मित्र को मनाओ।
मैं फैसला करता हूँ कि आप
नहीं हैं।
पार्वती पति को फूल भेंट क
है।
सुदामा श्रीकृष्ण के लिए
लाया।
अज्ञान विवेक को चुराता है।
पिता पुत्र को उपदेश देता है।
आप क्या संदेश देते हैं ?
आप क्या आज्ञा देते हैं ?
सोलह वर्ष की अवस्था में गु
मित्र का नाम आचरण क
पति के साथ चला गया।

भ्रातरः न विगृह्णन्तु।
इन्द्रियाणि निगृह्णन्तु।
पितः ! वनगमनाय अनुजानीहि।
दशरथः भरताय राज्यं प्रतिजानीते।

पांडव कौरवों से युद्ध करते
अपनी ज़बान को रोको।
राम ने माता को वन ज
लिए आज्ञा दे दी।
प्रतिज्ञा करो कि तुम भ
राज्य और राम को
दोगे।

---

## अभ्यास १६

### ( णिजन्त ) प्रेरणार्थक क्रिया

हिन्दी में अनुवाद करो—

वैरिणः पितरः स्वपुत्रान् न पाठयन्ति।
जननी शिशु क्षीरं पाययति।
राजा स्वपुत्रान् विष्णुशर्मणः समार्प गमयति।
निरपराधान् प्राणिनः न घातयत।
कि म भोजन पाचयति।
[illegible]

संस्कृत में अनुवाद करो—

आचार्य शिष्यों को वेद पढ़ाता है।
माता पुत्र को अपने हाथ से पानी पिलाती है।
पिता ने पुत्र को पढ़ने के लिए विद्यालय भेजा।
सीता ने श्रीराम से हरिण को मरवाया।
तुम मेरे लिए कब भोजन पकवाओगे।
राजा ने नरीया को वस्त्र दिलाये।
पाण्डव जी आज रात का रामायण की कथा सुनायेंगे।

| | |
|---|---|
| गच्छन् पुरुषः पनिवानि फलानि अपश्यत्। | जाते हुए पथिक ने तालाब के किनारे पर एक वृद्ध ... देखा। |
| दुग्धं पिबन् बालको बुद्धिमान् बलवान् च भवति। | वह तालाब से पानी पीता हुआ आगे चला। |
| अहं स्वदेशावस्थां पश्यन् प्राचीनगौरवं च स्मरन् विलपामि। | हम दोनों बाघ को देखते ... और पाठ याद करते हुए घर को गये। |
| म्रियमाणः पुरुषः स्वकर्माणि स्मरति। | मरता क्या न करता। |
| धनिको दानं ददत् शोभते। | राजा रघु दान देता हुआ अति प्रसन्न होता था। |
| नश्यन्तं स्वदेशं पश्यन् को न विषीदति। | नष्ट होता हुआ धर्म यश का नाश कर देता है। |
| धनमाप्नुवतां जनानां प्रकृतिः परिवर्तते। | धन पाता हुआ कौन अभिमानी नहीं हो जाता। |
| त्वं मम गृहं पृच्छन्नागच्छ। | पथिक मार्ग पूछता हुआ मुनि के आश्रम में पहुँच गया। |
| सेवमानाय शिष्याय गुरुः विद्यां यच्छति। | सेवा करता हुआ शिष्य गुरु से विद्या ग्रहण करता है। |
| यशो लभमानाः मनुष्याः धनं नेच्छन्ति। | कृपा पाता हुआ शिष्य ही विद्या को सफल करता है। |
| वर्धमानं पुत्रं पश्यन् पिता प्रहृष्यति। | बढ़ता हुआ चन्द्रमा आँखों को आनन्दित करता है। |
| शयानं शिशुं न बोधय। | सिंह सोता हुआ भी भयानक होता है। |

| | |
|---|---|
| पुत्राः पितॄन् सुखं दातुं प्रयतन्ते । | [दा]न देने के लिए हरिश्चन्द्र विश्वामित्र को बुलाया । |
| किं प्रष्टुं रामः कौशल्यामातरमुपागच्छत् ? | राजा जनक प्रश्न पूछने के लि[ए] ऋषि याज्ञवल्क्य के पास गो । |
| शिशुरपि मर्तुं न इच्छति । | कौन मरना चाहता है ? सब कोई जीना चाहता है । |
| तस्य सुमधुरं वचनं श्रोतुं मम हृदयमुत्सुकं विद्यते । | वेद-मन्त्रों को सुनने के लिए [मैं] पाठशाला जाऊँगा । |
| सीता प्रत्यहं स्नानं कर्तुं नदीतीरमगच्छत् । | क्या आप काम करने के लि[ए] मेरे घर आयेंगे । |
| कन्यां प्रदातुं पिता जामातुर्गृहमगच्छत् । | विद्या ग्रहण करने के लिए शि[ष्य] सदा प्रयत्न करें । |
| बालः पुस्तकं चोरयितुं प्रयतते । | चोर चोरी करने के लिए धनी के घर में गया । |

## अभ्यास २७

### कृदन्त ( क्त्वा )

| हिन्दी में अनुवाद करो— | संस्कृत में अनुवाद करो— |
|---|---|
| [illegible] | [illegible] प्रकार कौन सुखी होता है । |
| [illegible] | मनुष्य विद्या पढ़कर योग्य हो सकता है । |
| [illegible] | [illegible] भोजन पका कर [illegible] ग्राम से आता है । |
| [illegible] | [illegible] गुरु का घर आता है |

पुत्राः पितुर् सुखं दातुं प्रयतन्ते ।
किं प्रष्टुं रामः कौशल्यामातर-
मुपागच्छत् ?
शिशुरपि मर्तुं न इच्छति ।
तस्य सुमधुरं वचनं श्रोतुं मम
हृदयमुत्सुकं विद्यते ।
सीता प्रत्यहं सन्ध्यां कर्तुं नदी-
तीरमगच्छत् ।
कन्यां महीतुं पिता जामातु-
र्गृहमगच्छत ।
बालः पुस्तकं चोरयितुं प्रयतते ।

*ान देने के लिए हरिश्चन्द्र
विश्वामित्र को बुलाया।
राजा जनक प्रश्न पूछने के लि
ऋषि याज्ञवल्क्य के पास गये।
कौन मरना चाहता है ? सब को
जीना चाहता है।
वेद-मन्त्रों को सुनने के लिए
पाठशाला आऊँगा।
क्या आप काम करने के लि
मेरे घर आयेंगे।
विद्या ग्रहण करने के लिए शि
सदा उद्यत रहें।
चोर चोरी करने के लिए धनी
घर में गया।

---

## अभ्यास २२

### कृदन्त ( क्त्वा )

हिन्दी में अनुवाद करो—
वृद्धो मृत्वा शिशुः भूत्वा पुनर्जन्म
गृह्णाति ।
चन्द्रापीडः विद्यालये पठित्वा
पितुर्गृहमगच्छत् ।
सूदो मिष्टान्नं पक्त्वा अतिथीन्
भोजयति ।
भवन्तं नत्वा मम हृदयं प्रसीदति ।

संस्कृत में अनुवाद करो—
निर्धन होकर कौन सु
होता है।
मनुष्य विद्या पढ़कर योग्य
सकता है।
रसोइया भोजन पका कर अ
के पास ले जाता है।
शिष्य गुरु को नमस्कार क
घर जाता है।

## अभ्यास २६

### संस्कृत में अनुवाद करो।

१

ईश्वर संसार को बनाता है। वही इसे पालता तथा इसकी र करता है। सूर्य अपने प्रकाश से अन्धकार को दूर कर देता है। इ के लिए शिष्य उपहार लाता है। विद्वान् का यश सारे संसार में फैल है—राजा का केवल अपने देश में। नदियों का जल पर्वतों से आ है। सब नदियों में गंगा नदी परम पवित्र नदी है। बेलों पर भौंरे (भ्रं आनन्द करते हैं। वृक्षों के फूल और फल चित्त को प्रसन्न करते हैं वाणी का बल आज सब से बड़ा बल है। जिसकी वाणी में बल है व संसार पर शासन करता है। जो शुद्ध मन से कार्य करता है, उसक कामनाएँ सफल होती हैं।

२

ये दो बालक पुस्तकों को पढ़ते हैं। हम दोनों कल (श्वः) बाग दे देखेंगे। जो इस तालाब (सरोवर) का पानी पीयेगा, वह बीमार (रुग्ण हो जायगा। शिष्य को गुरु की सेवा करनी चाहिये। मैंने कल (ह्यः अपने मित्र के घर में भोजन खाया था। कल ग्वाले ने (गोपः) गौ क नहीं दुहा, अतः हम सब ने दूध नहीं पिया। बच्चा (शिशु) माता क गोद (अंक) में निःशंक सोता है। सब कोई मृत्यु से डरते हैं। जो दान देता है वह अपना ही उपकार करता है न कि औरों का। बाग में मोर नाचते थे। मैं चाहता क्या था और हो क्या गया। गुरु ने अपने शिष्य से प्रश्न पूछा। जो जैसा करता है परलोक में वैसा फल पाता है।

३

इस सुन्दर वृक्ष की शीतल छाया में हरिण विश्राम करते हैं।

श्रीराम ने सीता को रावण के बन्धन से मुक्त किया (मोचिता)। क्या तूने सोचा है कि तेरे इस कार्य का क्या परिणाम होगा? तुम्हें ऐसा फिर न करना चाहिये। तुम्हें हमेशा अपनी मर्यादा में रहना चाहिये, अपने बड़ों का कहना मानना चाहिये और उनके विचारों का आदर करना चाहिये।

११

किसी जंगल में भासुरक नाम का शेर रहता था। वह प्रतिदिन जीवों को मार कर आहार करता। सब जीवों ने मिल कर उसे कहा —"तुम प्रतिदिन अनेक पशुओं का वध न किया करो। हम हर रोज एक पशु तुम्हारे आहार के लिए स्वयं भेंट करेंगे।" शेर ने कहा— "ऐसा ही हो।"

एक दिन खरगोश की बारी आ गई। वह धीरे धीरे जाता हुआ सोचता था कि किस तरह शेर का वध किया जाय। उसे एक कुआँ नज़र आया। उसमें उसने अपनी परछाईं को देखा? उसे शेर के वध का उपाय पता लग गया।

जब वह भूखे शेर के पास पहुँचा। उसने गर्ज कर पूछा कि देर करके तुम क्यों आये हो? खरगोश बोला स्वामिन्, मुझे एक और शेर ने मार्ग में रोक लिया था। क्रोध में शेर ने पूछा वह कहाँ है! पहले मैं उसे मारूँगा तब तुम्हें खाऊँगा। खरगोश ने शेर को कुएँ के पास ले जाकर उसी की परछाईं दिखलाई। शेर गर्जा—कुएँ से गर्जन की प्रतिध्वनि आई। मूर्ख शेर समझने लगा कि कुएँ का शेर मेरा मुकाबला कर रहा है। वह उस कुएँ में कूद कर मर गया। खरगोश प्रसन्न होकर जंगल में पहुँचा और सब जीवों को समाचार सुनाया कि शेर मर गया। ठीक कहा है जिसके पास बुद्धि है वह बलवान है। निर्बुद्धि के पास बल कहाँ। देखो बुद्धिमान खरगोश ने शेर को भी मार दिया।

कर चावलों को खाने के लिए उतरने का निश्चय किया । उतरते ही साथ ही वे जाल में फँस गये ।

अब लगे रोने और चिल्लाने । बूढ़े चित्रग्रीव ने कहा कि अब में रक्षा का उपाय है । तुम सब एक साथ जाल को लेकर उड़ो । इस तरह तुम शिकारी से बच जाओगे । सब ने ऐसा ही किया । सब उड़ते हु दूर जंगल में पहुँचे । चित्रग्रीव ने अपने मित्र हिरण्यक चूहे से कहा कि वह जाल को काट दे । जाल काट दिया गया और कबूतर बन्धन से छूट गये । ठीक कहा है—संसार में जितने कितने मित्र बनाने चाहिये । देखो मित्र चूहे ने ही कबूतरों को बन्धन से मुक्त कर दिया ।

१४

प्राचीन समय में एक राजा था । उसका नाम शिवि था । वह अत्यन्त धार्मिक दयालु एवं परोपकारी था । वह अहिंसा-व्रत का पालन करने वाला था ।

एक दिन एक भयभीत कबूतर उड़ता हुआ उसकी गोद में बैठ गया और कहने लगा—राजन मेरी रक्षा करो । एक हिंसक बाज मुझे मारना चाहता है । राजा ने कहा—तुम मेरी शरण में आए हो तुम भय न करो मैं तुम्हारी रक्षा करूँगा ।

बाज आया और कहने लगा—राजन इस कबूतर को छोड़ दो यह मेरा भक्ष्य है । यदि इसे तुम नहीं छोड़ोगे तो मैं भूखा रह कर तुम्हारे [illegible] पर प्राणत्याग कर दूँगा । तुम्हें मेरे वध का पाप लगेगा ।

राजा सोचने लगा—कबूतर को देता हूँ तो इसकी हिंसा का पाप [illegible] लगता है नहीं देता तो बाज की हिंसा से पाप लगता है [illegible] । बाज कर कहने लगा—राजन [illegible] तुम [illegible] तुम कबूतर के परिमाण [illegible] मांस [illegible]

## पंजाब यूनिवर्सिटी की मैट्रिकुलेशन परीक्षा के प्रश्नपत्रों का अनुवाद भाग

### १९३९

१. दूसरे ने कहा—तुम कैसे मूर्ख हो, मैं तुम्हारे वचन नहीं सुनूँगा।

२. उसने कहा – मैं उस नर श्रेष्ठ की राजलक्ष्मी हूँ। मुझे अब उसे त्यागना पड़ेगा। अतएव मैं दुःखी हूँ।

३. सूर्य, चन्द्रमा और तारे सब ईश्वरीय नियम के अधीन हैं।

४. मेरे ऊपर क्रोध मत करो। मैं जो कहता हूँ सत्य है यद्यपि वह कटु है।

५. इस मास में सूर्य बहुत जल्दी उदय हो जाता है और रात से दिन अधिक लम्बा होता है ?

६. राम ! जाओ, पचपन आम खरीद कर शीघ्र लौट आओ।

७. परमेश्वर के बिना आपद में हमारा कौन बन्धु है।

८. शीघ्र ही उसे मार दिया गया।

९. माता तथा मातृभूमि स्वर्ग से भी बढ़ कर है।

१०. आप जाएँ फिर दर्शन दीजिएगा।

११. किसी साधु ने कुत्ते से पूछा तू मार्ग में क्यों सोता है ? कुत्ते ने कहा—मैं भले बुरे की परीक्षा करता हूँ।

१२. श्रीराम मार्ग पूछते हुए सुतीक्ष्ण मुनि के आश्रम को पहुँच गए।

१३. महर्षि वाल्मीकि ने रामायण में वर्णन किया है कि रावण को मारकर श्रीराम अपने प्रिय-जनों के साथ पुष्पक विमान में चढ़कर लङ्का से अयोध्या को आए।

[illegible]

( II ) १. कल शाम जब हेडमास्टर साहेब स्कूल के बगीचे में टहल रहे थे, तब उन्होंने वहाँ एक विद्यार्थी को पत्र लिखते हुए देखा।

२. सूर्य के अस्त होने पर यदि मैं घर न लौटा तो पिता मुझ पर नाराज होंगे।

३. महाजनों का जो मार्ग हो उसी पर हमें चलना चाहिए।

( C ) संसार के इतिहास में बड़े भयानक युद्धों का वर्णन है। भारत में भी एक ऐसा युद्ध पुराने जमाने में कौरवों और पाण्डवों के दरमियान हुआ था। पर जो युद्ध इस समय विश्व भर में फैल रहा है उसके विनाशक रूप को देखने से प्रतीत होता है कि यह सब से अधिक भयानक है।

१९४५

१. (क) सम्राट् अकबर के शासनकाल में टोडरमल एक वज़ीर था। लाहौर नगर में उसका जन्म हुआ।

(ख) कुमार और चन्द्र दोनों भाई एक ही स्कूल में पढ़ते हैं। पढ़ाई में दोनों होशियार हैं।

(ग) तुम कहते हो कि यह पुस्तक मेरी नहीं। तुम्हें यह किसने दी थी।

(घ) श्रीमान् जी ' हिसाब का अध्यापक हमें मेहनत से पढ़ाता है इसलिए हम सब उसका विशेष आदर करते हैं।

(ङ) हिटलर का अंत कब अंग्रेज लोग मुल्क से बाहर करेंगे। तब शायद भारत देश को भी स्वराज्य मिल जायेगा।

२ (क) गर्मी के दिन सायं समय में वृक्ष की छाया में बैठे हुए हरि ने एक भयानक साँप देखा।

... [illegible] ... का पालन करना है उसी ... [illegible] ... का पालन करना चाहिए

१९४२

(१) निम्नलिखित वाक्यसमूहों में से किन्हीं पाँच का संस्कृत में अनुवाद करो :—

(a) परमात्मा को नमस्कार कर पाठ को आरम्भ करो उस पर विश्वास रखो, अवश्य अपने कार्य में सफलता मिलेगी।

(b) वृष्टि हो रही है; दरवाजा बन्द कर, खिड़कियाँ खोल दे।

(c) ब्रह्मचारी को धन से क्या, उसको विद्या पढ़ने से ही प्रयोजन है।

(d) गुरुजी कुरसी पर बैठ तथा मेज पर पुस्तक रख हमें पढ़ाते हैं

(e) कोई विद्यार्थी परिश्रम के बिना परीक्षा में उत्तीर्ण नहीं हो सकता। परिश्रम ही सुख का साधन है।

(f) तुम्हारी दवात में अच्छी स्याही हो तो मुझे दो। मैं अपने कलम से चिट्ठी लिख अभी डाकघर ( पत्रगृहम् ) भेजूँगा।

(g) हमारी श्रेणी में चालीस लड़के हैं। इनमें मोहन सबसे अच्छा है।

(h) इस बगीचे में नाना प्रकार के सुन्दर फूलों के वृक्ष हैं। यहाँ एक सरोवर में कमल खिले हुए हैं।

(i) मेरा छोटा भाई ज्वर से पीड़ित होने के कारण कल स्कूल में अनुपस्थित था। आज उसने प्रधान शिक्षक महोदय के पास अर्जी ( प्रार्थनापत्रम् ) भेज दी।

(२) केवल एक का संस्कृत में अनुवाद करो:

(a) भारतवर्ष में कुरुकुल में शान्तनु नाम का सब गुणों से सम्पन्न एक राजा हुआ। उसकी बड़ी रानी गंगादेवी ने सात पुत्रों को उत्पन्न किया, किन्तु वे सब जन्म के कुछ काल के पश्चात् ही मर गए। आठवें पुत्र देवव्रत को उत्पन्न करके गङ्गादेवी स्वर्ग चली गई। महर्षि वसिष्ठ ने देवव्रत को चारों वेद पढ़ाये। जमदग्नि के पुत्र परशुराम ने उसे

(१६) नित्य कर्म से निवृत्त होकर अपने काम में जुटा हुआ है।

(ख) किसी एक का संस्कृत में अनुवाद करो :—

(१) देवदत्त संस्कृत में ९९० नम्बरों में से १०० नम्बर (अङ्क) प्राप्त कर वार्षिक परीक्षा में प्रथम श्रेणी में पास हुआ।

(२) साधुओं की रक्षा के लिए, पापियों का विनाश करने के लिए तथा धर्म की स्थापना के लिए मैं युग युग में जन्म लेता हूँ।

१९४४

१. (क) निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद करो:—

(१) सदा धर्म पर चलो।

(२) धर्म जीवन है।

(३) सत्य धर्म का अङ्ग है।

(४) सत्य से बड़ा धर्म नहीं।

(५) तप धर्म का अङ्ग था।

(६) आजकल के विद्यार्थी तपरहित हैं।

(७) तप से बहुत सुख है।

(८) सिनेमा मत देखो।

(९) यह चरित्र को नष्ट करता है।

(१०) अध्यापक भी तपस्वी हों।

(ख) अब भारत स्वतन्त्र है। अंग्रेज यहाँ से चले गये हैं। हिन्दी राष्ट्रभाषा बन रही है। संस्कृत का उत्थान समीप ही दिखाई देता है। अंग्रेजी की प्रधानता नष्ट हो जायगी। पुराने साहित्य का मूल्य अब पड़ेगा। हिन्दी संस्कृत न आ-ना घृणा का स्थान होगा। राम राज्य का आरम्भ होने वाला है।

१९४५

१. निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद करो :—

(क) (१) ईश्वर पाप और पुण्य को देखता है।

२. (क) निम्नलिखित के स्त्रीप्रत्ययान्त (Feminine) रूप लिखो–
युवन, राजन, विद्वस् गन्धर्व।

(ख) निम्नलिखित के तुलनावाचक (Comparative) अतिशयवाचक (Superlative) रूप लिखो—वरं गुरु, बहु।

३. (क) कर्मधारय समास का लक्षण एवं उदाहरण देकर स्पष्ट करो।
(ख) इन समस्त पदों में से केवल दो का विग्रह करो: –
पद्म नेत्र, पितृसमः, उपगङ्गम।

४. निम्नलिखित धातुओं के रूप लिखो:
सेव् · लङ् · मृ · लट् · नृत् ······लृट्

६. रुच् और अलम् के साथ कौन कौन-सी विभक्ति लगती है?
एक एक उदाहरण देकर स्पष्ट करो।

अथवा

निम्नलिखित वाक्यों का संशोधन करो –
(क) विप्रं गां ददाति।
(ख) उपर्युपरि लोकस्य हरि।

(६)

१. (a) केवल तीन रूपों का सन्धिच्छेद करो: —
पित्राज्ञा तन्मुत्वा, नीरोग, मनोरथ।
(b) केवल दो रूपों को सन्धिसहित लिखो—
क्षुधा + आर्तः सरस + तड़ाग, मुनि + अयम्।
[ नोट—नियम लिखने की आवश्यकता नहीं।

२. निम्नलिखित के रूप लिखो
भूपति ·· · आठों विभक्तियों के बहुवचन
पितृ · आठों विभक्तियों के बहुवचन
इदम् (पुंल्लिङ्ग) सातों विभक्तियों के एकवचन
चन्द्रमस् आठों विभक्तियों के एकवचन।

(ख) शाला, पितृ, वाच्, किम् (पुँल्लिङ्ग), युष्मद्—शब्दों की तृतीया तथा सप्तमी के एकवचन में रूप लिखो।

(ग) विदुषे अथवा तिसः रूपों के शब्द, विभक्ति और वचन बताओ।

३. (क) राजन्, बालक, गच्छत्—के स्त्री-प्रत्ययान्त रूप Feminine forms) लिखो।

(ख) सरित्, गगन, अग्नि—शब्दों का लिङ्ग बताओ :—

४. निम्नलिखित धातुओं के रूप लिखो :—

जि और युध्—लङ्। गम् और कृ (परस्मै०)—विधिलिङ्। भृ अथवा शी—लट्। दृश् अथवा स्था—लुट्।

५. भू, इष्, ज्ञा के शत्रन्त (Present Active Participle) और त्यज्, ग्रह्, चिन्त् के क्तान्त (Past Passive Participle) रूप लिखो।

६. नीचे लिखे पदों में-से केवल आठ के अर्थ बताओ :—

कुर्वाणः। ददति। सोढुम्। अमुष्मिन्। पितरि। भावयति। षोडशी। आदाय। एधि। कनीयान्।

७. (राज्ञः पुरुषः), (अविद्यमानः पुत्रः यस्य सः), (शक्तिम् अनतिक्रम्य)—इनमें से केवल दो विग्रहों के समस्तरूप (Compounds) बना कर दोनों समासों का नाम निर्देश करो।

८. (१) सा पूर्णचन्द्रं पश्यति। (२) कृष्णेन हतः कंसः। इन वाक्यों का वाच्यपरिवर्तन (Change of voice) करो।

(२) निम्नलिखित में से केवल तीन को शुद्ध करो—

(१) असौ बालकौ। (२) दरिद्र धनं देहि। (३) ईशस्य प्रति भक्तिमान् भव। (४) वायुना वृक्षोऽयं भग्नम्।

१९४४

१ (क) ज्+ञ्+अ, र्+ऊ, ध्+ध—इन अक्षरों को संयुक्त करो। 'च' किन अक्षरों के योग से बना है ?

इन वाक्यों का वाच्यपरिवर्तन ( Chenge of voice ) करो।

अथवा

निम्नलिखित में से केवल तीन को शुद्ध करो :—

(क) कश्चिद् बाला। (ख) अयं भवनम्। (ग) मूल्ये क्रुध्यति प्र॰। (घ) कुमारी गतः। (ङ) गोविन्दं नमो नमः।

१९५५

I (a) म+ऐ, र्+त, ज्+ञ—इन अक्षरों को संयुक्त करो। 'क्ष' किन अक्षरों के संयोग से बनता है।

(b) नियम लिखे बिना सन्धि करो—
हवि+आदि, सम्+हितम्, मुनिः+गच्छति।
सन्धिच्छेद करो—गणेशः, तेऽपि, करिष्यन्।

(c) नराणं और भ्रातृसु रूपों को शुद्ध करो।

II (a) फल, शाला, साधु, मातृ, मरुत्, मन (पुलिङ्ग) शब्दों के चतुर्थी तथा षष्ठी के एकवचन में रूप लिखो।

(b) 'त्वयि' रूप के शब्द और विभक्ति बताओ।

III निम्नलिखित धातुओं के रूप लिखो—दृश्, दिव्, हन्, कृ (परस्मै॰) के लट् ..., भ्रम् के लङ् में ... शक् के लुट् में।

IV (a) प्रथम, मदन, राजन्—शब्दों के स्त्रीप्रत्ययान्त ( Feminine Forms ) लिखो।

(b) वाच्, मति, मनस् शब्दों के लिङ्ग बताओ।

(c) पर्यांसुतु प्राप्य, कनिष्ठः त्रिशन घातयति, द्रष्टुम्—पदों के अर्थ लिखो।

V जि, प्रच्छ्, कथ धातुओं के शतृ (अन्त) प्रत्ययान्त ( Present Active Participle ) तथा दा, स्वप धातुओं के क्त (त) प्रत्ययान्त ( Past Passive Participle ) रूप बनाओ।

(b) केवल आठ पदों के अर्थ लिखो :—

दर्शयति, गृहाण, ददति, श्रोतुम्, बलिष्ठः, सेव्यमानः, अद्य, फलवती, तिस्रः, पश्चात्, नेष्यति, पृष्ट्वा, गन्तव्यम्, भुङ्क्ते।

IV. (a) केवल दो विग्रहों से समस्त पद बनाओ:—माता च पिता च, राज्ञः पुरुषः, दिने दिने, त्रयाणां भुवनानां समाहारः, पीतम् अम्बरं यस्य सः।

(b) केवल दो समस्तपदों का विग्रह लिखो:—

घनश्यामः, महापुरुषः, पाणिपादम्, यथाशास्त्रम्, व्याघ्रभयम्

V. (a) केवल दो शब्दों के स्त्रीप्रत्ययान्त रूप (Feminine forms) लिखो:—ब्राह्मण, आचार्य, पति, गच्छत्, विद्वस्।

(b) केवल दो शब्दों के लिङ्ग बताओ :—मति, पुस्तक, भुवन, अग्नि, जल।

(c) केवल तीन धातुओं के क्त्वा (त्वा) प्रत्ययान्त (Indeclinable Past Participle) तथा तुमुन् (तुम्) प्रत्ययान्त (Infinitive forms) रूप बनाओ :—

दृश्, कृ, हन्, भज्, ग्रह्, हृ।

(a) केवल दो वाक्यों का वाच्यपरिवर्तन (Change of voice) करो :—

(i) बालकः हसति। (ii) मया पुस्तकं पठितम्। (iii) त्वं [illegible] वदसि। (iv) भृत्येन अन्नं पच्यते।

(b) निम्नलिखित वाक्यों में से केवल चार को शुद्ध करो:—

(i) भवान् कुत्र गच्छसि। (ii) स मां पुस्तकं दत्तवान्।

(iii) पितुः सह पुत्री गृहं गच्छति। (iv) नगरस्य बहिर्गमनं नियते।

(v) त्रयः बालिका अत्र पठन्ति। (vi) अहं कर्म करिष्यामि।

(vii) मम मित्रः नास्ति।

अथवा (or)

महान् बाहुः यस्य सः, शक्तिम् अनतिक्रम्य ।

[b] केवल दो समस्त पदों का विग्रह लिखो:—पुरुषसिंहः, गङ्गाजलम्, प्रत्यहम्, चक्रपाणिः ।

V. [a] केवल दो शब्दों के स्त्रीप्रत्यान्त रूप ( Feminine Forms ) लिखो:—नर, इन्द्र, श्रीमान्, राजन् ।

[b] केवल दो शब्दों के लिङ्ग [gender ] बताओ :—
भूमि, धन, आत्मन, गुण ।

[c] केवल दो धातुओं के क्त (त) प्रत्ययान्त तथा शतृ या शानच् प्रत्ययान्त रूप बनाओ —स्था, सह्, पच्, दृश् ।

VI [a] केवल दो वाक्यों का वाच्यपरिवर्तन ( Change of Voice) करो:— [i] अहम् गच्छामि । [ii] त्वया किं कृतम् ! [iii] पिता पुत्रेण सेव्यते [iv] शिष्यः गुरुं प्रणमति ।

[b] निम्नलिखित वाक्यों में से केवल चार को शुद्ध करो —
[i] ज्ञानस्य विना निष्फलं जीवनम् । [ii] पत्नी पत्युः सह वनं याति । [iii] चतुर फलानि आनय । [iv] सीता रामाय प्रिया आसीत । [v] ब्रह्मचारिणः धनस्य किम ? [vi] गुरुं नमः ।

अथवा

[a] अभितः या उपरि, सह या ददाति—इनके साथ कौन कौन सी विभक्तियां लगती हैं ? एक एक उदाहरण देकर स्पष्ट करो।

१९४८

( Emergency Examination )

I a केवल तीन रूपों का सन्धिच्छेद करो.—
परमात्मा मुनीन्द्र देवेन्द्र, ज्ञानेश सन्त्वम ।

b केवल तीन रूपों को सन्धियुक्त करो —
गङ्गा + उदकम् सदा + एव वाक + ईश मुना - इमी अगत + नायः ।
केवल दो रूपों को शुद्ध करो -

उपाध्यायस्य सह याति छात्रः ।
तस्य शतं धारयामि ।
रजकं वस्त्राणि देहि ।
कुटिलं वचो मां न रोचते ।

अथवा

(ख) । रोचते, ददाति, रक्षति, बिभेति—इन क्रिया पदों में से किन्हीं दो को वाक्यों में प्रयुक्त करो, जिससे यह प्रतीत हो कि तुम्हें कारक ज्ञान है ।

ii प्रति, ऋते, अलम्, साकम्, स्वस्ति—इनमें से किन्हीं दो के योग में कौन सी विभक्ति आती है, यह दर्शाते हुए दो वाक्य बनाओ ।

१९४९

I निम्नलिखित शब्दों में से किन्हीं चार का सन्धिच्छेद करो :—
महर्षिः । वागीशः । तद्धितम् । जगन्नायकः । तच्छ्रुत्वा । पित्राज्ञा । पुरुषो गच्छति । तस्यैक : ।

II. निम्नलिखित रूपों में से किन्हीं चार में सन्धि करो :—
सीता+अत्र+ । अपि+एवम् । भवन्+आज्ञा । पाशान्+छेत्तुम् । गीः+चलति । भानुः+उदेति । सदा+एव । नै+अकः ।

III निम्नलिखित में से किन्हीं पाँच शब्दों के तृतीया एकवचन तथा षष्ठी द्विवचन में रूप लिखो :—
सुहृत् । पितृ । धीमत् । पथिन् । नदी (स्त्रीलिङ्ग) । धेनु । लता । गुरु । पति । पुंस् ।

IV निम्नलिखित धातुओं में से किन्हीं तीन धातुओं के लङ्, लट्, तथा लोट् के मध्यमपुरुष के सब वचनों में रूप लिखो :—
अद् । अस । भा । स्पृश् । नम् । भज् । ग्रह (परस्मै०द) ।

V निम्नलिखित धातुओं में से किन्हीं पाँच के तव्य प्रत्यय लगाकर

रोचते। (ज) यत्न विना कार्यसिद्धि न भवति। (झ) वृक्ष पत्राणि पतन्ति। (ञ) काम क्रोधः प्रभवति।

४. निम्नलिखित में से किन्हीं तीन समस्त पदों का विग्रह करो और समास भी बताओ :—

कृष्णसर्पः, मातापितरौ, धनुर्युगम्, गंगाजलम्, पीताम्बरः यथाशक्ति।

५. निम्नलिखित धातुओं में से किन्हीं तीन के 'क्त' और 'क्त्वा' प्रत्यय लगा कर रूप लिखो :—

हन्, पुर्, दृश्, कृ, पा, नी।

६. निम्नलिखित शब्दों में किन्हीं चार का सन्धिच्छेद करो :—

शशांक, प्रमोऽत्र, कवीन्द्रः, दूरादागतः, नमस्कारः जगन्नाथः, शिशुर्हसति, रमेशः।

७. निम्नलिखित में से किन्हीं चार में सन्धि करो :—

मेघः + गर्जति, कुर्वन् + अस्ति, विपन् + जालम्, वाक् + दत्ता, प्रभु + आज्ञा, सदा + एव, गंगा + उदकम्, दया + अर्णवः।

८. निम्नलिखित शब्दों में से किन्हीं दो के अन्त में स्त्रीप्रत्यय ( Feminine affixes ) लगाकर इनके स्त्रीलिंग बनाओ :—

पितामह, लघु, राजन्, बुद्धिमत्, गच्छत्।

९. निम्नलिखित वाक्यों में किन्हीं दो का वाच्यपरिवर्तन ( Change of Voice ) करो :—

(क) रामः पुस्तकं पठति। (ख) नराः वस्त्राणि धारयन्ति। (ग) शिशुः पयः पिबति (घ) अहं चन्द्रं पश्यामि।

---

प्रकाशक —इन्द्रचन्द्र नारंग, हिन्दी भवन ४६ टैगोर टाउन इलाहाबाद।
मुद्रक—नागमलाल जायसवाल, संगम प्रेस, कीटगंज इलाहाबाद।